वर्ष 27 | पौष - माघ | जनवरी-2022 | अंक 1 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0046570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023
मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक
डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय
डॉ.सुभाष जैन
46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय
प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"
1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

यदि जीवन में बुद्धिमानी की कोई बात है तो वह एकाग्रता है और यदि कोई खराब बात हैं तो वह है-अपनी शक्तियों को बिखेर देना। बहुचित्तता कैसी भी हो, इससे क्या ? वह चीज अच्छी है जो सारे खिलवाड़ और भ्रम की चीजों को दूर कर देती है और हमें हृदय से अपने काम करने के लिए भेजती है।

दिव्य आर्शीवाददाता
प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.
मार्गदर्शक एवं प्रेरक
प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन
अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

णिसंते सिया-मुहरी, बुद्धाणं अंतिए सया।
अट्ठजुत्ताणि सिक्खेज्जा, निरट्ठाणि उ वज्जए॥

सदा शान्त रहें, वाचाल न हों, ज्ञानी पुरुषों के समीप रहकर अर्थयुक्त पदों को सीखें। निरर्थक बातों को छोड़ें। - **उत्तरा. सूत्र, 1.8**

पाथेय

हे प्रभु, तुम समुद्र पर बहनेवाली उस तेज हवा के समान हो, जो नाव को जब तक धकेलती है किनारे की ओर जब तक वह नाव यात्रा पर जाने के लिये सभी आवश्यक सामग्री सहित न कर दी जाए तैयार, तुम बिल्कुल नहीं चाहते कि हम बिन विचारे एवं सावधानी बरते यात्रा पर जाने के लिए नाव पर हो जाएं सवार! तुम्हारे सेवकों एवं कार्य वाहकों को किसी भी सम्भावित घटना के लिए सदैव रहना चाहिए, तत्पर एवं सावधान उनमें यात्रा की आवश्यकताओं की होनी चाहिये पूरी जानकारी और प्रत्येक मांग का समाधान करने के लिए होनी चाहिये निपुणता तभी वे स्वयं को एवं अन्य यात्रियों को ले जा सक्ते है सुरक्षा एवं सफलता से अंतिम लक्ष्य की ओर!

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-27 पौष-माघ जनवरी 2022 अंक-1

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- आईये नववर्ष में बबुल से आम्रकुंज बन जाये.... (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5-6
नौकर मालिक बन गया है

4- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा., प्रधान द्रव्य आज्ञा 7-9

5- जो रटेगा उसे याद हो जायेगा...., सहज स्वभाव 10

6- मैं राजरानी (साध्वी)-पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म. 11-13

7- स्वावलंबन, परस्परावलंबन और आत्मावलंबन-इन्द्रचंद दुधेड़िया 14

8- आंतकवाद के मूल को पकड़ें-डॉ. प्रद्युम्न शाह , छोटी वस्तु का भी बड़ा महत्व है...!, 15-16
अहंता-ममता

9- मेरे सपनों का भारत.... 17-18

10-सफलता की प्रेरणादायी कहानियां...! 19-20

11-ओल्ड इज गोल्ड-घरेलु नुस्खे.... - पू.श्री नमिरत्नसागर म. 21

12-उपासना-पर्युपासना, साधना-स्वाध्याय का निहीतार्थ-शांतिलाल सगरावत, 22
आत्मा और शरीर

13-हे आयुष्मन्! - साध्वी जतनकुमारी (कनिष्ठा), भक्ति 23-24

14-पुण्य के कारण प्राप्त सामग्री के सदुपयोग में ही बुद्धिमता है, जिज्ञासा-विवेक 25

15-शाकाहार प्राकृतिक भोजन है, सच्चा अनुष्ठान 26

16-जागते रहिए! सावधान रहिए !! 27

17-वर्गपहेली- 320 - जयंतीलाल जैन 28

18-ज्ञान गंगोत्री- 320 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. 29

19-शासन-समाचार 30-41

20-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि 42
नियुक्त करना है

संपादकीय

आईये नववर्ष में बबुल से आम्रकुंज बन जाये....

कालजयी है समय ! समय की परिभाषा में समय नहीं बंधता है वह तो निरंतर लगातार चलता रहता है। समय परिवर्तनशील है उसे रोक पाना या बदल पाने की किसी की भी ताकत नहीं है। हां ! काल को हमने खण्डों में बांटकर वर्ष, महिने और दूसरे नाम दिये है। सब कुछ बदला है, पर समय नहीं बदला है। हम सब मिलकर समय को ही दोष देते है लेकिन यह नहीं देखते है समय नहीं, हम ही बदले है प्रेम, वात्सल्य, समपर्ण की जिन्दगी की जो निधि थी हम उसे भी भूलते जा रहे है, प्रेम, वात्सल्य, समपर्ण के जो मणि मुकुट हमारी शोभा बढ़ाते थे उसके स्थान पर स्वार्थ, मतलब हमारे पैमाने हो गये है और कहते है- वक्त बदल गया। मानवता के बगीचे में पलाश के फूल झड़ चुके है, वे मुरझा गये है पास ही में देखने पर बबुल का पौधा है जो अभी छोटा है पर उसमें कांटे उभर आये है, पक गये है, कठोर होकर चुभने को तैयार है इसके साथ ही आम का पेड़है, वह बड़ा हो गया है उसमें बौर आने लगे है, बबुल के वृक्ष से उसकी उम्र चार गुना अधिक पर बौर पहली बार आये है। मन में सवाल उठा बबुल में पैदा होते ही कांटे आ जाते है और बिना देर किये चुभने को तैयार है पर आम को कितने वर्ष लग जाते है ? मीठे फलों की लम्बी प्रतीक्षा करना पड़ती है। कांटे को पकने में इतनी जल्दी और मीठे फलों के पकने में इतनी देरी ? सही बात है, ईर्ष्या बैर, स्वार्थ, मतलब तुरन्त पैदा होते है लेकिन प्रेम, अपनापन के उपजने में समय लगता है।

प्रकृति के इस चमत्कार को हम मानव रुप में देखें छायादार और संघन वृक्ष देरी से विकसित होते है, वट, पीपल, आम को समय लगता है किंतु बबुल, बैर बिना देरी और पानी के ही फलफूल जाते है, यही प्रकृति हमारा दर्पण आईना बन जाता है इसमें हम अपने प्रतिबिंब को आसानी से देख सकते है, मन में कलुष, ईर्ष्या, बैर, स्वार्थ के पैदा होने में देर नहीं लगती है, मातृत्व, प्रेम, सोहार्द बड़ी मुश्किल से जन्मते है ऐसा क्यों ? शायद इसलिये कि- जिन्हें कम जिंदा रहना होता है वे जल्दी पैदा होते है, तेजी से फैलते है और उतनी ही तेजी से समाप्त हो जाते है जिन्हें स्थायी रहना होता है उनके पास धैर्य होता है। बबुल, बैर के वृक्ष पीपल, आम, वट से कम जीते है पर वे कम समय में भी जो चुभन, दर्द देना हो, वे दे ही जाते है। प्रकृति में जन्में वृक्ष आदि अपने स्वभाव से जन्मते खत्म होते है पर मानव इससे सीख नहीं लेता है, आज मनुष्य के बीच आम गायब होने लगे है, आम्रकुंज नष्ट कर दिये गये है चारों और बबुल और बैर ही उगा दिये गये है, समाज में आम्र पुरुष की संख्या समाप्त होती जा रही है, शोषण करने वाले बबुल ही चारों ओर दिखाई देते है।

आज जिसे हम स्पर्श करें वही चुभने लगता है, हम दूसरों को चुभते है और दूसरे हमें पीड़ा पहुंचाते है और यदि कोई नहीं मिले तो हमारे अपने कांटे ही हमें पीड़ा पहुंचाने लगते है जब जन्म लिया था तो सोचा था आम्र पुरुष बनेंगे लेकिन बन गये बबुल, बैर।

आम्र पुरुष बनना आसान नहीं है, प्रतीक्षा करनी होती है, धैर्य रखना पड़ता है, अपने आप को बचाये रखना पड़ता है। विषाक्त वातावरण से- क्या करें, जमाना ही शूलों का है यह कहना आसान हो जाता है कि- क्या करें, जमाना में कांटों जैसा ही वातावरण मिला वैसी जलवायु में पनपे तो आम कैसे बनते ? यही कारण है कि- जिन आम्रपुरुषों ने समाज को मीठे फल दिये वे अल्प जीवी थे, श्री महावीर, विवेकानंद, जैसे आम्र पुरुष बबुलों के बीच भी रहते हुए अपने मीठे फल देकर सदा के लिये बिदा हो गये हैं। संसार है तो विचार है, आचार है, फूल है, कांटे है बस इससे फर्क नजर आने लगा, आम और बबूल में ! मगर अब कांटों की संख्या बढ़ने लगी है।

हम आधुनिकता को कोसते है, उपभोगवाद को कोसते हैं, कितने व्याख्यान, कितने गुट, कितने नाटक मगर होता कुछ नहीं ध्वंस और प्रदूषण को दूर करने के लिये। उद्यम आम को बचाने के साथ बबूलों को उखाड़ देने का होना चाहिये। कांटों के भय से नहीं डरा जाता कई आम्रपुरुष आज भी मौजूद है जो बिना किसी की परवाह किये बबूल को उखाड़ने में लगे है, ऐसे लोग समाज में है और समाज की संस्कृति में है, ऐसे प्रतिमान व्यक्तियों को अहमियत दी जाना चाहिये। संसार के कार्यो को सुन्दर

तरीके से करते हुए आगे बढ़ने का संकल्प आनेवाले समय में कांटों की चुभन खत्मकर देगा जीवन की निधियों को पुनः संजोना होगा, अब कुछ ऐसा करना होगा कि चुभने-चुभाने के विचार स्वतः लुप्त होने लगे,खारेपन का समुद्र सूखेगा तो निर्मल मीठे जल के स्त्रोत फूट पड़ेंगे,बदलाव हमें स्वंय लाना होंगे,समय बदलाव नहीं लाता है मनुष्य लाता है,करनेवाला मनुष्य है समय नहीं।

गत हुए समय का मूल्यांकन करने पर यही लगता है कि- सम्पन्नता और समृद्धि के मोहपाश में बंधे मानव ने अपने स्वार्थ,अहंकार और मतलब के लिये दुनिया को बदलकर रख दिया है, मनुष्य सब कुछ अपने अनुसार चाहता है, टुटते घर, बिखरते रिश्ते, बढ़ते वाद-विवाद किसने पैदा किये है ? अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये हम सब कुछ करने को तैयार है फिर इसके लिये चाहे प्रार्थना, प्रेम, वात्सल्य सबको ही क्यों न छोड़ना पड़े हमारा स्वार्थ सिद्ध हो वही काम करना चाहिये और एक सभ्य इन्सान का मौखटा पहनकर सबके चेहते बनकर रहे और मतलबी जिन्दगी जीते रहे यही लक्ष्य हो गया है।

हमारी संस्कृति ठीक इसके विपरीत है। वहां स्वार्थ, अन्याय के लिये स्थान नहीं है, अन्याय, अत्याचार, स्वार्थ में जीनेवाली संस्कृति हमारी नहीं है बल्कि हम दिलों को जीतनेवाली परम्परा के पोषक है, इससे स्पष्ट दिखाई देता है कि- समय नहीं मनुष्य ने अपने आपको बदला है, उसने अपने को बबुल बनाया है। दूसरे को कांटा चुंभे और दर्द मुझे हो इस विचार के विलुप्त हो जाने से ही मनुष्य में हिंसक प्रवृत्ति का जागरण हुआ है। आनेवाले नूतन वर्ष 2022 में हम समय के साथ न्याय करें उसे बदनाम करने के स्थान पर अपने जीवन में बदलाव लावें, जीवन में उन सब गुणों को प्राथमिकता से ग्रहण कर आगे बढ़े जो जीवन को आम्रकुंज बनाते है, स्मरण रखिए, आय से अधिक निवेश महत्व रखता है हम मूलतः आम है, अपने दोषों के कारण बबूल बने है और दूसरे को बबूल समझते है, अपनी जड़ों में जाये और फिर नये सिरे से उगे, पल्लवित हो तो पायेंगे कि धरती पर बबूल के जंगल नहीं आमवन फैले। आप सबके लिये नववर्ष समृद्धिशाली हो इसी शुभकामनाओं के साथ !

✻ डॉ. सुभाष जैन

नौकर मालिक बन गया है

आज-कल मकान-मालिकों को किरायेदारों का बहुत त्रास है। किरायेदार जल्दी मकान खाली नहीं करते हैं। सरकारी कानून उनका रक्षण करते हैं। कहते है कि- इस कानून से गुंडे लोगों को लाभ हुआ है। सज्जन लोगों को भी दुर्जन बनने के लिये यह कानून उत्तेजित करता है। ठीक.... जो हो सो, किन्तु इससे स्थिति ऐसी हो जाती है कि किरायेदार मालिक बन जाता है और मालिक किरायेदार-नौकर बन जाता है।

यह देखकर मुझे दूसरा ही विचार आता है।

मालिक हमारी आत्मा है।

दोषी किरायेदार है, किन्तु वे ऐसे निर्लज्ज बन गये हैं कि प्रयत्न करने पर भी निकलते ही नहीं है। कहते है कि -किरायेदारों को मकान खाली कराने के लिये बड़े आदमी की पहचान चाहिये, सहायता चाहिए। बड़े आदमी की सहाय हो तो वे तुरन्त मकान खाली कर देगें। हमें भी ऐसा ही कुछ करना पड़ेगा। प्रभु के शरण में जायेंगे तो उसी क्षण दोष बिदा हो जायेंगे। प्रभु से बड़ा दूसरा कौन है ?

मकान-मालिक को तो इतना पता है कि- यह मकान मेरा है, किरायेदार बाहर के हैं, किन्तु हमें इस बात का पता नहीं कि दोष बाहर के हैं। मालिक स्वयं अपनी मालकीयत भूल जाय यह कितनी करुणता है ?

सचमुच दोष दुर्जन जैसे हैं, बिना बुलाये ही आ जाते हैं। गुण सज्जन जैसे हैं, बुलाने पर भी बड़ी मुश्किल से आयेंगे।

हम दोषों के साथ दोस्ती करके बैठे हैं, गुणों के सामने भी शायद ही कभी देखते हैं। ऐसी स्थिति में हमारा जीवन गुण-पूर्ण न बने इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

दोषों के प्रति भयंकर नफरत और गुणों के प्रति जबरदस्त पक्षपात के बिना हमारा कभी निस्तार होनेवाला नहीं है। इन तीनों को ही शास्त्राकार शरणगति दुष्कृत गर्हा और सुकृत-अनुमोदना कहते हैं।

प्रभु के शरण में जाने से शरणागति

दोषों के प्रति नफरत से दुष्कृत-गर्हा

गुणों के प्रति पक्षपात से सुकृत अनुमोदना लक्षित हुए हैं।

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

महासती मैना सुंदरी को धर्मनिंदा का दुःख:-

श्रीपाल चरित्र की इतिहास प्रसिद्ध बात सभी जानते हैं मैना सुंदरी आप कर्मीपने के कर्म के सिद्धांत पर अड़ा थी। दृढ़ थी। अपने ही किये हुए कर्मानुसार अच्छा-बुरा फल मिलता है। यह सिद्ध सिद्धांत है। इसमें संदेह नहीं है। अतः श्रद्धावंत मैनासुंदरी इस सिद्धांत पर दृढ़ थी। परन्तु कर्म सत्ता के इस सिद्धांत पर इस दृढ़ रहने की बात को सामान्य लोग जिद्द-बाल हठ मानते थे। और इस हठाग्रह का छोड़ देने के लिये भी कई लोग मैंना सुंदरी के पिता प्रजापालसिंह भी अपनी पुत्री के इस विचार से सहमत नहीं थे। और कहा देख बेटी या तो तू तेरा यह सिद्धांत छोड़ दे, बदल दे। और बापकर्मी मान। मैं तेरा पिता हूं। अतः मैं जैसे तुझे रखुं, सुखी रखुं तो सुखी और दुःखी रखुं तो दुःखी। ऐसा मान। लेकिन सिद्धांत के सत्य स्वरुप को मानने वाली मैना सुंदरी ने पिताजी की इस बात का इन्कार किया और गुस्से में आकर पिता ने राज्य में आए हुए 700 कुष्ठरोगी में उनके बड़ेउबर राणा (श्रीपाल) के साथ शादी करवा दी और घर से मैना सुंदरी को विदाय कर दी।

यह दृश्य देखकर और मैनासुंदरी का हठाग्रह है ऐसा कोई धर्म होता होगा? ऐसी कोई बात की पकड़ रखी जाती है? अरे जिसकी पकड़ से एक राजकुमारी को रास्ते के कुष्टी के साथ शादी करनी पड़ी.... धिक्कार है ऐसे जैन धर्म को। .... इस तरह सौ बातें करने लगे। लेकिन इतना होते हुए भी मैनासुंदरी ने स्वकर्मीपने का सिद्धांत नहीं छोड़ा। होगा मेरे कर्मो में कुष्ठरोगी के साथ ही शादी लिखी होगी। मुझे ऐसे कर्मो पर भरोसा है। अंश मात्र भी खेद-दुःख नहीं है। मैनासुंदरी अपने पति उंबरराणा (श्रीपाल) के साथ निकल पड़ी। समीपवर्ती गांव में जैन उपाश्रय में गई। पू.आचार्यश्री मुनिचन्द्रसूरि महाराज का प्रवचन सुना और प्रवचन समाप्ति के बाद दोनों पू.गुरुदेव आचार्यश्री के सन्मुख उपस्थित हुए। कुछ बातें निकली। एकाएक मैनासुंदरी रोना आया। काफी ज्यादा रोने लगी। आचार्यश्री ने मैनासुंदरी को पहचान लिया और रोने का कारण पूछते हुए कहा हे देवी! क्यों रोती है? क्या कारण है? क्या ऐसा कुष्ठ रोगी पति मिला है इसलिये। इतने में मैनासुंदरी ने कहा- नहीं गुरुजी। पति की प्राप्ति तो कर्माधीन है। मैं इस सिद्धांत में दृढ़हूं। फिर रोना क्यों? लेकिन धर्म के सच्चे सिद्धांतों पर दृढ़ रहने से लोगों में हंसी हुई। लोगों ने धर्म के नाम पर थूका है। जैन धर्म की निंदा की है और इतने लोगों की निंदा में मैं कारण बनी हूं। अतः अब इसका कोई उपाय बताइए कि सभी लोग पुनः जैन सिद्धांत की प्रशंसा करने लगे। मेरे निमित्त धर्म की निंदा हुई इसका मुझे बहुत ज्यादा दुःख है। पति का दुःख अंश भर भी नहीं है। भाग्यशालीयों! सोचिए। क्या कितनी सज्जन सुशील सन्नारी राजकुमारी थी जिसको मेरे धर्म की निंदा हो रही है इस विषय का कितना दुःख था? आज हम भी अनेक धर्मी है लेकिन मेरे धर्म की निंदा होती है, मैं निमित्त बनता हूं इस बात का कहां किसको रत्ति भर भी दुःख है? दुःख की बात तो दूर रही लेकिन अच्छे धर्म करने वाले, अच्छे दीर्घ तप करने वाले ही अपने मुंह जब धर्म की निंदा करते है तब आश्चर्य होता है कि इनको धर्म कितना पचा है? ये कितने धर्म में उतरे हैं? और इनमें धर्म कितना उतरा है। जैसे समुद्र में उल्टा घड़ा रखा जाय तो घड़ा जरुर पानी में है परन्तु घड़े में पानी बिल्कुल नहीं गया है। चूंकि हवा का दबाव है। इसी तरह अच्छे-अच्छे धर्म करने वाले धर्मी को जब अपने ही धर्म की देव-गुरुओं की निंदा करते हुए देखते हैं तब आश्चर्य होता है। मन चिंताग्रस्त होता है। अरे.... रे.... इन्होंने क्या धर्म पाया है? क्या धर्म समझा है? क्या शासन को समझा है? कितना इनके खून में परिणत हुआ है? और वह थी एक मैना सुंदरी जिसे अपने पति के कुष्ठरोग के दुःख की चिन्ता नहीं थी। बिना घरबार वाले ऐसे रास्ते पर के राहदारी कुष्टी के साथ पिता राजा ने राजकुमारी जैसी की शादी करा दी है इस बात का रत्ति भर भी दुःख नहीं है? सिद्धांत की रक्षा, धर्म रक्षा एवं शासन की चिन्ता मैना सुंदरी को थी। कहां है आज वैसे साधक? शासन रक्षा की बातों की ढाल बनाकर उसी के नीचे शासन की अवहेलना-निंदा करना, शासन रक्षा के नाम पर संघर्ष-कलह करना क्या शोभास्पद है? आज अफसोस इस बात का है कि जैन धर्म में निंदा-परपरिवाद, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य पापस्थानों का प्रमाण ज्यादा बढ़ गया है। कोई अपने घर की निंदा बाहर आकर नहीं करता है, अपनी बहन-बेटी की निंदा कोई नहीं करता है। सभी को दूसरों के दोष देखना है और अपने आपको दुध से नहाए हुए

पवित्र मानना है, दिखाना है और साथ में इतने से भी संतोष कहां है ? अपने आपको अच्छा दिखाने के लिये दूसरों को हल्का दिखाने की, दूसरों की निंदा-प्रपंच करने की प्रवृत्ति भी कहां छोड़ रहे हैं ? क्या इनमें माया कपट नहीं है ? कहां शासन का हित देखा है ? शासन-शासन की बातें करने के बहाने शासन का स्वरुप विकृत कर दिया है। जो चिन्ता मैनासुंदरी को थी क्या आज ऐसा कोई धर्मिष्ट मिलना भी संभव है ? दिया ले के ढूंढने भी जावें तो भी मुश्किल है। गुरुदेव आचार्य ने कहा- देवी ! तुम युगादिदेव श्रीआदिश्वर प्रभु को रोज पूजा-भक्ति करो। नवपद-सिद्धाचक्र की आराधना करो, और आयंबिल की ओली करो सब अच्छा होगा। सभी पुनः जैन शासन की प्रशंसा करते हुए आएंगे और वैसा ही हुआ। नवपद की आयंबिल की ओली एवं सिद्धचक्र की परम भक्ति से प्रभु पूजा के अभिषेक के न्हवण (प्रक्षाल) से उंबर राणा का कुष्ट रोग मिट गया। माता कमलप्रभा आदि सारा परिवार मिल गया। श्रीपाल का शरीर कंचनवार्णी सुंदर देदीप्यमान बन गया। यह चमत्कार सुनकर सैकड़ों लोग जैन धर्म की प्रशंसा करने लगे। तब जाकर मैना सुंदरी को संतोष हुआ, शांति हुई। शासन की प्रभावना हुई और कर्म सिद्धांत की सत्यता प्रगट हुई।

स्वप्रशंसा और परनिंदा का महापापः-

यह एक मानवी कमजोरी है कि उसे स्वप्रशंसा ज्यादा प्रिय है। हर इन्सान को आज यह आदत पड़ी हुई है कि प्रत्येक को स्वप्रशंसा प्रिय है। हां मान लिया बात सही है। अरे भाई ! स्वप्रशंसा प्रिय है वहां तक तो बुरा नहीं है परन्तु स्वप्रशंसा संभव ही नहीं है। नहीं मैं इस बात से सहमत नहीं हूं। क्या ऊपर खिंची रेखा को बिना हाथ लगाए, बिना मिटाए छोटी नहीं कर सकते है ? नहीं ऐसा भी नहीं है। हम उसी के सामने उससे बड़ी रेखा खींच दे तो हमारी बड़ी रेखा के सामने वह अपने-आप छोटी दिखेगी। इसमें शंका ही नहीं है। दूसरे की रेखा को हाथ भी लगाना नहीं पड़ा लेकिन इस युक्ति का उपयोग करनेवाले बहुत कम है। मंदमति उपर की ही रेखा मिटाना चाहते है, काटना, कम करना चाहते है। यह गलत तरीका है। ठीक इसी तरह हम किसी की निंदा करके ही क्या स्वप्रशंसा करा सकेंगे ? क्या यही अच्छा तरीका है ? कभी नहीं। यह तो महापाप है। आपको अपनी प्रशंसा की भूख हो तो ऐसा प्रशंसनीय परोपकारी कार्य कीजिए, समाज आपकी प्रशंसा जरुर करेगा लेकिन कई लोगों को यह मार्ग कठिन लगता है और इसके बजाय पर निंदा करके मैं अच्छा हूं यह दिखाउं यही सस्ती कीर्ति का सरल मार्ग है। और ज्यादातर लोग इसी मार्ग का अनुसरण करते हैं। रजनीश ने क्या किया ? अपने आपको भगवान बताने के लिये और बनाने के लिये उसने सब भगवानों पर निंदा-टिका-टिप्पणी करनी शुरु कर दी भगवान श्रीमहावीर ऐसे थे, वैसे थे, बुद्ध भगवान, राम, कृष्ण, भगवान, ईसा मसीह आदि ऐसे थे वैसे थे.... ये सब विवादास्पद रहे हैं। चमत्कारों के नाम पर ये भगवान कहलाने लगे- इत्यादि सैकड़ों बातें करके सभी भगवानों में दोष दिखाने लगा, सब अधूरे है और बस मैं एक पूर्ण हूं। अतः मैं भगवान हूं। आप ही सोचिए ! आपने भी इसके बारे में देखा-सुना है। उसे पढ़ा है। सैकड़ों के साथ अनाचार, दुराचार करने वाला हजारों-लाखों को दुराचार के खाड्डे में गिराने वाला, ऐसा महा विषयी, तीव्र विषय वासना के कीड़े को कैसे भवगान कहा जाय ? और अनेक भगवानों की, सर्वज्ञ वीतराग की घोर निंदा और मजाक करने के महापाप का फल बिचारा आज भोग रहा है। हाथ-पैरों में हथकड़ी और जेल में कैदी बन कर पड़ा है। कई आरोप सिर पर है। कहे जाने वाले बिचारे तथाकथित भगवान की यह दुर्दशा है। बात सही ही है कि- पाप की सजा भारी है।

अतः स्वप्रशंसापूर्वक परनिंदा करने का पाप अति बुरा है। दूसरों की निंदा करके, या कराके अपनी प्रशंसा करना या कराना, यह सबसे ज्यादा खराब है। स्वप्रशंसा भी विचित्र है। स्वप्रशंसा कोई अन्य करें तो अच्छा है, या स्व की प्रशंसा स्वयं खुद ही करें यह अच्छा है ? आप भी इन दोनों बातों में से इतना तो जरुर स्वीकार करेंगे ही कि- स्व की प्रशंसा कोई अन्य करें यही अच्छा है, परन्तु जो स्वयं ही स्व की प्रशंसा करें और पर की निंदा करें तो यह महा पाप हुआ। सिर्फ दूसरों की निंदा करना यह सामान्य पाप हुआ जबकि अपनी प्रशंसा करके दूसरों की निंदा करना यह महा पाप हुआ। चूंकि ज्ञानी भगवंतों ने हमें स्व प्रशंसा करने की इजाजत नहीं दी है ! छूट नहीं दी है और न ही यह धर्म है, न गुण है।

निंदक को नीच गोत्रादि पाप कर्म का बंधः-

पाप प्रवृत्ति से पाप (अशुभ) कर्मों का ही बंध होता है और शुभ (पुण्य) प्रवृत्ति से शुभ पुण्योपार्जन होता है। यह कर्म शास्त्र का सिद्धांत है। अतः हमारी अच्छी-बुरी वृत्ति और प्रवृत्ति पर अच्छे-बुरे (शुभ-अशुभ-पुण्य-पाप) कर्मों का आधार है। परपरिवाद की वृत्तिवाला निंदक जो कि दूसरों की

निंदा करता है, पर के विषय में विपरीत बातें करता है, जो नहीं है उस बात को भी उपजाना, आरोपात्मक या कलंकात्मक परहीलना हो ऐसा बोलना यह क्या पाप नहीं कहलाएगा ? और स्वप्रशंसा के साथ परनिंदा महापाप कहलाएगा। तो ऐसे पाप कर्मो के बूरे फल क्या होंगे ? इन पापों की सजा कौन देगा ? कर्म सत्ता के क्षेत्र में पाप की सजा देने वाली कोई स्वतंत्र ईश्वरादि शक्ति नहीं है। कर्म सत्ता में ही शुभ-अशुभ दो भेद हैं। अशुभ कर्म जो जिस तरह बांधे हो वेही अपनी सजा अपने आप देते हैं। अन्य किसी की आवश्यकता ही नहीं है। यह निंदा करनेवाला निंदक नीचगोत्रादि कर्म बांधता है। यह बताते हुए उमास्वातिजी वाचक तत्वार्थ सूत्र में स्पष्ट कहते है कि- ''परमात्मनिंदा प्रशंसा सदसद् गुणच्छादनोद् भावने च नीचैर्गोत्रस्य'' पर निंदा, और स्वप्रशंसा तथा सद्गुणों का आच्छादन और असद् गुणों का उद्भावन (प्रगट) करने की प्रवृत्ति से नीच गोत्र कर्म का बंध होता है। यह सूत्र का शब्दार्थ हुआ है ! विशेष विस्तृतार्थ भी देखिए ! परनिंदा करना ईर्ष्या, मत्सरवृत्ति, तेजोद्वेष, द्वेष की मनोवृत्ति से दूसरों के अच्छे गुण, दूसरों की यश-प्रतिष्ठा-कीर्ति बढ़ती हुई देखकर सहन न होने से किसी की निंदा करना, पर परिवाद का सेवन करना और अपनी खुद की प्रशंसा स्वयं ही करना बड़ाई मारना, ये दोनों नीच-अधम कक्षा की पाप वृत्ति हुई। इसी वृत्ति से-सद्गुण आच्छादन की प्रवृत्ति करना। अर्थात् किसी में जो अच्छे गुण है उसका लोप करना, उन गुणों को ढांक देना, ईर्ष्या से किसी में अच्छे गुण जो वास्तव में है उनको न देखना, न कहना और ढक कर असद्गति का उद्भावना करना, अर्थात् जो गुण नहीं है उन्हें गुण है ऐसा कहना, यह भी अधम पापवृत्ति हुई। निंदक हमेशा किसी के दोषों को ही कहेगा, चूंकि वह छिंद्रगवेषी ही होता है। वह किसी के गुणों को नहीं देख सकता। यह निंदक की कमजोरी है। अतः इस पापाप्रव से वह आगामी जन्म में नीच कुल में जन्म लेगा। गरीब की झूपड़पट्टी में जन्म लेकर दरिद्रिनारायण बनेगा। उधम कुल में अधम कक्षा के पाप करेगा। फिर ऐसे हल्के नीच कुल में जन्म लेने के बाद प्रवृत्ति कहां से अच्छी होगी ? यही बात कर्मग्रंथ कार ने भी स्पष्ट कहा है।

निंदा में भी जिनेश्वर परमात्मा आदि की महा निंद्रा भी नीच गोत्र कर्म का बंध कराकर नीच कुल में फेंक देती है यही कहा है कि–

जिनवर ने निंदत्ता, नीचगोत्र बंधाय।
नीच कुलमां अवतरी, कर्म सहित ते थाय॥

नीच गोत्र कर्म की सजा किस रुप में मिलती है वह भी कहते हैं- ''चाण्डाल, मुष्कि, व्याध, मत्स्यबंध, दास्यादि, भावसम्पादकत्वं नीचगोत्रस्य लक्षणम्'' नीच गोत्र कर्म बांधने वाला जीव चण्डाल कुल में उत्पन्न होता है। ढेड़, भंगी, हरिजन, चमार आदि बनकर हल्के काम करता है। मुष्टिक मच्छीमार बनता है। किसी के यहां नौकर दास चाकर गुलाम बनता है। यही नीच गोत्र कर्म की सजा है। फिर ऐसे कुलों में जन्म लेकर काम कैसे करेगा ? जिन्दगी भर वही पाप, वैसी ही पाप की प्रवृत्ति करता रहेगा जिसके परिणाम स्वरुप आगामी जन्मों में और ज्यादा दुःख वेदना सहन करेगा। नीच गोत्र की तरह नामकर्म में भी अशुभ नामकर्म की प्रकृतियां बांधता है जिसके कारण सद्गति, शरीर, वर्ण गंध रस स्पर्शादि अशुभ कक्षा के हीन पाता है। **(आगे और भी है...!)**

प्रधान द्रव्य आज्ञा

भगवान की आज्ञा सबको अच्छी नहीं लगती, किसी लघुकर्मी आसन्नभव्य आत्मा को ही अच्छी लगती है। जिस पर मोहराजा की जबरदस्त छाया है, जिनकी राग-द्वेष की तीव्र गांठ तूटी नहीं, ऐसी आत्मा तो प्रभु-आज्ञा की परछाई से भी दूर भागती है। पालने की तो बात ही कहां ? ग्रंथी के पास आई हुई अपुनर्बंधक आदि आत्मा को द्रव्य से आज्ञा पालन हो सकता है, लेकिन भाव से आज्ञा पारतंत्र्य तो भिन्न ग्रंथीवाले (जिनकी राग-द्वेष की तीव्र गांठ तूट गई है) जीवों को ही होती है। द्रव्य आज्ञा-पारतन्त्र्य के भी दो प्रकार है:-

1- अप्रधान द्रव्य (आज्ञा) : *जहां प्रधान (श्रेष्ठ) भाव के कारण का अंश भी हो। उदाः अंगार मर्दक आचार्य-द्रव्य आचार्य है। अभव्य होने से उनमें भावाचार्य का अंश मात्र भी नहीं था।*

2- प्रधान द्रव्य (आज्ञा): *जो भाव का कारण बने उसे प्रधान द्रव्य कहते है। इस द्रव्य शब्द का अर्थ कारण समझना चाहिये। जो भाव का कारण बने वही द्रव्य-प्रधान द्रव्य !*

उदा : द्रव्य पूजा। यहां द्रव्य शब्द भाव के कारण का वाचक है। प्रधान द्रव्य आज्ञा हमारे जीवन में आ जाये तो भी काम हो जाय। क्योंकि उसके बाद तुरन्त ही भाव-आज्ञा आनेवाली ही है।

जो रटेगा उसे याद हो जायेगा....

अहमदाबाद में देवकीनंदन संघ में पाक्षिक प्रतिक्रमण चल रहा था। पूज्य आचार्य श्री प्रद्युम्नसूरि महाराज ने संघ को प्रेरणा दी- ऐसा सुन्दर आराधक संघ और किसी को अतिचार नहीं आता हो यह क्या शोभास्पद बात है ? इस विषय में उन्होंने प्रवचन में बहुत सुन्दर रुप से समझाया। एक श्रावक के मन में उल्लास और उत्साह फूट पड़ा। उसने घोषणा की कि जो व्यक्ति अतिचार कंठस्थ कर लेगा उसे मैं सोने की कंठी Chain उपहारे स्वरुप दूंगा (जिसका मूल्य करीब रुपये 1500/- तक का हो सकता है।) ट्रस्टी भी सहमत हुए। विचारणा करके संघ ने घोषणा की- दस दिन में जो व्यक्ति अतिचार याद कर लेगा उसको सोने की कंठी बहुमान सहित दी जायेगी। बच्चे, कुछ बहनें तथा अन्य पुरुष श्रोतागण कुल मिलाकर 72 भाविक तैयार हो गये। ऐसे उत्साहवर्धक समाचार सुनकर ओपेरा पाठशाला के धर्मानुरागी अध्यापक श्री शशिकांत भाई भी प्रतिदिन एक घंटे के लिये मानद सेवा प्रदान करने के लिये तैयार हो गये। ओपेरा पाठशाला के छः विद्यार्थी भी पुनरावर्तन कराने लगे। संघ में मानो ज्ञानयज्ञ शुरु हो गया। हर तरफ अतिचार सीखने की बातें ही सुनाई देती थी। वर्षो से नित्य प्रतिक्रमण करनेवालों को देख ''सात लाख'' भी आते नहीं है तो फिर केवल दस दिन में अतिचार कैसे तैयार किये जा सकते है ? आजकल तो कई आराधक कहते है- **''प्रयत्न करने पर भी याद नहीं रहता है।''** परन्तु इस दृष्टांत को पढ़ने के बाद आप भी स्वीकार करेंगे कि ज्ञान के प्रति प्रेम है, सीखने की दृढ़ इच्छा है तो रहने से अवश्य याद हो जायेगा।

तीन-चार वर्ष पूर्व घटित यह पूर्णतः सत्य घटना है। भाविकों ने कमर कस कर मेहनत करना आरंभ कर दिया और परिणाम.... कितना आश्चर्यजनक...! ग्यारहवें दिन.... परीक्षा दी बहत्तर भाविकों ने और उनमें उत्तीर्ण हुए चौंवालीस भाविक...!! इन सभी सफल धर्मप्रेमी भाविकों का उदारदिल ज्ञानानुरागी महानुभाव की ओर से सन्मान किया गया.... सुवर्ण की कंठी अर्पण कर के...! संघ ने ज्ञानदाता श्री शशिकांतभाई का भी अष्टप्रकारी पूजा की चांदी के उपकरण अर्पण करके बहुमान किया। शेष अट्ठावीस व्यक्ति संपूर्ण रुप से अतिचार याद न कर पाये। फिर भी प्रयत्न करके दस दिन में कुछ न कुछ अंशों में अतिचार याद रख सके। वे भी अगर कुछ दिन अधिक प्रयास करें तो वे भी पूरे अतिचार याद करने में सफल हो सकते हैं।

यह अनुपम घटना हमें बहुत कुछ सिखाती है। वर्तमान समय में अनेक महिलाएं मानती है कि कार चलाना तो सीखना ही चाहिये ओर वे Driving सीख ही लेती हैं। लेकिन दुःख की बात है कि पांच प्रतिक्रमण हमें सीखने ही चाहिये ऐसी दृढ भावना किसी जैन के मन में जाग्रत होती ही नहीं है और कुछ लोग प्रयत्न एवं परिश्रम तो अवश्य करते हैं, परन्तु ध्यान से विधिपूर्वक रहने का प्रयास नहीं करते है जिससे याद करने में समय लगता है और वह भाग्यवान व्यक्ति उकता जाता है, थक जाता है।

हे धर्मप्रेमी सज्जनों ! विचार कीजिए कि मासतुष मुनि तो छः मास प्रयास करते रहे फिर भी एक शब्द न याद कर सकें ! किंतु वे हिम्मत न हारे। चोटी बांध कर.... कमर कस कर निरंतर बारह वर्ष तक उत्साहपूर्वक, निष्ठापूर्वक रटते रहे.... रटते रहे और उन्हें ''केवलज्ञान'' प्राप्त हो गया !!!

''आप भी दृढ़ निश्चय करें कि रटने से अवश्य स्मरण हो जायेगा आठों शुभ कर्म बंधन'' होगा। ''केवलज्ञानी रुपी आत्मिक लाभ एक न एक दिन अवश्य प्राप्त होगा...!'' विश्वास होता है ? श्रद्धा जाग्रत होती है...? तो आज से प्रतिज्ञा करें, नियम ले लें कि प्रतिदिन कुछ घंटे श्रद्धापूर्वक, तन्मयता से विधिपूर्वक अभ्यास करुंगा, सब कुछ रटूंगा और याद कर लूंगा। कम से कम रविवार के दिन तो यह अभ्यास होना ही चाहिए...! तो आईए.... करें शुभारंभ.... सफलता आपके हाथों में ही है...!

सहज स्वभाव

पहाड़ की गहरी कंदरा में गुलाब का एक फूल खिला हुआ था। मैंने पूछा फूल- तू यहां किसलिये महक रहा है। जहां पर न कोई तुम्हारी सुकुमार सुषमा को देखकर उल्लसित होनेवाला है और न मधुर परिमल एवं पराग का आस्वाद लेकर कोई वाह वाह कहनेवाला है। फूल ने उत्तर दिया मैं इसलिये नहीं महकता कि मुझे कोई देखे या सुगंध लेकर वाह ! कहे ! मेरा तो अपना सहज स्वभाव ही है- खिलना, महकना और सौरभ बिखेरना।

मैं राजरानी (साध्वी)

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

चाणक्य नीति में कहा है- ''स्त्री में पुरुष से आठ गुनी वासना होती है।'' इस बात का विश्वास न हो तो मेरा जीवन देख लो।

आज मैं साध्वी अवस्था में हूं, लेकिन इस अवस्था में आने से पहले मैं अनेक धूप-छांया में से निकल चुकी हूं। दुनिया के कुछ व्यक्ति को मिलती है, ऐसी मजा का मैंने आनंद लिया है, तो ऐसी ही सजा भी भुगती है। आबरुदार कुटुंबजीवी हूं तो मेरी आबरु की धज्जियां भी उड़ी है। अद्भूत मान सन्मान मिला है तो ऐसा ही भयंकर अपमान भी सहन किया है। ऐसा मत मानें कि दूसरे किसी के कारण से मुझे अपमान सहन करना पड़ा है या मेरी आबरु मिट्टी में मिली है। जो हुआ उसमें किसी का भी दोष नहीं था, मेरे ही कर्मो का दोष था। सच कहूं तो कर्मो का भी नहीं, मेरा ही दोष था। मैंने जान-बुझकर आपत्तियां खड़ी की थी, अपनी कब्र अपने आपने ही खोदी थी।

एक जमाने में मैं राजरानी थी, मेरा थिरकता लावण्य आकर्षण का केन्द्र था। राजा के अन्तःपुर में मेरा महत्वपूर्ण स्थान था। किन्तु मेरा मन चंचल था और राजा का सहवास तो महिने-दो महिने में एक बार मुश्किल से मिलता.... इससे मैं बेचैन थी और सोचती- राजरानी बनने से भी सामान्य गृहिणी बनना अच्छा, कम से कम अपना स्वयं का ही एक साथी तो होता है.... दुनिया समझती है कि राजरानी सुखी होती है परन्तु रानीयां अंदर से कितनी दुःखी होगी, इसकी कल्पना दूसरे को कैसे आ सकती है? यह तो सहन करता है उसे ही पता चलता है। घायल की गत घायल ही जाने।

एक बार हाथी के महावत की आँखों से मेरी आँखें मिल गई। मेरी चतुर आंखों ने महावत का हृदय जान लिया। उसका सुडोल बंधन, चौड़ी छाती, दृढ़ चहेरा- वे सभी पसंद आ गये थे। यद्यपि वैसे भी मैं वासना में अंध ही थी इसलिये जहां-जहां मेरी नजर पड़ती वह पुरुष मुझे सुंदर ही दिखाता। दूसरे कहते थे कि महावत कुरुप हैं, परन्तु मुझे तो वह सुन्दर लगा। आखिर तो अपनी आंखों पर ही सब आधार है न? जहां आंखों को अच्छा लगे वह रेगिस्तान भी वृंदावन बन जाता है, वह पतझड़भी वसंत बन जाती है और कुरुप भी सुरुप बन जाता है।

राजा जैसे राजा मेरे पति होने पर भी मैं महावत में मोहित हुई। ''प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा लताश्च, यः पाश्र्वतो वसति तं परिवेष्ट्येन्ति।'' ''अधिकतर राजा, मत्त स्त्री और लता- जो पास में होते हैं उन्हें लिपट जाते हैं।'' यह नीतिवाक्य यों ही नहीं कहा गया। मैं कामोन्मत्त स्त्री! रोज नजर के सामने आते महावत में मैं मोहित न बनूं वही आश्चर्य!

मैंने देखा- वह भी मुझमें बराबर मोहित था.... हम दोनों मिलने के उपाय सोचने लगे। किन्तु यह तो राजा का जनानखाना। चारों तरफ ऽ जबरदस्त कड़ी निगरानी! हमारे अन्तःपुर में चौकीदार कैसे होते हैं वह जानते हो? यदि वे रुपवान हो तो फिर मुसीबत! रक्षक ही भक्षक बन जाता है। हम उनमें ही मोहित बन जाते हैं। हम स्त्रीओं के चित्त का क्या भरोसा? इसलिये खास करके कुरुप पुरुषों को ही अन्तःपुर के रक्षक बनाये जाते हैं। वे भी अधिकतर कृत्रिम नपुंसक ही होते हैं। ऐसा जनानखाना, सच पूछो तो मुझे तो कैदखाना ही लगता था! ऐसी कड़ी निगरानी के बीच महावत को मिलना यह तो लोहे के चने चबाने से भी अधिक कठिन काम था।

यद्यपि, चौकीदार को तो मैं समझा सकती थी परन्तु मेरी सौत को मैं कैसे समझाऊं? मुझे उन्हीं का अधिक भय था। ''स्त्रीयां ही स्त्रीओं की दुश्मन होती है।'' यह तो आपने सुना ही होगा। इसमें भी सौत स्त्री का तो पूछना ही क्या?

स्वाभाविक रुप से ही स्त्रीयां, राजनेता और कुत्ते ईर्ष्या के भण्डार होते हैं। सचमुच तो ईर्ष्या का दूसरा नाम ही ये तीन हैं, ऐसा कहें तो भी चल सकता है। उसमें भी सौत स्त्रीयां की ईर्ष्या का तो पूछना ही नहीं। एक दूसरे का थोड़ा भी अच्छा देखकर जल मरती है! मैं भी ऐसी ही थी! दूसरे मेरी ईर्ष्या करते और मैं उनकी ईर्ष्या करती। हमारी लड़ाई चलती ही रहती है। लड़ाई के बिना हमें दिन व्यर्थ लगता है! झघड़ा, काजल और सिंदूर- ये हमारी तीन प्रिय चीजें! दूध, जवाई और संगीत की तरह हमें ये तीनों बहुत अच्छे लगते हैं! हां.... झघड़ा भी अच्छा लगता है। पुरुष तो ''झघड़े का मुंह काला'' ऐसा कहकर चुप बैठ जाते हैं, परन्तु हम चुप नहीं बैठते। बात भले छोटी हो, लेकिन हम हठ नहीं छोड़ती। सच बात आपको बताऊं? बड़े-बड़े युद्ध जो पुरुष करते हैं उसके मूल में हम ही होती है। हम अगर नहीं होती तो रामायण या महाभारत के युद्ध नहीं होते। स्त्री की उत्तेजना के बिना पुरुष सामान्य रीत से युद्ध के लिये तैयार नहीं होते। पुरुष को जोश

देनेवाली अधिकतर स्त्रीयां ही होती है। मेरी बात पर विश्वास न हो तो इतिहास के पन्ने उलटकर देख लेना। ईर्ष्या और झघड़ रहित स्त्री अगर कहीं देखने मिले तो उसे हृदयपूर्वक नमस्कार करना.... वह साक्षात् पवित्राता हैं। लेकिन जिसे मिलना होता है वह चाहे जैसे भी मिले ही जाते है। एक बार मैं अन्तःपुर के गवाक्ष में बैठी थी और मेरी नजर पड़ी हस्तिशाला के ऊपर। मेरा हृदय नाच उठा- अरे ! वाह ! यह हस्तिशाला तो बिलकुल पास में ही हैं। अब महावत से मिलना यह तो दायें हाथ का खेल है ! मैंने इशारे से महावत को बता दिया- तू हाथी लेकर खिड़की के पास आ जा। फिर देख ले कि मैं हाथी के सहारे नीचे आ सकती हूं या नहीं !

महावत ने एक बार प्रयोग किया। रात को अमुक निश्चित समय पर हाथी गवाक्ष के पास ले आया। महावत के इशारे से हाथी ने सूंढ ऊंची की और मैं उस सूंठ के सहारे नीचे उतर गई। हाथी की सूंढ पर पैर रखना यह कोई जैसा-तैसा काम नहीं था, स्त्रीयों के लिये तो यह कार्य बहुत ही डरावना था। स्त्रीयां वैसे भी डरपोक होती है पर स्त्रीयों में भीरुता जैसे स्वाभाविक होती है, वैसे ही साहसिकता भी स्वाभाविक होती है। जब स्त्री किसी की अनुरागी बनती है तब चाहे जैसे जोखम भरे कार्य भी करने के लिये तैयार हो जाती है। तब वह डरपोक मिटकर एक दम साहसिक बन जाती है। पुरुष के ऊपर का स्तर निर्भय होता है, लेकिन भीतर का स्तर डरपोक होता है। जबकि स्त्रीयों का ऊपर का स्तर डरपोक का है और भीतर निर्भयता होती हैं। डरपोकपने की ऊपर की खाल उतरते ही स्त्री एकदम रणचंडी बन जाती है। भयंकर भी बन जाती हैं।

महावत को मिलने का हमारा यह क्रम निरंतर चालु रहने लगा। रात होते ही इस कृत्य की किसी को गंध तक भी नहीं आये ऐसी हमारी सावधानी थी। ''सुप्रयुक्तस्य दम्भस्य, ब्रह्माप्यन्तं न गच्छति।'' ''आयोजनपूर्वक किये जानेवाले दंभ का ताग ब्रह्मा भी पा नहीं सकता।'' ऐसा विधान किसी ने हमारे जैसों के कृत्य को देखकर ही किया होगा ! .... परन्तु दंभी मात्र यही विधान याद रखते हैं परन्तु ''पाप छिपाया न छिपे, छिपे तो महाभाग, दाबी-दूबी ना रहे रुई लपेटी आग।'' यह बात कभी याद करते ही नहीं।

....आप याद करो या न करो, लेकिन समय याद करवा ही देता है। एक बार यह समय आ पहुंचा।

बात ऐसी हुई कि हमारे नगर में ''दुर्गिला नामक मेरी पुत्रवधु कुलटा है ? ऐसा आक्षेप उसके ससुर ने लगाया। यक्ष के पास दुर्गिला सती सिद्ध हुई। अतः ससुर को ऐसा आघात लगा कि रात को नींद आनी ही बंद हो गई। किसी भी सच्चे मनुष्य को अपनी बात सच्ची होने पर भी झूठी साबित हो तो भयंकर आघात तो लगता ही है न ? यह आघात इतना भयंकर था कि वयोवृद्ध देवदत्त नाम का ससुर पुरी रात बिस्तर में करवट बदलता रहता, लेकिन नींद नहीं आती। बिना नींद ही उसके कई दिन बीत गये। यह बात पूरे नगर में फैल गई।

आप जानते हैं- कौन सी बात जल्दी फैलती है ?

शांति रहे वह नहीं, वृद्ध हो वह।

शादी हो वह नहीं, शादी टूटने की बात।

कुत्ता काटे वह नहीं, आदमी काटे वह।

गधा भोंके वह नहीं, मानव भों के वह।

नींद आ जाये वह नहीं, नींद उड़ जाय वह।

बिना किसी भी प्रचार ऐसी बातें तुरन्त ही फैल जाती हैं। जैसे कि पानी में तेल की बुंद।

यह बात राजा के पास भी आयी। राजा को लगा- ऐसा निद्रारहित वृद्ध आदमी तो बहुत ही काम का हैं। कहीं नहीं तो अन्तःपुर के चौकीदार के रुप में तो काम आयेगा ही।

.... और दूसरे ही दिन राजा ने उसे हमारे अन्तःपुर का चौकीदार बना दिया। वह बुड्ढा तो वैसे ही घर से ऊब गया था। सगा पुत्र भी जहां अपनी बात मानने को तैयार न हो उस घर में रहने का भी मन किसे होगा ? उस वृद्ध को संसार की असारता दिखने लगी थी, उसे संसार प्याज जैसा लगने लगा था। छाल निकालने ही जाओ। अंदर कुछ भी नहीं मिलेगा।

शुरुआत में पत्नी प्यारी लगती है परन्तु पुत्र होते ही उसका प्यार कम हो जाता है। प्रारंभ में पुत्र प्यारा लगता है, लेकिन शादी होते ही वह पुत्रवधु का हो जाता है। शुरुआत में पुत्रवधु अच्छी लगती है, परन्तु दो-तीन वर्ष में ही अलग घर की बात करती है। बस इस संसार में ऐसे ही सभी चलता हैं। जहां सभी चलता जाता है और अन्त में हम स्वयं भी चले जाते हैं इसी का नाम तो संसार है न ?

किन्तु रे, संसार की ऐसी असारता का अनुभव करने के लिये टेठ वृद्धत्व तक पहुंचना पड़ता है, तब यह अक्कल आती है कि इससे तो.... परन्तु तब पश्चाताप के अलावा दूसरा कुछ हाथ में नहीं रहता।

घर से ऊबा हुआ वह वृद्ध मेरे लिये तो आफतरुप बना। गवाक्ष में से जाने का मेरा समय हो गया। मैं खड़ी भी हो गयी,

किन्तु वह वृद्ध खूं....खूं.... कर रहा था। मेरा मन बोल उठा- कैसे है यह विचित्र वृद्ध ! अभी सोया नहीं। मैं उसके सोने का इंतजार करने लगी थी, लेकिन मुझ मूर्ख को कहां पता था कि इससे नींद सात समुद्र दूर भाग गयी है ? वह सोने का नाटक करके मेरे लिये आफत भी खड़ी कर सकता है ? परन्तु कामांध व्यक्ति के पास इतना सोचने का समय भी कहां रहता है ? वह तो आँख होने पर भी अंधा होता है। वह उल्लू तो मात्र दिन में ही नहीं देखता, वह कौआ तो मात्र रात को ही नहीं देखता, परन्तु कामांध दिन में भी नहीं देखता और रात को भी नहीं दिखता।

शुरु-शुरु में तो वह बुड्ढा बार-बार मेरे सामने देखता था। अतः मैं घबरा कर बार-बार नीचे बैठ जाती थी, किन्तु फिर मैंने देखा तो वह वृद्ध गहरी नींद में सो रहा था। हाश ! अब कुछ तकलीफ नहीं। मेरा मन बोल उठा। मैं तुरन्त ही हाथी की सूंढ पर पैर रखकर उतर पड़ी।

आज मेरा यार (महावत) एकदम क्रोधान्वित था- हरामी ! इतना समय क्यों लगाया ? तुझमें कुछ अक्कल-बक्कल है या नहीं ? समय का होंश है या नहीं ? मैं कब से यहां तेरा इंतजार करके खड़ा हूं, इसका तुझे कुछ सोचना चाहिये या नहीं ? ऐसी रात में मुझे कब तक खड़ा रहना है ?

....और वह तो मेरी एक भी बिना सुने हाथी को बांधने की जंजीर लेकर मुझे मारने ही लगा।

''नाथ ! इतने नाराज मत हो। मेरी बात कुछ सुनो तो सही ! वह बूढ़ा है न वह आज ही नया आया है और टिक-टिककर मेरे सामने ही देख रहा था। मैं तो कब की तैयार थी, लेकिन बूढ़ा सोये तब न ! वह अभी सोया और मैं तुरन्त ही आ गयी।'' मेरी बात सुनकर महावत कुछ ठंडा हुआ और मुझे लिपट गया। उसका क्रोध काम में बदल गया।

ऐसा मत समझें कि स्त्री को मारने से वह नाराज हो जाती है। मारने से उलटा स्त्री दुगुने प्रेम से चाहने लगती है। सच पूछो तो जो गरम नहीं होता, जो मार-कूट नहीं करता, ऐसा पुरुष स्त्रीओं को नामर्द लगता है। उसकी शांति में स्त्री को कायरता के दर्शन होते हैं। स्त्रीयां कभी कायर को चाह नहीं सकती। स्त्रीयों को काबू में रखने से ही वे सीधी चलती है। ''ढोल, पशु, मूरख और नारी ये सब ताड़न के अधिकारी।'' तुलसीदास की यह प्रसिद्ध उक्ति आपने नहीं सुनी ? इसमें कुछ तो सच्चाई होगी न ? चंदन, दही, दही, स्त्री, धरती, ईख- ये सभी चीजें ऐसी है कि इसका जितना मर्दन करो उतना अधिक फल। काम पूरा करके मैं हाथी के सहारे वापस उपर आ गयी। ऐसा कुछ दिन बराबर चला।

एक दिन राजा अन्तःपुर में देशविदेश की बातें कर रहे थे। आज तो राजा बराबर खीले थे। वे हाथ में कमल का फूल लेकर आये थे और उसकी नाल से सभी रानियों को क्रमशः फटकारते थे। सभी रानियां को हंसने लगी- यह क्या है ? शिक्षा देने की नई पद्धति है या क्या ?

परन्तु जब मेरी बारी आयी तब मैं सहसा चिल्ला उठी- ''बाप रे ! .... मुझे बहुत दर्द हो रहा हैं। इतना मत मारो।'' कमल की कोमल नाल भी मुझे बहुत लगती है। मैं इतनी ज्यादा कोमल हूं- ऐसा मैं बताना चाहती थी।

''कुलटा स्त्रीयां घुंघट लंबा खींचती है, खारा पानी ठंडा ज्यादा होता है। धूर्त मनुष्य बहुत मीठा-मीठा बोलता है।'' यह तो आप जानते ही होंगे ? किन्तु मुझे कहां पता था कि मेरा यह ढोंग ही मेरे लिये बेड़ी बन जायेगा। स्त्रीयों में इतनी अक्कल भी कहां से लानी ?

राजा का क्रोध ज्वालामुखी की तरह फट निकला और बोल उठे- ''हाथी को बांधने की जंजीर की मार नहीं लगती और कमल की नाल लगती है। वाह ! क्या कोमलता हैं ?

राजा का यह वाक्य सुनते ही मैं चौक उठी। मुझे पल भर में सब कुछ समझ में आ गया- अवश्य यह काम उस बूढ़े का है। मैं बुद्धु उसे सोया हुआ समझ रही थी ! बूढ़ा तो जमाने का खाया हुआ निकला। मेरी धारणा सच निकली। मेरी विश्वासु दासी ने भी यही बात कही- रानी माँ ! बहुत ही भयंकर खेल खेला जा रहा है। आपके ऊपर मौत का खतरा हैं। मैंने अपने कानों से सुना। वह बूढ़ा और राजा दोनों बातचीत कर रहे थे।

राजा ने गुस्से से पूछा- क्यों आप तो कह रहे थे कि मुझे नींद नहीं आती ! तो आज क्यों सूर्योदय तक गहरी नींद में सो रहे थे ? ''राजन् ! बेअदबी माफ करना। आज रात जो घटना देखी उससे मेरे मन का समाधान हो गया। यदि राज-परिवार में कड़ी निगरानी के बीच भी ऐसा अच्छा-बुरा चलता हो तो हम जैसों के घर में अच्छे-बुरे चलते रहते हैं उसमें अचरज ही क्या ? और मेरे मन का समाधान हो गया। बहुत दिनों से हराम हुई नींद आज आ गयी।'' कौन सी घटना ? और बूढ़ेने हाथीवाली रात की पूरी घटना कह सुनायी। राजा चिल्ला उठे- ''कौन है वह हरामखोरी रानी ?''

(आगे और भी है...!)

स्वावलंबन, परस्परावलंबन और आत्मावलंबन

✲ इन्द्रचंद्र दुधेडिया, जलगांव

स्वयं सिद्ध तत्व 1- ''स्वावलंबन सभी प्राणियों को प्रिय है।'' पिंजरे में बंद पंछी नभ में स्वयं उड़ना चाहता है। नकेल से बंधा रीछ जंगल में मुक्त घुमने को आकुल है। पालतु कुत्ता भी गले के पट्टे से पीछा छुड़ाने के लिये आतुर है। पर ये प्राणी परावलंबन स्वीकारने को बाध्य है। मनुष्य अपनी बुद्धि द्वारा स्वावलंबी बन सकता है।

स्वयं सिद्ध तत्व 2- ''मानव का बालक गर्भ से ही परावलंबी है।'' बाल्यकाल में उसका संगोपन माता करती है। शौशव में माता -पिता उसके भरण -पोषणा का दायित्व संभालतें हैं। दादा-दादी, चाचा-चाची, भाई-बहन इस कार्य में सहयोगी बनते हैं। चलते समय पांव लड़खड़ाते है, तो वे उसे सहारा देते है, तुतलाती वचनों को सुनकर प्रसन्न हो कर वे उसे प्रोत्साहित करते हैं। विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय की शिक्षा की उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। शिक्षा में अध्यापक मार्गदर्शन करते हैं, मित्र व्यवहार कुशल बनने में सहायक होते हैं। यह परावलंबन उस किशोर की बाध्यता है। पर उसके पश्चात वह अपने पैरों पर खड़ा हो कर स्वावलंबी बनता है।

स्वयं-सिद्ध तत्वः-3 ''विकलांगता से परावलंबन बाध्यता है।'' इस परावलंबन के सहारे से व्यक्ति स्वावलंबी बने, तो वह एक असाधारण उदाहरण प्रस्तुत करता हैं। दो नाम सहजता से मस्तिष्क में उभरते है, विश्व-प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. स्टीफन हॉकिंग और विश्व-विख्यात अमरिकन लेखिका हेलन केलर। युवावस्था से डॉ. हॉकिंग को ऐसे विरल व्याधि का सामना करना पड़ा कि अपने सारे कार्यो के लिये वे परावलंबी थे और एक कुर्सी में बैठे रहने में बाध्य थे। पर उनका मस्तिष्क इतना तेज था कि उनके शोधों और लेखन द्वारा उन्होंने विश्व में घूम मचा दी। हेलन केलर डेढ़ वर्ष की आयु में उनकी देखने और सुनने की क्षमता खो गयी। उनकी शिक्षिका एनी सुलेवन की सहायता से उन्होंने मूलभूत शिक्षा पा कर आगे स्नातक की विश्वविद्यालयीन उपाधि अर्जित की और फिर अध्यापिका लेखन और दार्शनिक बन कर विश्व में ख्याति प्राप्त की। दोनों ने अपने आत्मबल से परावलंबत्व पर विजय अंकित की।

स्वयं-सिद्ध तत्व 4- ''विश्व परस्परावलंबन आधारित है।'' प्राणी समुह में रहते हैं। मनुष्य समाजप्रिय प्राणी है। वह देखता-जानता है कि उसका जीवन उसके अकेले से नहीं चल सकता। उसके दिन भर के क्रियाकलापों में अपने और पराये अनगिनत लोगों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष योगदान रहता है। भगवान महावीर ने बताया- ''परस्परोपग्रही जीवा- नाम्''। अर्थात् सभी जीव परस्पर उपग्रह, सहयोग से जुड़े हैं, जीवित है। सृष्टि का ''नत्र-चक्र'' (Nitrogen cycle) इसका विस्तृत उदाहरण है। ''अन्न-चक्र'' (Food cycle) में भी सूक्ष्मतम जीव (bacteria) से लेकर सर्वाधिक उत्क्रांत जीव मनुष्य तक सभी जीव एक दूसरे से श्रृंखलाबद्ध है।

स्वयं-सिद्ध तत्व 5- ''आत्मावलंबन ही मनुष्य को मोक्ष दिलाता है।'' स्वावलंबन और परस्परावलंबन द्वारा विकास बाहरी दौड़ है, भौतिक समृद्धि है। बहुत सुख-सुविधा, धान-संपदा, वैभव-ऐश्वर्य पाने पर भी मानव को सच्चे सुख और वास्तविक शांति की अनुभूति नहीं होती। भौतिकता की अंधी दौड़धूप में स्वाभाविक आनन्द और शांति का मार्ग ढक जाता है। आत्मा की विस्मृति हो जाती है। मनुष्य जन्म का मूल उद्देश्य भूल जाता है कि जन्म-मरण चक्र से मुक्त होना है। मनुष्य को स्मरण करना है-''वास्तविक सुख-शांति जो कभी खोती नहीं वह, आत्मपरिचय से प्राप्त होती है।'' इसके लिये सांसारिक उत्तरदायित्व त्यागने-भूलने की आवश्यकता नहीं है। जैन दर्शन में ''कायोत्सर्ग'' विधि करने का प्रतिबोधन किया गया है। प्रति दिन नियमितता से एक घंटे के लिये नियत समय पर यह विधि करने से लाभ निश्चित होता है।

जिन मुद्रा में खड़ेहो कर शरीर को शिथिल करना ''पहली सीढ़ी'' है। शारीरिक स्थिरता प्राप्त कर मंद श्वास लेना ''दूसरी सीढ़ी'' है। फिर नाक की नोक पर दृष्टि टिका कर मन को अन्तर्मुखी बनाना ''तीसरी सीढ़ी''है। चित्त की चंचलता रोकने हेतु मस्तिष्क में उमड़ रहे संकल्प-विकल्प को द्रष्टा या साक्षी भाव से देखना ''चौथी सीढ़ी''है। तात्पर्य यह है कि रास्ते में हुई दुर्घटना को हम जिस प्रकार तटस्थ हो कर देखते हैं, उसमें लिप्त नहीं होते, उससे जुड़ते नहीं, ठीक उसी प्रकार हमारे अपने तर्क-वितर्क को साक्षी या दर्शक की वृत्ति से देखो। इस प्रकार कृति करने से तर्क-वितर्क विलीन हो जाते हैं और चित्त की एकाग्रता सधती है। पश्चात मनुष्य ''आत्मालंबन'' पर स्थिर हो सकता है। यह ''पांचवीं सीढ़ी'' है। प्रारंभ में यह अनुभूति क्षणिक होती है पर आनंद और शांति की जो झलक मिलती है, उससे मनुष्य कायोत्सर्ग विधि में रस लेने लगता है। इसके पश्चात आध्यात्मिक उन्नति की गति तेज होती है और अंत में वह मनुष्य महावीर भगवान के कथन अनुसार परमात्म पद प्राप्त करता है-''अप्पा से परमप्पा''।

स्वयं-सिद्ध तत्व 6- ''निरावलंबन मनुष्य जीव की अंतिम अवस्था है''। यहां से उसे कोई पदच्युत नहीं कर सकता। इस अवस्था में वह अबाध सुख और चिर शांति का अनुभव करता है। मनुष्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य यही मोक्षावस्था तो है।

आतंकवाद के मूल को पकड़ें

✱ डॉ. प्रद्युम्न शाह

आज ज्ञान और विज्ञान अपनी नयी उंन्चाईयों को छू रहा है। नये-नये भौतिक पदार्थो की खोज हो रही है। पूरी पृथ्वी मनुष्य की दौड़-भाग की सीमाओं में सिमट कर रह गयी है। विश्व के एक कोने की घटना दूसरे कोने को प्रभावित कर रही है। सूचना प्रौद्योगिकी का तंत्र इतना सघन हो गया है कि आप घर बैठे-बैठे पूरे विश्व से जुड़े हैं। सूचनाएं, चिकित्सा, न्याय, पदार्थो का जमाव ये सभी चीजें आर्थिक समृद्धि पर निर्भर करती है। ये सारी व्यवस्थाएं बड़ी महंगी है। ये सारी चीजें पैसे से खरीदी जा सकती है। ये अध्यात्म और पारमार्थिक ज्ञान से परे की चीजें है। ये लौकिक और भौतिक उपलब्धियां है, जो साधारण व सामान्य जन को भी उपलब्ध हो जाती है। सारी चीजें उपलब्ध होने के कारण कोई भी इन्हें बाजार से खरीद सकता है। ज्ञान विज्ञान ने जो भी चीजें निर्मित की है वे भौतिक है तथा निर्मित की हुई होने के कारण नाशवान है। इनमें भय है आतंक है।

रुपया पैसा होने से ये भौतिक पदार्थ खरीदे जा सकते हैं। अहिंसा, संयम तथा तप से लोगों की आस्था ही हटती जा रही है। इसका एक ही कारण है कि कोरी भौतिक चकाचौंध, मूल्यों के प्रति आस्था का न होना, विवेक चेतना का जागृत न होना।असलियत में आतंकवाद एक पेशा बनकर रह गया है। जैसे डाक्टर्स, मास्टर्स, इंजीनियर्स आदि के ट्रेनिंग सेंटर होते है और ये लोग ट्रेनिंग करके वेतन के बदले सेवाएं देना शुरु कर देते है। उसी प्रकार आतंकवादियों के भी प्रशिक्षण सेंटर मात्र आतंकवाद का ही प्रशिक्षण देते हैं। आतंकवाद का भी उद्देश्य फतह करना तथा अधिकाधिक भूमंडल पर राज्य स्थापित करना है।

विश्व में जितने भी पंथ है, मत मतांतर हैं वे प्रेम, भाईचारा व नैतिक मूल्यों का ही पाठ पढ़ाते हैं। किंतु कहीं-कहीं इसका उल्टा अर्थ लिया जाता है और वह अर्थ इस प्रकार का है कि- अपनों से प्रेम गैर से बैर। भगवान सबका मालिक है यह न मानना और यह मानना कि केवल एक पंथ ही भगवान का है। ये बातें स्वार्थी ही करते है, इसमें तनिक भी परमार्थ नहीं है। मन से, वचन से, कर्म से हिंसा न करना सत्य के मार्ग पर चलना, चोरी नहीं करना, परम सत्ता में आनंदित रहना तथा पराये धन का लालच न रखना आदि परमार्थ है। यह आत्मिक बल प्रदान करता है।

आज आवश्यकता है कि इन मूल्यों का प्रचार हो। पूरी मानवता जीवन का वास्तविक आनंद उठा सकें। स्वस्थ व बलिष्ठ काया चारों तरफ जीवन में प्रकाश ही प्रकाश तथा हिंसा व कायरता का लेशमात्र स्पर्श भी नहीं हो ऐसा जीवन बनाने के लिये धार्मिक कट्टरता का विसर्जन आवश्यक है।

आज जीवन मूल्य गिरते जा रहे हैं। सांस्कृतिक आक्रमण तथा भौतिकता इसके लिये जिम्मेदार है। हम धर्मचक्षु से मोहक रुप देखने तथा प्रिय शब्द सुनने तथा सुस्वाद के आदि होते जा रहे है, अधिकाधिक अर्जन का सिकंजा गर्दन पर कसता जा रहा है।

आतंकवाद मिथ्यादर्शन व कुप्रचार का परिणाम है। आतंकवादियों का वतन परस्त या देशभक्त समझा बताकर उन्हें गुमराह करने वाले अग्रगामी लोग आतंकवाद के लिए जिम्मेदार हैं। संयुक्त राष्ट्र के दबाव से तथा प्रभावशाली राष्ट्रों के भय से कोई देश सीधे रुप में दूसरे से नहीं टकराता किंतु द्रुतगामी यानों का अपहरण, आधुनिक विनाशक अस्त्रों-शस्त्रों के द्वारा छद्म युद्ध का आलंबन लेकर आतंक या दहशत फैलाकर किसी राष्ट्र को तबाह करने की जो प्रक्रिया चल गयी है। वस्तुतः यह प्रक्रिया घोर निंदनीय कुत्सित व घिनौनी है। फिर भी यह प्रक्रिया विश्व को अपने शिकंजे में जकड़े हुए है। कोई विश्वास नहीं करेगा आतंकवादियों के हाथ में परमाणु अस्त्र है। यह ठीक वैसे ही है जैसे कि बंदर के हाथ में तलवार का होना।

यह भी सत्य है कि आतंकवाद को कामयाबी नहीं मिली है। खुल करके युद्ध न कर पाने की शक्ति तथा अंदर ही अंदर युद्ध करने की तमन्ना का नाम आतंकवाद है। यह लड़ाई का असभ्य तरीका है तथा ऐसी लड़ाई का कहीं आदन नहीं है न ही ऐसे आतंकी कार्यो को देशभक्ति का कार्य ही कहा जा सकता है। चाहे जम्मू कश्मीर की विधानसभा पर हमला हो या फिर दिल्ली के संसद भवन में। चाहे गुजरात के गोदरा रेल्वे स्टेशन पर रेल के डिब्बे का अग्निकांड हो या फिर अक्षरधाम में आतंकवादी हमला हो। नहीं, ये सारे कुकृत्य हैं। इन कार्यो ने मानव की नहीं मानवता की हत्या की है, जीवन मूल्यों पर करारा प्रहार किया है। सभ्य समाज में असभ्य कृत्य को उपस्थित किया है। ऐसे कुत्सित कृत्यों में न रोजी है न रोजगार। यह इन्सानियत पर सीधा प्रहार है।

आज अर्थ प्रधान युग है। अर्थ के लिए सभी उत्सुक है। आज अच्छी सेवाओं की भी बड़ी कीमत है यह मेरा ही नहीं सभी का मत है। कौन कहता है मूल्यों की कोई पूछ नहीं जो ऐसा कहता है उसे युग की कोई सूझबूझ नहीं।

जितना पैसा आतंकवाद के प्रशिक्षण में लगता है उतना अहिंसा के प्रशिक्षण में लगे तब युग की काया ही पलट जाय। काश ! यह सद्‌बुद्धि सभी में आती है और चरित्र की फसलें हर दिल में लहराती है।

आज शक्तिशाली राष्ट्रों से इस बात का आव्हान किया जा सकता है कि वे आतंक के प्रशिक्षण के केन्द्रों को मानवता की सेवा के प्रशिक्षण केन्द्र बनावें। आतंक प्रशिक्षण केन्द्र को अहिंसा का प्रशिक्षण केन्द्र बनायें। लोगों के रोजी रोजगार की सही चिंता की जाये। जनसंख्या नियंत्रण के सम्यक प्रयत्न किये जायें। पर्यावरण के प्रति हो रहे अत्याचार के प्रति स्वयंसेवी संस्थाएं उठ खड़ी हों। प्रयत्न हो कि जहां कहीं आतंकवाद को प्रश्रय मिले उसके मूल का अध्ययन कर महाशक्तियां उसको सदा-सदा के लिये दबाने का प्रयत्न करें। ऐसे में सभी समान विचारधारा वाले देशों को एक जूट होना पड़ेगा। बिना एक जुटता के न तो कोई आवाज सुनेगा और उनकी आवाज नक्कारखाने में तूती की आवाज ही साबित होगी।

छोटी वस्तु का भी बड़ा महत्व है...!

वस्तु के बाह्य आकार के आधार पर वस्तु का कभी मूल्यांकन न करो। वस्तु छोटी दिखाई देने पर भी उसका मूल्य अधिक हो सकता है।

❋ एक छोटा सा अंकुश महाकाय हाथी को वश में रख सकता है।

❋ एक छोटा सा दीपक कमरे में रहे गाढ़ अँधेरे को दूर कर सकता है।

❋ एक छोटा सा वज्र बड़े पर्वत को चूरचूर कर सकता है।

❋ एक छोटा सा मंत्र देवता को वश में कर सकता है।

❋ एक छोटी सी सुई लंबे-चौड़े कपड़े को जोड़ सकती है।

❋ बस, इसी तरह किसी में दिखाई देने वाले छोटे से गुण की भी उपेक्षा मत करो, उस गुण को जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिये।

अहंता-ममता

अहंता और ममता ये दो इतने भयंकर दोष है कि जिसका वर्णन नहीं कर सकते। हमारी भयंकर नुकसानी करनेवाले ये दोष ही है।

अहंता हम में व्यर्थ अभिमान कराती है।

मिथ्या अभिमान पुष्ट करने के लिये मनुष्य मुफ्त में मिलनेवाले मान-सम्मान के पीछे दौड़ता है। मनुष्य पैसों के पीछे इतना पागल क्यों है ? जरुरत जितना धन मिलने पर भी इसके पीछे क्यों दौड़ता है ? ज्यादा पैसा होने से कोई भी व्यक्ति एक साथ ज्यादा खा नहीं सकता, ज्यादा पहन नहीं सकता और ज्यादा बंगले में रह नहीं सकता। पैसा कमानेवाले भी इस बात को अच्छी तरह से जानते है। लेकिन सवाल है सन्मान का, अहंकार का ! मनुष्य को अहंकार सीखाता है और ज्यादा पैसा प्राप्त कर और ज्यादा ! तभी तुझे सन्मान मिलेगा। दूसरों को भी पैसों से ही सन्मान मिलता है न ? और अहंकार की शिक्षा मान कर मनुष्य पैसे के पीछे ही दौड़ता रहता है, दौड़ता ही रहता है। पैसे का सीधा सुख अभिमान है। अभिमान में मनुष्य सुख मानता है, वाकई में तो यही दुःख का मूल है।

ऐसी अहंता के साथ ही ममता आती है। अहंता मूल है, ममता डाल है। अहंता के कारण ही ममता टिकी है। इन दोनों दोषों से जीव दुःखी हो रहा है। फिर भी आश्चर्य की बात है कि दुःखदायी दोषों को ही ज्यादा मजबूत बनाने के लिये जीव हमेशा प्रयत्न करता रहता है। इससे कभी दुःख का नाश होगा ? जैसे जैसे प्रयत्न बढ़ते जाते है वैसे-वैसे अहंता और ममता ज्यादा दृढ़ होगी ! और जैसे जैसे अहंता- ममता दृढ़ होगी वैसे वैसे दुःख बढ़ेंगे। ऐसे उल्टे प्रयत्न कर-करके हमने अनंत जन्म इस संसार में कर डाले। अभी कब तक इस चक्कर में फंसे रहना है ? अहंता और ममता का वास्तविक स्वरुप हम कब जानेंगे ? डायन को देवी मानकर कहां तक पूजा करेंगे ?

''मैं अर्थात् शरीर नहीं, लेकिन आत्मा'' ऐसा अनुभूतिपूर्वक (सिर्फ जानकारी नहीं) ज्ञान होते ही अहंता पूंछ पकड़कर भागेगी। अहंता के भागते ही ममता भी भागेगी। क्योंकि ममता अहंता की ही परछाई है। मूल पदार्थ ही न रहा तो उसकी परछाई कहां से रहेगी ?

मेरे सपनों का भारत....

मेरा एक सुखद स्वप्न है कि मेरे देश, भारत वर्ष के लिये आने वाला कल मंगलमय होगा। सभी जन आपस में प्रेम-प्यार से मिलकर रहेंगे तथा घृणा, ईर्ष्या, द्वेष का कहीं नामोनिशान नहीं होगा। आनेवाले समय में भारत वर्ष का संपूर्ण पृथ्वी पर साम्राज्य होगा। उस समय भारत सच्चा स्वर्ग होगा तथा यह ''सोने की चिड़िया'' फिर से कहलाया करेगा। यहां घी, दूध तथा अन्न-धन की कहीं कमी न होगी। भारत का हर नर श्री नारायण अथवा श्री रामचन्द्रजी के तुल्य पावन तथा हर नारी लक्ष्मीस्वरुपा सीताजी की तरह गुणवान होगी। भारत में फिर से घी-दूध की नदियां बहेगी। धरती उपजाऊ होगी तथा यह अपनी कोख से सोने जैसी फसलें उगाया करेगी।

आज हमारे देश का वातावरण कितना प्रदूषित हो चुका है, लेकिन आने वाले समय में प्रकृति के पांचों ही तत्व पावन-स्वच्छ अर्थात् सतोप्रधान होंगे तथा सारा देश प्रदूषण से रहित होगा। मेरा सपना है कि भारत में फिर रामराज्य हो। भारत में सुख, समृद्धि और ज्ञान की त्रिवेणी बहे, भारत फिर से अपने प्राचीन जगद्-गुरु पद को प्राप्त करें। भारत (भारत अर्थात् शोभा या प्रतिभा से रत या पूर्ण) अपने नाम को फिर से चरितार्थ करें, यह मेरा सुन्दर सपना है। भारत की नारियों का सौंदर्य उनके सतीत्व और मातृत्व के रुप में प्रकट हो-ऐसी मेरी इच्छा है। भारत की नारी सद्गुण, सद्चरित्र, सौम्यता और पवित्रता की देवमूर्ति बनें- ऐसी मेरी इच्छा है।

अपने देश के लिए मैंने संजोए है ये स्वप्नः-

मेरे सपनों के भारत में शोषण, अन्याय, बेरोजगारी, भूखमरी, महंगाई, अराजकता, आंतकवाद तथा भ्रष्टाचार आदि का कहीं नामोनिशान नहीं होगा। वहां व्यक्ति के स्वार्थों के बजाए परोपकार, मानव सेवा और राष्ट्रहित को ही प्रमुख महत्व दिया जाएगा। मेरे सपनों के भारत में राजनीति अपनी दुमुंही चाल नहीं चलेगी। धर्म एवं राजनीति की सत्ता एक ही योग्य शासक के हाथ में होगी। भारत के न्याय-प्रिय कभी अपनी मनमानी नहीं करेंगे तथा वे अपनी प्रजा का पुत्र की तरह पालन करेंगे और प्रजा को सुख से रखेंगे। आज की तरह राजसत्ता के अनेक दल और विपक्षी दल वहां नहीं होंगे। सत्ता को पाने के लिये किसी तरह का कुचक्र तथा षड्यंत्र वहां नहीं होगा। राज्याधिकारी वहां योगशक्ति से सम्पन्न तथा प्रतिभाशाली होगा।

मेरे सपनों के भारत में धर्म एवं जाति के नाम पर कभी किसी प्रकार का दंगा या लड़ाई-झगड़े नहीं होंगे, क्योंकि वहां सबका एक ही मानव धर्म होगा। उस धर्म का व्यक्ति न तो हिन्दू होगा और न मुसलमान या सिक्ख, ईसाई आदि ही। मानवमात्र का एक ही सत्य धर्म होगा और वह धर्म होगा प्रेम का, अहिंसा का, शान्ति का और भाईचारे का। मेरा स्वप्न है कि भारत के वन-उपवन हरे-भरे होकर सदैव लहराते रहें, उनमें सौंदर्य की अपार सुषमा बनी रहे। भारत के लता-पादप रसपूर्ण, स्वाद और मधुर फल देने वाले हों। भारत की नदियां अपने जलदान से भारतीयों के जन-जीवन को तृप्त करती रहें। भारत की ऊंची-नीची पर्वत श्रृंखलाएं, तपोभूमि, बनकर मनुष्यों को मंगल का शुभ आर्शीवाद प्रदान करती रहें। वे अपनी अतुल सम्पदा से भारत वर्ष के घर-आंगन को भर दें। भारत भूमि को देवधरा कहा जाता है। मेरा सपना है कि इस पुण्यभूमि पर फिर से देवी-देवताओं का साम्राज्य हो। भारत में रहनेवाला आम नागरिक चरित्र की उज्जवलता और आचरण की श्रेष्ठता को धारण करके धरती का पूज्य देवता और देवी बन जाए।

बहे प्रेम की निर्मल गंगा:-

मेरा स्वप्न है कि भारत के सभी प्रदेशों में मानव-मानव के बीच प्रेम की निर्मल गंगा बहे, भारत से पाखाण्ड, अंधविश्वास एवं बाह्याडम्बरों का नाश हो तथा सबके बीच आत्मीयता की भावना हो। क्रोध और अहंकार का इस देश से हमेशा के लिए नाश हो जाए। किसी में अतिशय मोह न हो, किसी में ज्यादा लोभ न हो तथा एक-दूसरे का लोग सम्मान करना सीखें। मेरे सपनों का भारत सच्चे अर्थों में एक गौरवशाली राष्ट्र होगा। वहां न कोई भूखा-नंगा होगा और न ही कोई पापी, दुःखी, रोगी, शापित कोढ़ी, निर्धन या पीड़ित ही होगा। सबमें समता और न्याय की भावना होगी।

सदैव ही व्यक्तिगत हित से ज्यादा राष्ट्रहित व समाज हित को महत्व दें। आज हम लोगों में आतंक खौफ इस कदर समाया हुआ है कि हम आजादी के 71 वर्ष बाद भी आजादी का जश्न पूरी आजादी से नहीं मना पा रहे हैं। बम विस्फोटों से आहत, मुंबई एक दिन आहत होता है और दूसरे दिन खड़ा हो जाता है। हमारे देश की परम्परा है कि आज तक हमने कभी धरती के टुकड़े के लिए लड़ाई नहीं की लेकिन अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए हमेशा आगे रहे हैं। धरती के टुकड़ों को जीतना और लौटाना हमारी पुरानी परम्परा रही है। हमने नजरें

उठाकर देखना सीखा है, नजर झुका कर नहीं। भारत का यह तिरंगा न केवल एक कपड़े का टुकड़ा है, वरन् भारत की आन-बान-शान है। इसके तथा जैन धर्म के झंडे में निहित सारे रंग भारत की एकता के प्रतीक हैं।

कर्त्तव्य और दायित्व भी समझें:-

हिन्दुस्तान में आज भी संवेदनशीलताएं मौजूद है लेकिन हमारी संस्कृति को मटियामेट करने में हमेशा देश के लोगों का ही हाथ है, केवल नेताओं को दोष देते रहना काफी नहीं। हमें भी अपने कर्त्तव्य और दायित्व को समझना चाहिये। हमें अपने अधिकारों का ही दायित्वों को भी समझना चाहिये। केवल नेताओं की दुहाई देते रहने से अथवा दूसरे देश की प्रशंसा करते रहने मात्र से देश का विकास होना संभव नहीं है। दूसरे देशों की अच्छाईयों को हम अपने देश में क्यों लागू नहीं करना चाहते ? चन्द भ्रष्ट नेताओं की वजह से, हमारे ही देश के गद्दारों की वजह से ही हमारा देश आज हालात के हाथों मजबूर है। कल तक सोने की चिड़िया के नाम से प्रसिद्ध भारत, आज विश्व के देशों के सामने हाथ फैलाये खड़ा है। भारत को खतरा इन्हीं बेईमानों से है कि बाहर के दुश्मनों से। आजादी के पहले भारत में जितने अपराध नहीं थे उससे कहीं ज्यादा अपराध आज हमारे सामने हैं। इसलिये भारत के लोगों को अपने वोट का महत्व समझना चाहिये।

श्रीमहावीर स्वामी ! जिनके सिद्धांतों को अक्षरशः पालन करने वाले हमारे राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ही थे। उन्होंने न सिर्फ इनकी आरती उतारी वरन् इनकी वाणी को भी अपने जीवन में उतारा। उन्होंने निःस्वार्थ भाव से देश की सेवा की एवं देश के लोगों के द्वारा जब उन्हें राष्ट्रपति पद के लिए आमंत्रित किया गया, उन्होंने ठुकरा दिया। कुर्सी ठुकराने वाले केवल राष्ट्रपति तक सीमित रह जाते हैं। अहिंसा के दम पर ही अपने देश को आजाद कराने में कोई कसर नहीं छोड़ी। दीक्षा लेने के बाद तो सभी महात्मा कहलाते हैं विरले ही कोई होते है जो घर में रहकर भी महात्मा कहलाते हैं, वे है महात्मा गांधी।

मेरे देश ने कर ली है चांद-तारों से भी दूर की यात्रा

आज भले ही अमेरिका चाँद पर, रुस मंगल पर और जापान अंतरिक्ष की यात्रा कर चुका हो, लेकिन मेरे देश ने चाँद तारों से भी दूर निर्वाण की यात्रा कर ली है। दुनिया के देश पदार्थों की खोज किया करते है लेकिन मेरा देश परमात्मा को खोज करता है। हमारी संस्कृति भी बड़ी अजीब है, हमें जिससे जो मिला उससे हमने संबंध बना लिये। हमने अपनी जन्म देनेवाली माँ को ही माँ नहीं कहा बल्कि चंदा, सूरज जिनसे रोशनी व शीतलता प्राप्त होती है उन्हें हम अपने देवता तथा मामा कहकर पुकारते हैं। वो नदियां जो हमें जीवनदायिनी जल दिया करती है, उसे भी गंगा माता जैसे संबोधनों से संबोधित करते हैं। वे वृक्ष जो हमें फल प्रदान करते हैं, उनकी भी हम आरती उतारा करते हैं। यहां तरक्की दूध देनेवाली मूक जानवर गाय तथा अन्न प्रदान करनेवाली धरती को भी हम माता कहकर बुलाते हैं। हमारी आपसी लड़ाई के कारण हम सबसे ज्यादा सम्पन्न व बुद्धिमान होने के बाद भी आज अपने देश में अपने अस्तित्व को खोते जा रहे हैं। हमारे समाज के कई लोगों को तो यह भी नहीं पता कि हम अल्पसंख्यक की श्रेणी में आ गये है यदि यह पता भी है, तो अल्पसंख्यकों के अधिकारों के बारे में हम अनभिज्ञ है। अब मंदिर निर्माण से ज्यादा सेवा एवं शिक्षा संस्थानों का निर्माण करना जरुरी है।

इंडिया नहीं भारत कहो

आसपास के क्षेत्रों में आपात स्थिति में सहायता के लिये समाज के लोगों को भी आव्हान करता हूं इनको मिले अधिकार समाज ने दिये हैं और समाज चाहे तो इन्हें छीन भी सकती है। माँ अपने बच्चों को सामाजिक मामलों में आगे आने के लिये प्रेरित करें। तेजी से फैल रही अंग्रेजी भाषा के प्रभाव और हिन्दी के अपमान की घटनाएं चिंताजनक है। जिस देश के लोगों को अपनी भाषा, अपने धर्म, अपनी समाज, अपने राष्ट्र में गर्व नहीं होता, उस देश को मिटाने से ज्यादा वक्त नहीं लगता। जब मेरे देश को इंडिया कहकर बुलाया जाता है तब 71 साल पुरानी दासता के दिन याद आ जाते है और जब मेरे देश को भारत कहकर बुलाया जाता है तब ऋषभदेव पुत्र भरत की याद आती है। इसलिये हमें अपने देश, भाषा, समाज पर नाज होना चाहिये। भारत वर्ष की राष्ट्रीय एकता इस देश की सबसे बड़ी ताकत है। जहां बचपन से ही बालक अपनी पाठशाला, किताबों, गुरुजनों और माँ से देशभक्ति का पाठ सीखता है। उसके दिल में राष्ट्र के प्रति अपना तन-मन-धन इत्यादि सब कुछ न्यौछावर करने की भावना पैदा होती है।

''सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुले है इसकी, ये गुलिस्तां हमारा॥''

डॉ. इकबाल के गीत की इन दो पंक्तियों का अर्थ है कि हमारा भारत देश सारे संसार से अच्छा है। हम सब भारत देश की संतानें है तथा भारत-उपवन के रंगीन खुशबूदार फूल है।

✲ सच्चे अर्थ में धार्मिक व्यक्ति वही है, जो पाप से होने वाले आत्मा के नुकसान को बरदाश्त नहीं करता।

सफलता की प्रेरणादायी कहानियां...!

शिक्षा और साक्षरता की दिशा में हमें अभी भी एक लंबा सफर तय करना है। अपने देश में साक्षरता की दर अभी भी 61 प्रतिशत पर थमी-ठहरी हुई है। यह स्थिति ऐसी ही बनी रह सकती है जब तक कि आम आदमी इसे लक्ष्य, एक ध्येय के रुप में न लें। शिक्षा एवं साक्षरता के लिये केवल सरकारी तंत्र के माध्यम से प्रचार-प्रसार कर संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता है। वैसे भी इस तंत्र पर कितनी आस्था है, किसी से छिपा नहीं है। फिर भी जब इसे एक आंदोलन के रुप में दिये जाने की बात उठती है तो एक जज्बे की जरुरत पड़ती है, एक हौंसले की आवश्यकता होती है।

फिर ऐसा जज्बा और हौंसला कहीं भी फूट सकता है, जो प्रतिष्ठित आई.आई.टी. संस्थान में प्रवेश के लिये कोचिंग देकर सैकड़ों वंचित बच्चों के सपनों को पूरा करने में मदद कर रहे हैं। यह हौंसला प्रवीण महाजन के भीतर जाग सकता है, जिनका संगठन महाराष्ट्र भर के चीनी कारखानों में प्रवासी मजदूरों के बच्चों को शिक्षित कर रहा है। यह अन्य संवेदनशील एवं साहसी व्यक्ति के अंदर कभी भी फूट सकता है। इसके लिये हमारे अंदर दूसरों की पीड़ा एवं परेशानी को समझने के लिए एवं उनके सहयोग करने के लिए एक बड़ा दिल होना चाहिये। यदि ऐसा होता है तो हम भारत के शिक्षित नौजवान देश के दूर-दराज के इलाके में शिक्षा एवं विद्या का विस्तार कर सकते हैं।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन के मन में एक बात हमेशा कौंधती रहती थी, जिसे वे अपने इन शब्दों में अभिव्यक्त करते हैं- ''प्राथमिक शिक्षा के दायरे और उसके असर का विस्तार लगभग हर तरह की मानवीय असुरक्षा में शक्तिशाली बचाववाली भूमिका निभा सकता है। सरकारे भव्य योजनाएं बना सकती है- चाहे वह 2001 में शुरु किया गया सर्व शिक्षा अभियान हो या 1998 में प्रारंभ किया गया राष्ट्रीय साक्षरता अभियान। जब तक प्रत्येक साक्षर भारतीय एक असाक्षर व्यक्ति को अपने संरक्षण में नहीं ले लेता, शिक्षा वर्तमान समय के समान एक व्यावसायिकता एवं विलासिता बनी रहेगी। इनकी बातों में कड़ुाई सच्चाई है, जिसे हम सभी जानते-समझते हैं परन्तु इच्छाशक्ति एवं संकल्पबल के अभाव में इसे पूरा नहीं कर पाते हैं।

एक आधुनिक आई.पी.एस. अफसर अभयानंद ने शिक्षा के क्षेत्र में नया कुछ करने के लिए जो ठाना, वही किया। वह आज एक आंदोलन का रुप लेता जा रहा है। वे बिहार में अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक के पद पर कार्यरत है। उनका उद्देश्य है वंचित वर्ग के बच्चों को आई.आई.टी. में पहुंचने का एक मौका देना, क्योंकि प्रतिष्ठित संस्थाओं में उच्च वर्ग के बच्चे ही प्रवेश कर पाते है, वंचित वर्ग के बच्चों के लिए यह एक सपने के समान है। महंगी फीस एवं महंगी पढ़ाई के कारण गरीब बच्चे यहां तक पहुंच नहीं पाते हैं। अभयानंद ने इन बच्चों के मन में एक नया सपना जगाया और उसे क्रियान्वित करने के लिए जुट गए।

2007 में लगभग 2 लाख 40 हजार छात्र आई.टी.आई. जे.ई.ई. की परीक्षा में बैठे परन्तु 76200 छात्र ही सफल हो सके। सफलता के इस मायने को अभयानंद गरीब बच्चों तक ले जाने के लिए प्रेरित हुए। वे अपने जीवन की एक घटना बताते है कि कैसे उन्होंने अपने अंदर के शिक्षक को ढूंढ निकाला। 1998 में पहली कक्षा में पढ़ने वाले उनके बेटे श्वेतांक को एक अंक के गुणनफल के प्रश्नों में 10 में से शून्य अंक मिले। वे कहते हैं कि मेरी पत्नी ने इसके लिए मुझे जिम्मेदार ठहराया और इस तरह मैं पढ़ाने की कोशिश करने के लिये मजबूर हो गया। उसे पढ़ाते हुए मैंने अपने भीतर छीपे शिक्षक को खोज लिया था। मेरे दोनों बच्चे आई.आई.टी. के लिये चुन लिए जाने के बाद भी मैंने भीतर के शिक्षक को गुम होने नहीं दिया और इसी का परिणाम था कि सुपर 30 कार्यक्रम को हाथ में लिया।

सुपर 30 कार्यक्रम ग्रामीण बिहार से वंचित परिवारों के 30 चुनिंदा बच्चों को आई.आई.टी. में प्रवेश की मुफ्त की कोचिंग देने का है। 2002 में अभयानंद ने गणितज्ञ एवं शिक्षक आनंदकुमार के साथ मिलकर सुपर 30 का कार्यक्रम प्रारंभ किया। 2003 में इसके पहले ही बैच में 30 में से 18 बच्चे देश के सर्वोच्च प्रौद्योगिकी संस्थानों में प्रवेश पाने में सफल रहे। सफलता की दर प्रत्येक वर्ष बढ़ती चली गई और यहां से 2004 में बच्चे और उसके अगले साल 22 बच्चे आई.आई.टी. में पहुंचे। 2006 में प्रवेश-परीक्षा पार करनेवालों की संख्या 26 थी जो 2007 में बढ़कर 28 हो गई। सफलता की इस उंचाई से उत्साहित अभयानंद इसे सुपर 500 तक ले जाना चाहते हैं।

वे इस सफलता के पीछे रहस्य को उद्घाटित करते हुए कहते हैं कि सुपर 30 कार्यक्रम के शिक्षक कोई भी चीज अटकलों पर नहीं छोड़ते। वे प्रत्येक विषय को इसकी गहराई एवं विस्तार के साथ बताते हैं। शिक्षक सर्वप्रथम छात्र के आत्मविश्वास को जगाकर उसकी क्षमता को निखारते हैं। कड़ी मेहनत इस सफलता का राज एवं रहस्य हैं। सुपर 30 कार्यक्रम उन सभी के लिए एक अविश्वासनीय एवं हैरतभरा था, जो यह मानते थे कि इस कठोर प्रवेश-परीक्षा में सफल केवल वे ही हो सकते हैं, जो महंगी आई.आई.टी. कोचिंग का खर्च वहन कर सकते है, परन्तु लगन, निष्ठा, त्याग और मेहनत से असंभव कार्य को भी संभव करके दिखाया-बनाया जा सकता है। अभयानंद प्राचीन गुरु-शिष्य परंपरा को पुनर्जीवित करना चाहते है और उनका यह कार्यक्रम एवं इसकी

सफलता इसकी ज्वलंत मिसाल है। गरीब परिवार के बच्चे सरकारी स्कूल में तो प्रवेश पा जाते हैं परन्तु घुमंतू खेतिहर मजदूरों के बच्चे इस लाभ से वंचित रह जाते है क्योंकि इनका घर कोई एक जगह नहीं होता। ऐसे लाखों घुमंतू परिवार नेशनल सैंपल सर्वे के दायरे में भी नहीं आते। इनमें से कोई भी परिवार एक स्थान पर कुछ महीने से अधिक नहीं रहता। इन बच्चों की शिक्षा के बारे में कोई नहीं सोचता, परन्तु प्रवीण महाजन एक ऐसे शख्स है जो इनके बारे में सोचते हैं। वे सोचते ही नहीं, बल्कि उन्होंने इन मौसमी प्रवासियों के बच्चों के लिए शिक्षा के नए और वैकल्पिक समाधान भी ढूंढ निकाले हैं।

प्रवीण महाजन द्वारा संस्थापित महाराष्ट्र में काम कर रहा एक गैरलाभकारी संगठन ''जनार्थ'' है। इस संगठन का उद्देश्य है प्रवासी मजदूरों के बच्चों को शिक्षा देना। यह अपने उद्देश्य में पूरी तरह से सफल है। प्रवीण का आदर्श है वह आम आदमी, जो जानता है कि उसे खेत में काम करने के लिए दो हाथ और मिलेंगे, परन्तु इसके बावजूद वह अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा देना चाहता है। यही वजह है कि इस संगठन के माध्यम से हजारों घुमंतू कामगारों के बच्चे पढ़-लिख पा रहे हैं और काम की नई जानकारी समझ रहे है। आंकड़ों के आइने में देखें तो इस पुनीत कार्य की सफलता कितनी अधिक है। महाराष्ट्र में साढ़े छह लाख परिवारों के दो लाख बच्चे सहकारी चीनी मिलों में छोटा-मोटा काम करते नजर आते हैं। चूंकि गन्ने की कटाई का मौसम अप्रेल में शुरु हो जाता है और यही समय शिक्षा सत्र की शुरुआत का भी होता है। इसी कारण इन परिवारों के बच्चे शिक्षा से बहुत दूर अछूते रह जाते हैं।

सन् 2000 में ''जनार्थ'' ने इन नन्हें बच्चों के हाथों में कलम एवं कापी थमा दी। ''जनार्थ'' द्वारा पहली साखर (शक्कर) शाला नगर जिले के भुला गन्ना कारखाने में प्रारंभ हुई। यह अब प्रवासी खेतिहर मजदूरों के बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराती है। महाराष्ट्र में 39 चीनी मिलों में ''जनार्थ'' की 126 साखर शालाओं में 15 हजार बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। बच्चों की उचित देख-रेख करने के लिए ''जनार्थ'' ने उनके मूल गांव में हॉस्टल भी बनवाए हैं। इन हॉस्टल का एक उद्देश्य यह भी है कि जब उनके माता-पिता काम के लिए बाहर जाएं तो वे यहां रहकर अपनी पढ़ाई पूरी कर सकें। ये शिक्षा संस्थान बच्चों को पहली कक्षा से लेकर सातवें दरजे तक मौखिक शिक्षा देते हैं। चीनी मिलें स्कूल के लिए जमीन आवंटन करती है और अन्य अनेक सहयोग करती हैं। स्कूल मिल के पास ही बने होते हैं, जिससे माता-पिता मनचाहे तब अपनी संतान को देख और मिल सकें। प्रवीण महाजन का यह साक्षर अभियान किसी भी महान कार्य से कम नहीं है। ज्ञानदान सर्वश्रेष्ठ दान माना जाता है और वह भी जब ऐसे बच्चों को दिया जाता है, जिनके पढ़ने के आसार ही नहीं होते। समाज में ऐसे अनेक कार्य है जिन्हें निस्वार्थ भाव से करने की आवश्यकता है। इनमें साक्षरता अभियान अग्रणी है। महाजन ने अदृश्य जनसंख्या की इन समस्याओं को खोजा और उनके समाधान में अपना सर्वस्व खपा दिया। इसी का परिणाम है कि 15 हजार बच्चे निःशुल्क शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। अन्य ऐसे संगठनों को आगे आकर इनका सहयोग करना चाहिये। अपने देश में 40 फीसदी बच्चे पांचवीं कक्षा में पहुंचने से पहले ही पढ़ाई छोड़ देते हैं। ऐसे में प्राथमिक शिक्षा को देशभर में सुलभ बनाना सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए माधव चव्हाण और फरीदा लांबे ने 1994 में यूनीसेफ के बांबे एजूकेशनल इनिशिएटिव की गठित संस्था ''प्रथम'' को प्रारंभ किया था। शुरुआत में 2 लाख रुपये के बजट एवं 25-25 बच्चे वाले 100 केन्द्रों को खोला गया था, किंतु प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने का उद्देश्य लेकर प्रारंभ करने वाले इन संस्थापकों ने कभी सोचा भी नहीं था कि 14 साल बाद यह स्वयंसेवी संगठन पूरे देश में शुरु हो जाएगा और 19 राज्यों के 370 जिलों में 1.7 करोड़ बच्चों को नई जिंदगी देगा- बचपन के सपनों को संवारेगा।

यह संस्था बालवाड़ी स्थापित करती है और किसी चाल की बालकनी, मंदिर परिसर में, पेड़ के नीचे, कहीं भी चल सकती है। शिक्षक स्वयंसेवी एवं सहयोगी मानसिकता के होते हैं। उन्हें कुछ आर्थिक सहायता देकर बच्चों की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। ''प्रथम'' के शोध एवं प्रोग्रामिंग की निदेशक रुक्मिणी बनर्जी का कहना है कि हमारे पास 1994 में 100 बालबाड़ियां थी, जिनकी संख्या तीन साल बाद ही 3200 हो गई अर्थात् इस समय मुंबई की हर मलिन बस्ती में एक बालबाड़ी है। इस संस्था ने बहुत से बाल मजदूरों को भी मुक्त कराया है। मुंबई में ऐसे बच्चों की संख्या 31 हजार से घटकर 7 हजार रह गई है।

यह इस संस्था की अपार सफलता की कहानी है। इस प्रकार जिनके दिल शिक्षा और साक्षरता के प्रति सहज भाव से धड़कते हों, वे आगे आएं और इनके प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत करें। निस्वार्थ भाव से एवं अहंकाररहित सेवा-कार्य करने से इसका वांछित परिणाम अवश्य आता है। हर शिक्षित युवा एक को साक्षर करने का संकल्प ले तो कुछ ही वर्षों में हम सुदूर गांवों एवं बस्तियों में बसे लोगों को शिक्षित कर समय की मुख्य धारा में ला सकते हैं, परन्तु यह कार्य सम्पन्न हो सकता है केवल त्याग, बलिदान एवं समर्पित भावना से। यही सबसे बड़ा यज्ञ है और इस यज्ञ में भागीदारी निभाकर अकूत पुण्य अर्जन से स्वयं को वंचित नहीं करना चाहिये। हिम्मत, साहस और जज्बे से ही यह कार्य किया जा सकता है।

ओल्ड इज गोल्ड- घरेलु नुस्खे.... ✻ पू.मुनिश्री नमिरत्नसागर म.

आज आयुर्वेद एवं पुरानी औषधियों को पुरानी वस्तु कहकर नकार देते है और आधुनिक मंहगा इलाज करवाते है। अंग्रेजी दवाओं से कई बार रिएक्शन (Raetion) होता है और कई नई बीमारियां हो जाती है। एक बार अंग्रेजी दवाओं का उपयोग करने पर उनकी आदत पड़ जाती है और जीवन भर नहीं छूटती है। कई जांच कराने पर भ्रम होता है और बार-बार महंगी जांच कराने पर बहुत खर्च होता है, कहते है कि ''सोने से घड़ावन महंगी होती है।'' जबकि आयुर्वेदाचार्य से जांच कराने पर तुरन्त बीमारी पकड़ने में आ जाती है और इलाज शुरु हो जाता है, थोड़ा धीरज रखने की जरुरत होती है और बीमारी खत्म हो जाती है। कोरोना में भी आयुर्वेद के काढ़ें और दवाओं से इलाज कराने पर Anit Biqtic शक्ति मिलती है और वैद्यजी पर विश्वास बढ़ता है क्योंकि वे अच्छा होने का आश्वासन देते है, अच्छा अनुपात भी देते है। अंग्रेजी हिंसक दवाओं से ऊन, अबोल एवं असहाय प्राणियों की बददुआ भी हमें मिलती है और पाप भी लगता है जबकि औषधियां पैदा करनेवाले बेचनेवाले तथा वैद्य लोग आदि दुआएं करते है, प्रार्थना करते है, आर्शीवाद भी देते है, वे धर्म अनुष्ठान करते है एवं शुभ भावनाएं रखते है। औषधियों से मनुष्य प्राणियों के विचार भी शुद्ध होते है उनमें दयालुता आती है, सहयोग की भावना और दूसरों के प्रति समभाव सहिष्णुता, आत्मियता एवं परोपकार एवं समदृष्टि एवं परोपकार की भावना जागृत होती है।

यहां कुछ नुस्खे दिये गये है पाठकगण उनको समझकर उपयोग करें व अपनी आनी पीढ़ी को भी आश्वस्त करें, लाभ लें। योगासन, प्राणायम, ध्यान करें, पुस्तकें पढ़ें, तप त्याग करें।

✻ उल्टी में गरम पानी में नींबू, धनिया व पुदीने का रस बार-बार दें।

✻ छोटी ईलायची गले के खराश में आराम देती है।

✻ उल्टी में बच्चे को अनार का रस गरम कर दें।

✻ पक्के केले की सब्जी अपच दूर करती है।

✻ 5-7 चीकू एक साथ खाने से बेजान शरीर में जान आयेगी, शक्ति आएगी

✻ ककड़ी, सेब, छिलके सहित तरबूज एसीटीडी में व कब्जे में फायदा करता है।

✻ एम.9 एम. दाल-चीनी एक चमत्कारी औषध है, गठीया में गर्म पानी व चासनी के साथ दें। मूत्ररोग, दांत दर्द में लगाये। जुखाम, खांसी, साइनस में पीयें। पेटगैस, अपच, सांस में बदबू, धूम्रपान छुड़ाना, कोलेस्ट्रे राल, हार्ट अटैक दीर्घायु, कैंसर, मोटापा कम करना, श्रवण शक्ति में, मुंहासा, चर्मरोग, दाद, खाज, डायबिटिज में।

✻ नींबू का शरबत लेने से कब्ज दूर होती है, आधा नींबू में सूंठ, काला नमक, कालीमिर्ची डालकर गरम कर चूसें भूख लगेगी, पाचन ठीक होगा।

✻ सिरदर्द, गर्मी में , मुंह में छालों में सौंफ-शक्कर का पावडर डालें।

✻ बार-बार पेशाब आने पर आंवले का रस या काले तिल, अजवान चबायें।

✻ सेवफल का रस लेने पर पत्थरी निकल जाती है।

✻ बुखार में ठंड लगने पर हाथ, पैर के तलवे पर सूंठ कायफल घिसना।

✻ अजीर्ण में छाछ में, सेंधा नमक, काली मिर्च, पीसा सिका जीरा लेना।

✻ हैजे में नीम की पत्ती पीसकर खाना।

✻ पेट दर्द व गैस में अजवायन या लौंग चूर्ण पानी से लेना।

✻ गैसवालों को भोजन के बाद जामफल, पपीता लेना।

✻ गरम पानी में फिटकरी और नमक डालकर कुल्ला करने से टांसिल, खराश, कफ, दांत दर्द दूर होता है।

✻ अरंडी का तेल और कपूर सुबह-शाम मसूड़ों पर मालीस करने से पायरिया दूर होता है।

✻ 3-4 महिने तक ईसबगोल सुबह-शाम लेने से श्वास संबंधी रोग दूर होता है।

✻ उच्च रक्त चाप में आधा नींबू रस दिन में 4-5 बार लेना।

✻ गुड़ और घी खाने से हृदय की शक्ति में वृद्धि होती है।

✻ हृदय रोग, हाईब्लड प्रेशर, मोटापा तथा गुर्दे की बीमारी में दही फायदा करता है।

✻ गरम पानी में हींग डाल गरारा करने से बैठा हुआ गला ठीक होता है।

उपासना-पर्युपासना, साधना-स्वाध्याय का निहीतार्थ

✱ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

उपासना भक्ति का एक अंग है। वर्तमान में उपासना शब्द का प्रयोग भक्ति के पर्यायवाची शब्द के रुप में किया जाता है। आगम में परिउपसर्ग पूर्वक उपासना शब्द प्रयुक्त है अर्थात् पर्युपासना, जिसका तात्पर्य है-अपनी समस्त वृत्तियों को केन्द्रीत करके जिनदेव या श्रमण के पास जिज्ञासु बुद्धि से बैठना।

उपासना सरल और साधना कठिन है, कुछ जैन मुनियों का ऐसा ही प्रतिपादन है। उपासना में वृत्तियों सहज मुड़ जाती है और साधना में वृत्तियों को मोड़ने का श्रम करना पड़ता है। आगमानुसार उपासना साधना से पृथक न होकर एक अंग ही है। उपासना को साधना से नहीं जोड़ा जाय तो उपासक भटक जायेगा। आत्म-स्वरुप रुप साध्य की सिद्धि के लिये जो भी निरविद्य क्रियाएँ भाव से युक्त की जाती है, वे सभी साधना कहलाती है। इस तरह आराधनात्रय और पंचाचार का पालन साधना है। उपासना साधना का एक अनिवार्य अंग होने के बाद भी वह साधना का विकल्प नहीं है। उसे साधना से प्रथक करना भावकुता का अतिरेक है।

पर्युपासना साक्षातरुप से विद्यमान तीर्थंकर भगवान और श्रमण की ही होती है जबकि उपासना परोक्ष परमात्मा की ही की जाती है। पर्युपासना का फल श्रवण, ज्ञान आदि है और उपासना का फल दर्शन विशुद्धि, बोधिलाभ आदि है। पर्युपासना में भक्तिपूर्वक जिनवाणी का श्रवण ही प्रमुख है, जबकि उपासना वंदन, स्तुति, नमस्कार ध्यान आदि अनेक क्रियाएं संग्रहित है।

जिनागमों और उनसे सम्बद्ध विषयों का साहित्य पढ़ना-पढ़ाना और चिंतन करना ही स्वाध्याय है। स्वाध्याय सद्‌भावों को पुष्ट करते हुए आत्मबल में अभिवृद्धि करता है। मुमुक्षु आत्मा के संवेगादि भावों की पुष्टि स्वाध्याय से होती है। स्वाध्याय बारह तपों में दसवां तप है। इससे श्रुतधर्म की आराधना होती है। स्वाध्याय मुमुक्षु भाव को उत्पन्न करता है, चारित्र में रमणता होती है, शासन-परम्परा चलती है और स्वाध्याय बन्धनों का क्षय करके अनंतज्ञान को प्राप्त करवाना है। द्वादशांगी गतिपिटक की वाचना आर्य श्रीसुधर्मास्वामी ने प्रदान की और जिसका स्वाध्याय करते हुए आर्य जम्बूस्वामी ने केवल लक्ष्मी प्राप्त की।

आत्मा और शरीर

जिस प्रकार म्यान में रहने वाली तलवार म्यान से अलग है उसी प्रकार शरीर में रहनेवाली आत्मा शरीर से भिन्न है। आत्मा अलग है, शरीर अलग है, आत्मा चेतन, ज्ञान रुप है। शरीर जड़, ज्ञान शून्य है। आत्मा अमूर्तिक है, शरीर मूर्तिमान है। आत्मा जीव (जानदार) शरीर अजीव (बेजानदार) है। आत्मा स्वाधीन है और शरीर इन्द्रियों द्वारा पराधीन है। आत्मा निज है, शरीर पर है, आत्मा राग-द्वेष, क्रोध-मान, भय-खेद रहित है। शरीर को सर्दी, भूख-प्यास आदि हजारों दुःख लगे हैं। इस जन्म से पहले भी यही आत्मा थी और इस जन्म के बाद नरक, स्वर्ग, अर्हत् अथवा मोक्ष प्राप्त करने पर भी यही आत्मा रहेगी। आत्मा नित्य है, शरीर नष्ट होने वाला है, आत्मा के चोला बदलने पर यह शरीर यहीं पड़ा रह जाता है। जिस प्रकार किरायेदार का किराये के मकान से मोह नहीं होता, उसी प्रकार जीव को शरीर का दास न बनकर शरीर से जप-तप करके अपनी आत्मा की मलीनता दूर करके शुद्धचित्त रुप होना ही उचित है।

✱ अध्यात्म के प्रति अधिक रुचि देखकर पिता ने अपने युवा पुत्र एरिट्रायस को प्रसिद्ध दार्शनिक जीनों के पास, शिक्षण हेतु भेजना शुरु कर दिया। एक बार एरिट्रायस शाम को घर लौटा तो पिता ने स्वाभाविक रुप से पूछा- बेटे! आज तुम क्या सीखकर आए? पुत्र ने उत्तर दिया-''यह आपको बाद में ज्ञात हो जाएगा।''

पिता को यह सहन न हुआ। उन्होंने गुस्से में अपने युवा पुत्र की बड़ी बुरी तरह पिटाई की। वह बराबर का बेटा चुपचाप पिटता रहा, यदि चाहता तो कोई ऊट-पटांग उत्तर दे सकता था। या यही कहता- पिताजी! निर्दोष बेटे पर हाथ उठाने का अधिकार आपको किसने दिया? या गाली-गलौज करके घर से निकलने अथवा आत्महत्या करने की धमकी देता, पर उसने ऐसा कुछ भी तो नहीं किया। बाद में धीरे से बोला- ''पिताजी! आपके क्रोध को चुपचाप सहन करना ही आज मेरे गुरु ने सिखाया है।''

हे आयुष्मन्

* साध्वी जतनकुमारी (कनिष्ठा)

आयुष्मन् ! हमारे जीवन का लक्ष्य है ज्ञान, दर्शन, चारित्र की त्रिपथगा में स्नात होकर अर्हता के चरम बिन्दु पर पहुंचना ! जहां पहुंचने के बाद जन्म की पीड़ा, मृत्यु की पीड़ा, रोग की पीड़ा, शोक की पीड़ा समाप्त हो जाती है। अर्हता की उपलब्धि के बाद अनन्त आकांक्षाओं का अन्त हो जाता है और अन्तहीन आनन्द की अनुभूति होती है।

अर्हता का आरंभ अहिंसा, अभय और अनन्त करुणा से होता है और पूर्णता भी अहिंसा, अभय, करुणा में। अहिंसा की आराधना के लिए अष्ट प्रवचन माता की अनुपालना जरुरी है। पांच समितियां संयम का प्रवृत्ति मार्ग है। तीन गुप्तियां संयम का निवृत्ति-मार्ग हैं।

पांच समितियां-ईर्या-शोधक, भाषा शोधक, भोजन विशोधक, ग्रहण-विसर्जन और परिष्ठापन-परिशोधक है तथा गुप्तियां मन-वाणी कायिक-प्रवृत्ति निरोधक हैं।

आयुष्मन् ! कर्म हमारे बोए हुए बीजों का उत्तर है। सत्-असत् प्रयत्नों का प्रतिफल है। आदमी जैसा बीज बोता है, वैसा ही फल आता है। कपास के बीज में जैसा रंग दिया जाता है वैसा ही फल आ जाता है।

व्यक्ति अनचाही राहों की तरह अनन्त जन्मों के प्रिय-अप्रिय संबंधों को विस्मयभरी नजरों को निहारता है किन्तु कर्म अपने कर्त्ता को नहीं भूलता, ''कत्तारमेव अणुजाइ काम्सं'' अनिमिष-ध्यान-मुद्रा स्थिति योगी की एक पुद्गल स्थिति दृष्टि रहती है उसी प्रकार कर्म की दृष्टि कर्त्ता पर।

कर्म क्रिया की प्रतिक्रिया है। इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। आकृष्ट कर्म पुद्गल आत्मा के परिपार्श्व में अपने विशिष्ट रुप और निर्माण करते हैं, प्रतिक्रिया के बाद ही मुक्ति हो सकती है। यह कर्मवाद का ध्रुव सिद्धांत है।

कृत कर्मों की मुक्ति दो प्रकार से होती है-

1- स्थिति परिपाकः- फल पाक के बाद कृत कर्म स्वतः आत्मा से विलग हो जाते हैं।

2- उदीरीति (उदीरणा):- तपस्या आदि के द्वारा स्थिति परिपाक से पूर्व भोग में लाकर भोगा जाता है।

आयुष्मन् ! ''अट्ठविह कम्मगंढ़ी'' जैनागमों में कर्म के साथ ग्रंथी शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह बहुत महत्वपूर्ण प्रयोग है। कर्म होना अलग बात है और ग्रंथी होना अलग ! कर्म का मतलब प्रवृत्ति है। वह तेरहवें गुणस्थान तक चलती है पर वहां ग्रंथीपात नहीं होता मात्र आत्मा के साथ कर्म पुद्गलों का स्पर्श और शोधन होता है।

जब कर्म के साथ राग द्वेषात्मक प्रवृत्ति जुड़ जाती है तब वहां बंधन दीर्घकालीन और दीर्घ विपाकी होता है। रागद्वेषात्मक बंधन नवम गुणस्थान तक होता है, उदय सत्ता ग्यारहवें गुणस्थान तक रहती है। वीतराग आत्मा के मोहात्मक ग्रंथी का उपशम क्षय हो जाता है अतः वहां कर्म शेष रहने पर ग्रंथी शेष नहीं रहती। जैन दर्शन अनुसार कर्म ग्रंथियों का हेतु कषाय है- क्रोध, मान, माया, लोभ।

शरीर विज्ञान के अनुसार कैंसर, टीबी, थाइराइड जैसी ग्रंथियों का निमित्त बीज क्रोध, लोभ, आकांक्षा, स्पर्धा, ईर्ष्या और मात्सर्य माना गया है।

ग्रंथी शरीर को जर्जरित, पीड़ित, त्रसित करती है, वैसे ही यह कर्म-ग्रंथी जन्म, मृत्यु, रोग, शोक संताप से आत्मा को बेचैन करती है। ग्रंथी विमोचन के लिए त्रिसूत्री साधना अनिवार्य है-

1- आत्म विमोचन, 2- स्वतः सूचना, 3- निर्जरण।

आत्म विश्लेषण कर्म ग्रंथी को सुलझाता है, निर्देशन ग्रंथी को खोलता है और निरसन ग्रंथी को तोड़ता है।

आयुष्मन् ! वीतराग का दर्शन अत्यन्त सूक्ष्म, सूक्ष्मतर सूक्ष्मतम है और समुद्र से भी गहनतम है।

यह अनन्त चक्षु वीतराग का दर्शन सर्वभूत क्षेमंकर, अभयंकर एवं करुणा से ओतप्रोत है। परम हित की भावना से ओतप्राणित है। इसमें किसी भी प्रकार का पक्षपात नहीं है।

अहिंसा प्रतिष्ठित है यह दर्शन। इसमें प्राणीमात्र को मुक्त जीवन जीने का अधिकार है। लिंग, वर्ण, जाति, समाज देश और राष्ट्र का भेद नहीं है। निर्धन धानिक का कोई विभेद नहीं है।

क्षुद्र प्राणियों की अवगणना व अवमानना नहीं है। उत्पीड़न शोषण व संत्रास को कहीं भी स्थान नहीं है।

अतीत, अनागत और वर्तमान के सभी अर्हतों ने अहिंसा की अर्हता का उपदेश दिया है- कोई भी प्राणी जग का हन्तव्य नहीं है। अनुशास्य नहीं है, परिग्राह्य नहीं है और परितापनीय नहीं है।

आयुष्मन् ! अर्हतों ने भाव अहिंसा की अर्हता का बहुत सूक्ष्मता से विश्लेषण किया है। द्रव्य अहिंसा का संबंध कायिक एवं वाचिक प्रवृत्ति से है और भाव अहिंसा का मानसिक प्रवृत्ति से। भाव अहिंसा से आत्म-शुद्धि होती है। द्रव्य अहिंसा के साथ आत्म-शुद्धि की नियामकता नहीं। जहां-जहां भाव

अहिंसा है। वहां-वहां आत्मशुद्ध है और जहां-जहां आत्म शुद्धि है वहां-वहां भाव अहिंसा है। भाव अहिंसा कामना विरहित होती है। उसमें प्राप्ति और प्रदर्शन की बात ही समाप्त हो जाती है।

भाव हिंसा से तात्पर्य है असंयत प्रमत्त प्रवृत्ति और द्रव्य हिंसा से तात्पर्य है किसी भी प्राणी के प्राणों का वियोजन। शास्त्रकारों ने प्रमत्त साधक और अप्रमत्त साधक के आधार पर आत्मारंभी और अनारंभी की चर्चा की है।

''तत्थणं जेते अपमत्त संजयातेणं
णो आयारंभा णो परारंभाणो तदुभयारंभा''

अप्रमत्त साधक द्वारा द्रव्य हिंसा होने पर भी वह हिंसक नहीं होता। हिंसा-दोष से लिप्त नहीं होता।

आयुष्मन्! ''दुहओछित्तानियाइ'' द्वन्द्व उपरति ही निवृत्ति है। वास्तविक सुख है। शान्ति है। द्वन्द्व से जन्म का चक्र चलता है और समस्त प्रवृत्तियों का उद्भव होता है।

सुख-दुःख का द्वन्द्व, हर्ष-शोक का द्वन्द्व जीवन-मृत्यु का द्वन्द्व, निर्धन-धनिक का द्वन्द्व, राग-द्वेष का द्वन्द्व जड़-चेतन का द्वन्द्व, जब तक द्वन्द्व है तब तक संसार है और जन्म मृत्यु भी इसलिए द्वन्द्वजीत अवस्था की ओर प्रस्थान की प्रेरणा दी जाती है। **''द्वन्द्व हीन निर्बन्ध चेतना, मोक्ष सिद्धि अपर्वग उदार''**

द्वन्द्व मुक्त होने की साधना का पहला द्वार है- एकत्व अनुप्रेक्षा का अभ्यास। समूह में रहते हुए भी आर्य भिक्षु के शब्दों में **''गण में रहे निरदाव अकेलो''** की साधना करना!

द्वन्द्व में निर्द्वन्द्व साधना का रहस्यात्मक सूत्र जिसके हाथ लग गया, वह संयोग वियोग की पीड़ा से मुक्त हो गया।

आयुष्मन्! अप्रतिबद्धता की साधना की एकान्त हित की साधना है। यही अमरत्व की आराधना है। इसी के सुसाध्य है ''सत्यं शिवं सुन्दरं'' की समुपासना। प्रतिबद्धता ही अनन्त-अनन्त जन्मों के अनुबंधों संबंधों को जोड़ेरखती है। प्रतिबद्धता से तात्पर्य है- पदार्थ-निष्ठ चेतना। किसी विशेष वस्तु या व्यक्ति से आबद्ध चेतना। इच्छित पदार्थ में आनंदित और अनिच्छित में दुःखित। अध्यात्म जगत में प्रतिबद्धता की वर्जना है। साधक और प्रतिबंध, प्रतिबंध और साधक, ये दोनों बातें एक साथ निभ सकती। साधकता और प्रतिबंधता एक दूसरे के विरोधी तत्व है। भगवान महावीर के जीवन में जो अद्भूत क्रांति घटित हुई उसका एकमात्र निमित्त है ''अपडिन्ने'' की साधना।

भक्ति....

''भक्तिः भागवती बीजं परमानन्दसम्पदाम्'' ऐसा कहने वाले उपाध्याय यशोविजयजी से लेकर **''भूतल भक्ति पदारथ मोटुं''** ऐसा कहनेवाला वह नरसैया या ''मारे तो एक गिरधर गोपाल'' ऐसा गानेवाली मीरां- सभी ने एक ही आवाज से भक्ति की महिमा गाई है।

परन्तु लाख रुपये का सवाल यह है कि- भक्ति करनी कैसे? क्या सबके लिये भक्ति की एक ही पद्धति है? नहीं.... भक्ति की अलग-अलग पद्धतियां है। पद्धतिओं का कारण भक्ति नहीं, लेकिन भक्त की विविध कक्षाएं है। आखिर तो भक्त को भगवान में मिल जाना है, स्फुलिंग को महाज्योति में लीन बनना है इसमें सभी एकमत, लेकिन अपनी योग्यता अनुसार उनके लिए अलग-अलग पद्धतियां है।

किसी की देहभाव में आत्मदृष्टि होती है, किसी की आत्मा में आत्मदृष्टि होती है और किसी की आत्मा में परमात्म दृष्टि होती है। कक्षा भेद से भक्ति में भी भेद रहता है।

अधिकतर जीव में देह में आत्मदृष्टिवाले होते हैं।

जहां तक शरीर में आत्मभाव है वहां तक भगवान की भक्ति दासरुप से करनी चाहिये। ''प्रभु! तू मेरा स्वामी, मैं तेरा सेवक'' यही भक्तिों का उद्गार होना चाहिये : दासोहम्।

भक्तिरुपी मंदिर का प्रथम सोपान है : दासोहम्। प्रभु! मैं तेरा दास हूं, परन्तु आगे बढ़ते-बढ़ते देहभाव विलीन हो जाय और आत्मा में आत्मदृष्टि आ जाय उस समय जगत के सभी जीवों में भी अपने जैसी ही आत्मा दिखाई देती है। अब तक दूसरे जीव अलग दिखाई दे रहे थे अब वे एक दिखाई दे रहे है। कुंआ और नदी पहले अलग थे लेकिन जोरदार वर्षा होने पर चारों ओर पानी भर जाने से कौन सी नदी? कौन सा कुआ? सब समान! ऐसी कक्षा प्राप्त होते ही प्रभु-भक्ति सख्यभाव से की जाती है। क्योंकि ऐसा साधक देख रहा है कि मैं भी प्रभु का एक अंश हूं! प्रभु अगर शतदल कमल है तो मैं भी उसकी एक पंखुड़ी हूं।

आगे बढ़ते बढ़ते आत्मा जब शुद्ध बन जाती है तब साधक समानभाव से भक्ति करता है, क्योंकि अब वह अनुभव कर रहा है कि प्रभु वहीं मैं हूं! सोहम् ''दासोहम्'' में से दा गया। ऐसा साधक ऋषि ही यह घोषणा करने के लिये हकदार बनता है : अहं ब्रह्मस्मि।

पुण्य के कारण प्राप्त सामग्री के सदुपयोग में ही बुद्धिमता है

अंधेड़ उम्र में तीस वर्ष तक आँखों की रौशनी जिन्होंने खो दी थी ऐसे उच्च विचारोंवाले पूजनीय पुरुष के शब्द याद आ जाते हैं। उनसे अगर कोई पूछें- ''दृष्टि चली गई तो आपको कितनी कठिनाईयों का सामाना करना पड़ता होगा!'' यह तो कितना दारुण संकट आप पर आ पड़ा है! उत्तर में पूज्य महानुभाव कहते- भले आदमी! मेरी स्थिति दयनीय कहां है ? पहले जब दिखाई देता था तब न देखने लायक अनेक वस्तुएं दिखाई देती थी। अब जब ये चर्मचक्षु बंद हो गये हैं तब सद्गुणों को देखने का द्वार भीतर में खुल गया है।

यह समझने योग्य बात है। धन संपत्ति से या पुण्यषक्त से प्राप्त सामग्री का उपयोग सद्गुण प्राप्ति तथा उसके विकास के लिये ही करते रहना चाहिये।

अब हम सोचें कि अनंत करुणानिधान परमात्मा के पास हम मांगते हैं कि हमारे दुःख दूर हों। परन्तु इस मांग के स्थान पर इन दुःखों को समाधिपूर्वक सहन करने की शक्ति की मांग कहीं अधिक श्रेयस्कर और अधिक अच्छी नहीं होगी ? होगी ही। सुख की साधन सामग्री की मांग के स्थान पर उसके सदुपयोग की भावना और संभावना हमें प्राप्त हो ऐसी प्रभु प्रार्थना कहीं अधिक बेहतर नहीं होगी ?

स्मरण रहे....

✻ पैसों से मनुष्य ऐनक-चश्मा खरीद सकता है, टीवी खरीद सकता है.... परन्तु....

✻ अच्छा देखनेवाली दृष्टि पुण्यबल से ही प्राप्त हो सकत है।

परन्तु विजातीय व्यक्ति के रुप-रंग देखने के लिये टीवी, सिनेमा के अश्लील दृश्य देखने के लिये ही अगर इन आँखों का उपयोग किया जाय तो लाभ नहीं, हानि ही होगी। सभी पोद्गलिक प्राप्ति के विषय में इसी प्रकार का चिंतन करके, उस प्राप्ति के सदुपयोग का आरंभ कर देने में ही बुद्धिमानी समझनी चाहिये।

जिज्ञासा-विवेक

उपा. यशोविजयजी कहते है कि- जिज्ञासा और विवेक से ममता का नाश होता है। जिज्ञासा च विवेकश्च, ममता नाशका वुभौ। जिज्ञासा और विवेक में भी मुख्य जिज्ञासा है। जिज्ञासा आते ही आसानी से विवेक आ जाता है। आज हमारी जिज्ञासावृत्ति ही शायद खत्म हो गई है। अगर होगी तो भी बाहर का जानने की जिज्ञासा होगी। किशोर युवानों को क्रिकेट आदि की जिज्ञासा है। बड़ों को राजकारण और व्यापार आदि की जिज्ञासा है परन्तु धर्म की जिज्ञासा किनको है ? यद्यपि कितनेक भाग्यशालीओं को धर्म की जिज्ञासा होती है, परन्तु इसमें भी अपने कल्याण के लिए धर्म जानने की इच्छावाले कितने ? ज्यादातर लोग धर्म समझने के लिए आते है वे अपने लिये नहीं, दूसरों को समझाने में लगे, इसलिये समझने के लिये आते हैं। वे सुनते है तो दूसरों को समझाने के लिये, जानते है तो दूसरों को बताने के लिये, वक्ताओं को सुनते है स्वयं वक्ता बनने के लिए!

....तो यह भी वास्तविक धर्म जिज्ञासा नहीं है। धर्म के माध्यम से यहां पर भी अहंकार का ही पोषण हुआ! मोहराजा बहुत चालाक है वह ऊपर से सीखाता है- देख.... यहां तो धर्मस्थान है, यहां तो तू जो भी करेगा वह धर्म ही गिना जायेगा। बेचारा जीव! धर्म के नाम से अहंकार का ही पोषण करता है। ऐसी गलत जिज्ञासा, दूसरों को बताने के लिए इच्छा करना वह ममता-नाशक तो नहीं बनती है, लेकिन ममता-वर्धक बनती है। यहां साधक को सावधान होना चाहिये।

ब्राह्मण पुत्र ब्रह्मचर्याश्रम की अवधि पूरी कर घर लौटा। आंगन में बैठी माँ को प्रणाम किया। पूछा- पिताजी कहां है। ब्रह्मचारी अंदर गया। कहीं न मिले। पीछे का दरवाजा अवश्य खुला था। परिवार वाले चिंतित हो गये। सभी ने खोज-बीन की। एक वर्ष बीतते ही पिता आ गये। उनका चेहरा तेजोमय हो रहा था। पुत्र ने पूछा-पिताजी! आप कहां चले गये थे। पिता ने कहा- ''जब तुम गुरु के पास से आकर माँ को प्रणाम कर रहे थे तब मैंने तुम्हारे तपस्या से जगमगाते चेहरे- दीप्त ललाट को देखा। उसी क्षण मैंने अपने आप को टटोला। मैं तुम्हारे प्रणाम को लेने योग्य नहीं था, अत: मैं भी आरण्यक प्रस्थान कर गया। जब मुझमें एक तपस्वी से प्रणाम कराने की पात्रता आ गई तो मैं आ गया हूं।'' प्रणाम लेने का अधिकार उसी को है, जो कि प्रणाम करने वाले से अधिक योग्य, तपस्वी व श्रेष्ठ हो।

शाकाहार प्राकृतिक भोजन है

मानवीय आकृति व प्रकृति शाकाहार के अनुकूल ही बनी हुई है, भारत में सभी ऋषि महर्षि व संतों ने शाकाहार की प्रेरणा दी है व मांसाहार का निषेध भी किया है। अन्य शाकाहार प्राणी भी ताकतवर व स्वस्थ होते है जैसे हाथी, घोड़ा, बैल, ऊंट आदि पूर्णतया शाकाहारी है। जो कभी अन्य प्राणी का भक्षण नहीं करते वैसे मानव का कोमल शरीर, जीभ व मोती से छोटे दांत मांसाहार के अनुकूल नहीं है यहां तक कि मांसाहार से कई बीमारियों की उत्पत्ति होने की बात डॉक्टरों द्वारा कहीं जाती है।

विदेशों में जहां मांसाहार का ही अधिक प्रचलन था वहां भी शाकाहार के प्रति अभिरुचि बढ़ने लगी। इग्लैंड के जार्ज बर्नाड शा को एक सामूहिक भोज समारोह में जब मांसाहार युक्त भोजन परोसा गया तो वे तत्काल यह कहते हुए उठ गये कि मेरा पेट कब्रिस्तान नहीं है जो मैं मुर्दे के अवयवों को पेट में गाढ़सकूं, शाकाहारी ही मेरा प्रिय भोजन है ऐसा सुनते ही लाखों व्यक्ति उनका अनुसरण करने लग गये व शाकाहारी ही मेरा प्रिय भोजन है ऐसा सुनते ही लाखों व्यक्ति उनका अनुसरण करने लग गये व शाकाहारी ही मेरा प्रिय भोजन है ऐसा सुनते ही लाखों व्यक्ति उनका अनुसरण करने लग गये व शाकाहारी बन गये।

भारत में तो शाकाहार भोजन की ही परम्परा रही है, विदेशी वातावरण से खान-पान में विकृतिऐं आ गई है जिससे मांसाहार का प्रचलन बढ़ने लगा। जिसके दुष्परिणामों को उजागर करने की आवश्यकता है। शाकाहारी भोजन ही श्रेष्ठ है। जो रोगमुक्त भी है व आसानी से पाचन भी होता है।

शाकाहारी भोजन ही श्रेष्ठ हैः-

शाकाहारी भोजन ही श्रेष्ठ है यह एक सर्वमान्य है, जनता के हित में उन आंकड़ों को पेश किया जा रहा है जो वैज्ञानिक दृष्टि से सारे विश्व में डॉक्टरों की सलाह से प्रमाणित हो चुके है। जैसे-

1- संतुलित शाकाहारी भोजन, जिसमें पर्याय मात्रा में फल और तरकारियाँ हो और उचित मात्रा में दाल, गेहूं, चावल आदि हो, यह स्वास्थ्य और प्रसन्नता के लिये सर्वोत्तम है और विभिन्न घातक बीमारियों, जैसे- हृदय रोग, कैंसर आदि की रोकथाम करने में भी ज्यादा कारगर सिद्ध हुआ है, जैसा कि कुछ समय पूर्व जर्मनी के विख्यात प्रोफेसर गैरहार्ड रैककेमर, जो पौष्टिक विज्ञान परिषद के निर्देशक है, ने प्रमाणित किया है।

2- शाकाहार भोजन बहुत ही प्राकृतिक है और पर्यावरण के संवर्धन में मदद करता है। यही नहीं, यह सस्ता भी है जबकि मांसाहारी भोजन महंगा भी होता है।

3- संतुलित शाकाहार पर्याय मात्रा में पौष्टिक तत्व रखता है, जैसे-सोयाबीन में 43 प्रतिशत प्रोटीन है, दालों में लगभग 24 प्रतिशत प्रोटीन है, वहीं तथा कथित अधिक पौष्टिकता वाले मांसाहार में 13 प्रतिशत से 18 प्रतिशत ही प्रोटीन है अतः प्रोटीन के नाम पर मांसाहार आवश्यक नहीं, यह बात समझ में आनी चाहिये।

4- दालें, गेहूं, चावल, कई फल आदि में पर्याप्त मात्रा में कार्बोहाइड्रेट होता है जो कि बच्चों के लिए अति आवश्यक है, मांसाहारी के खाद्य में सर्वाधिक ''कोलेस्ट्रोल'' होता है। इसलिए हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी शाकाहारी बने रहें, शाकाहार रोगमुक्त प्राकृतिक आहार माना जाता है जो स्वस्थ शरीर व स्वस्थ मन के लिये आवश्यक है, जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन, जैसा पीवे पाणी वैसे निकली वाणी अतः मन और वाणी को शुद्ध रखने के लिये सात्विक व शाकाहार ही आवश्यक है।

सच्चा धार्मिक अनुष्ठान

जहां मिठास नहीं, वह मिठाई नहीं और जहां नमक नहीं, वह नमकीन नहीं। उसी प्रकार जिस धार्मिक अनुष्ठान में मैत्री आदि भावनाएं प्रकट या गर्भित रुप से रही हुई नहीं है, वास्तव में वह धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं है। पुलिस की वर्दी पहनने मात्र से किसी को डंडे मारने का अधिकार नहीं मिल जाता है। बस, इसी प्रकार धर्म की क्रिया कर लेने मात्र से ही कोई अनुष्ठान, धार्मिक अनुष्ठान नहीं बन जाता है, इसके लिये उस अनुष्ठन के भीतर मैत्री आदि भावनाएँ होनी अति आवश्यक है। मैत्री आदि भावनाओं से रहित होनेवाले अनुष्ठान भले ही बाह्य दृष्टि से धार्मिक अनुष्ठान दिखाई देते होंगे, परन्तु वे अनुष्ठान तो प्राणरहित कलेवर की भांति निर्जीव है।

जागते रहिए ! सावधान रहिए !!

जाग्रत तंद्रा में विभोर मनुष्य वास्तव में आधा मनुष्य है, अर्द्ध जीवित और अर्द्धमृतक मात्र उसे कह सकते हैं। जैसे शरीर के एक भाग को लकवा मार जाए और दूसरे भाग अच्छा रहे तो उसमें क्या काम हो सकेगा ? किसी आदमी का एक हाथ, एक पैर, एक कान, एक आँख नष्ट हो जाए तो उस बेचारे की क्या दुर्दशा होगी। इसी प्रकार जो अर्द्धतंद्रा में पड़ा रहता है, वह अधुरा मनुष्य जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त करने वाला योद्धा नहीं बन सकता। लापरवाही एक मानसिक लकवा है, जिससे आधा मस्तिष्क लुंज-पुंज हो जाता है। ऐसे मानसिक अपाहिज दरिद्रता के चिथड़े में लिपटे एक कोने में पड़े रहते हैं और जीवन के भार को किसी प्रकार गिरते-मरते ढोते रहते हैं। उन्नत, समृद्ध एवं सम्पन्न जीवन तो उनके लिए आकाश-कुसुम की भांति दुर्लभ है।

जीवन को धूलि में मिला देने वाला यह सत्यानाशी रोग जब रोगी चाहे, जा सकता है। यह रोग ठहरता तभी तक है जब तक रोगी उसका विरोध नहीं करता और अपने में उसे ठहरने देता है, पर जब वह विरोध करने और हटा देने हेतु उतारु हो जाता है तो फिर उसका ठहरना नहीं हो सकता। व्यभिचार दूसरे पक्ष के सहयोग पर निर्भर है। यदि पुरुष व्यभिचारी हो, पर कोई स्त्री उसके कार्य में सहयोग न दे तो व्यभिचार होना असंभव है। इसी प्रकार जाग्रत तंद्रा का घातक रोग भी रोगी के सहयोग पर निर्भर है। जहां विरोध होगा, हटाने का प्रयास होगा, वहां उसका ठहरना नहीं हो सकता। यह रोग किसी को उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका शिकार नहीं बना सकता।

प्रकाश के अभाव का नाम ही अंधकार है। वैसे स्वतंत्र रुप से अंधकार का कोई अस्तित्व नहीं। इसी प्रकार लापरवाही भी स्वतंत्र चीज नहीं है। जागरुकता का अभाव ही लापरवाही है। जैसे स्नान करना या न करना, टहलने जाना या न जाना अपने हाथ की बात है, उसी प्रकार मन को जागरुक रखना या न रखना भी अपने हाथ की बात है। मन की उदासीनता रुपी बाधा को हटा दिया जाए तो हर एक व्यक्ति पूर्ण रुप से क्रिया-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, परिश्रमी, कर्मपरायण और सफल मनोरथी हो सकता है।

जो व्यक्ति जागरुक बनना चाहता है, उसे प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि मैं जाग्रत जीवन व्यतीत करुंगा। आत्मगौरव की रक्षा के लिए अपने हर एक कार्य को सफल और सुंदर बनाने का प्रयत्न करुंगा। जीवन के बहुमूल्य क्षणों का अत्यंत सावधानी के साथ सुव्यस्थित ढंग से सदुपयोग करुंगा। यह प्रतिज्ञा जिव्हा के अग्रभाग से नहीं, वरन अंतःकरण के गहनतम प्रदेश से की जानी चाहिये। लापरवाही से होनेवाली भयंकर हानियों पर बहुत समय तक गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिये। जिन लोगों के लापरवाही के कारण जीवन दुर्दशाग्रस्त हो रहे हैं, उनकी दशा का सुविस्तृत चित्र कल्पनालोक में खींचना चाहिये और विचार करना चाहिये कि यदि उनमें यह दोष न रहा होता तो कितना आगे बढ़ गये होते। इसी प्रकार कुछ उन लोगों के जीवनों पर दृष्टिपात करना चाहिये जो साधारण-सी स्थिति में रहते हुए भी अपने अध्यवसाय के कारण कितना आगे बढ़ गए।

एक वे हैं जो लापरवाही के कारण ऊंचे से नीचे गिरे, दूसरे वे हैं जो जागरुकता के कारण नीचे से ऊंचे चढ़े हैं। इन दोनों प्रकार के मनुष्यों की आरंभिक और अंतिम अवस्था के अंतर को ध्यानपूर्वक देखने से पता चलता है कि सावधानी में कितनी महानता और असावधानी में कितनी भयंकरता भरी पड़ी है। इस महानता और भयंकरता को एक-एक करके अपने जीवन से संबद्ध होने की कल्पना करनी चाहिए और मस्तिष्क में एक छायाचित्र बनाना चाहिए कि यदि भूतकाल में मैंने असावधानी न बरती होती तो अब तक कितना आगे होता, मेरी कितनी उत्तम दशा रही होती। अनेक उदाहरणों, तर्कों, प्रमाणों और कल्पनाओं के साथ मन के सामने रख चिंतन करने से भीतर से एक स्फुरणा उत्पन्न होती है। यदि वह स्फुरणा कायम रखी जा सके तो मनुष्य जागरुक बन सकता है।

जीवन को जाग्रत बनाने के लिये दो बातों की प्रधान रुप से आवश्यकता है। एक तो समय का कार्य विभाजन, दूसरे अपने कार्यो में रुचि। प्रातःकाल उठते ही दिनभर का कार्यक्रम बना लेना चाहिये एवं रात को सोते समय देखना चाहिये कि उस कार्यक्रम पर अमल हुआ या नहीं। बहुत काम करना अच्छी बात है, पर उससे भी अच्छी बात यह है कि काम को उत्तमता से, पूरे मनोयोग से किया जाए। यदि आप जीवितों का जीवन जीना चाहते है जो जाग्रत रहिए, अपने हर काम को सावधानी और सतर्कता के साथ कीजिए। स्मरण रखिए जाग्रत मनुष्यों को ही जीवनफल मिलता है।

वर्ग पहेली क्रमांक-320

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		■	3	4		■	■
■		■	5			■	6	7
8		9		■	10			
	■	11		12		■		■
13	14		■		■	15		16
■		■	17		18		■	
19				■	20		21	
22		■	23	24		■		■
	■	25			■	26		

बाएं से दाएं:-

1- बीकानेर-जोधपुर के मध्य स्थित इस शहर में प्रसिद्ध कांच का मंदिर है (3)
3- भावी चौवीसी के तीसरे तीर्थंकर होंगे श्री---(3)
5- पार्श्व प्रभु पर उपसर्ग करने वाले मेघमाली देव का पूर्व भव (3)
6- नास्तिक का विलोम शब्द आ--- (2)
8- भगवान आदिनाथ का केवलज्ञान स्थल पु--(4)
10-पांचवें चक्रवर्ती का नाम (4)
11-माता त्रिशला ने जो स्वप्न देखे उनमें क--- और पुष्प--- भी है (2,2)
13-गुजरात के इस तीर्थ में बिराजे है श्री पल्लविया पार्श्वनाथ प्रह---पुर (3)
15-स्वर्ग का विलोम शब्द है--- (3)
17-प्रसिद्ध वीरायतन संस्था की स्थापना में प्रेरणा थी आचार्य---नि की (3,1)
19-बीस विहरमान जी में से एक (4)
20-भगवान महावीर के 10 प्रमुख श्रावकों में से एक चू--- (2,2)
22-कम खर्चीला यानि किफा--- (2)
23-इक्कीसवें तीर्थंकर के पिता का नाम विज--- (3)
25-वीर प्रभु के दस प्रमुख श्रावकों मेंसे एक- का---(3)
26-आबू पर्वत पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थ दे---(3)

वर्ग पहेली क्रमांक-319 का परिणाम

क	■	अ	पा	पा	■	बि	न्दु	सा
रे	व	ती	■	वा	न	ग	■	णा
ड़ा	■	■	स	■	मो	रे	अ	■
पा	द	लि	प्त	सू	■	स	र	■
र्श्व	ना	■	म	त	■	■	सी	न
■	व	त	■	क	पि	ल	के	व
मी	र	पु	रा	■	ता	■	■	का
झ	■	र	पु	र	■	ब	व्द	र
रा	व	ण	■	प्र	भा	स	■	सी

ऊपर से नीचे:-

2- वीर प्रभु के प्रमुख शिष्य इंद्रभूति---(3)
3- पुष्प का पर्यायवाची शब्द कु--- (2)
4- जहां धार्मिकशिक्षा की भी पढ़ाई कराई जाती है (4)
5- अष्ट मंगल में से एक मंगल---(3)
6- सोलहवें तीर्थंकर की जन्म स्थली है- ह---(4)
7- दक्षिणी राज्य केरल का शास्त्रीय नृत्य---कली (2)
8- वीरमगाम के निकट चन्दनवर्णी आदिनाथ प्रभु का तीर्थ उप--- (3)
9- कुक्षी के पास स्थित तीर्थ जहां आदिनाथ प्रभु की फिरोजावर्ण की प्रतिमा है--- पुर (3)
12-प्रभु भक्ति भी प्रभु को पाने का एक--- है (3)
14-तीर्थंकरों के शासन की सोलह सतियों में से एक---(4)
15-भ.महावीर का एक भव नन्द--- (1,2)
16-एक कवि की रचना कहलाती है (3)
17-नवांगी वृतिकार के रुप में प्रसिद्ध आचार्य--- व सूरि (4)
18-बड़्वाह के पास नर्मदा में मिल जाती है यह छोटी नदी- चो---दी (2,1)
19-नौ वासुदेव में से एक (3)
21-सिरोही एवं नान्दिया के निकट भगवान महावीर का तीर्थ---ड़ा (3)
24-अभक्ष्य खाद्य पदार्थ का कभी---नहीं करना चाहिए (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-320

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का अंक जोड़ने पर ''9'' होना चाहिये।

1- श्री भगवती सूत्र में कितने प्रश्नोत्तर है ?

2- श्री नेमिनाथ भगवान के साधुओं की संख्या कितनी है ?

3- श्रेणिकराजा प्रतिदिन कितने सुवर्ण जब से प्रभु का स्वस्तिक बनाते थे ?

4- छठे आरे में गंगा-सिंधु नदी के तट पर कितने बिल होंगे ?

5- अव्यवहार राशि में हमारी आत्मा ने एक श्वास में कितनी बार जन्म लिया था ?

6- जीवों के 563 भेदों में से देवगति के कितने भेद है ?

7- श्री बारसासूत्र के कुल श्लोक कितने है ?

8- श्री तीर्थंकरों के शारीरिक शुभ लक्षण कितने होते है ?

9- संवत्सरी प्रतिक्रमण का कायोत्सर्ग कितने श्वासोच्छवास प्रमाण का होता है।

10-इषत्प्राग् भार पृथ्वी कितने योजन प्रमाणवाली है ?

11- महाभारत का युद्ध कितने दिन चला ?

✻ पाप करने का समय कम होता है, लेकिन पाप-फल भोगने का समय लम्बा होता है। जैसे दुर्घटना एक क्षण में हो जाती है, मगर स्वास्थ्य लाभ के लिये महिनों बिस्तर पर पड़ा रहना पड़ता है।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं. 030001000331

IFSC Code ICIC0000300

वर्गपहेली क्रमांक-319 के परिणाम

विजेता:-

1-श्रीमती विद्या संघवी, बदनावर (म.प्र.) - प्रथम

2-श्रीमती कुसुम गौतम जैन,आगर (म.प्र.) -द्वितीय

3-श्रीमती सुधा धारीवाल, देवास (म.प्र.) -तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे:-

प्रभा जैन, देवास, सुधा लोढ़ा, उज्जैन।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-319 के परिणाम

विजेता:-

1-श्रीमती शांता बाफना, इन्दौर (म.प्र.) - प्रथम

2-श्रीमती सुधा धारीवाल, देवास (म.प्र.) -द्वितीय

3-श्रीमती सुधा लोढ़ा, उज्जैन (म.प्र.) -तृतीय

सही उत्तर-

1- पुष्पदंत, 2-पार्श्वनाथजी 3- कुंथुनाथजी, 4- शीतलनाथजी, 5- विमलनाथजी, 6- महावीरस्वामी, 7- धर्मनाथजी, 8- सुविधिनाथजी, 9- पार्श्वनाथजी, 10-मुनिसुव्रतस्वामी, 11-श्रेयांसनाथजी।

इनके भी उत्तर सही थे:-

1- प्रभा जैन, देवास।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-1-2022 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

आचार्यश्री मृदुरत्नसागरसूरीजी की निश्रा में छःरि पालित यात्रसंघ- पौष दशमी

उदयपुर- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरी जी म.सा. के तीसरे सुशिष्य आचार्य भगवंत वागड़ विभूषण प.पू. आचार्य श्रीमृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी मुनिश्री अर्हम्रत्न सागरजी सा.मुनिश्री पवित्ररत्न सागर जी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में में चार्तुमास सानंद सम्पन्न होने के बाद पूज्यश्री की निश्रा में पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में वागड़ से श्री नाकोड़ा छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन किया गया। 22 दिसंबर को प्रस्थान के पूर्व 54 जोड़ों के साथ ही श्री नाकोड़ा भैरव महापूजन पढ़ाई गई। गुरु सिवाणा से नाकोड़ा तीर्थ का छःरिपालित संघ समस्त वागड़ प्रदेश से दिनांक 22 से 26 दिसंबर तक निकला। गढ़सिवाना से संघ ने22 दिसंबर को प्रस्थान किया, 25 दिसंबर को श्री नाकोड़ा प्रवेश तथा 26 दिसंबर को माल विधान हुआ। पौष दशमी के अट्ठम की आराधना नाकोड़ा तीर्थ में दिनांक 28 से 30 दिसंबर तक करवाई। चैत्री ओलीजी उज्जैन तीर्थ (म.प्र.) में होने की संभावना है।चार्तुमास गुजरात में होने की संभावना है। । मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. को 94 वां ओली पारणा 1 दिसंबर को हुआ। तपस्वी मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. की वर्धमान तप की 95 वां ओलीजी सशाता चल रही है।

श्री गिरनार महातीर्थ में 18 अभिषेक तथा दादा के जिनालय पर ध्वजारोहण का मंगल प्रसंग

✻ बोलियां 25 दिसंबर को हुई।

जूनागढ़-परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय हेमवल्लभ सूरिश्वरजी म.सा. एवं जूनागढ़ में बिराजमान पूज्य आचार्य भगवंत पदस्थ मुनि भगवंतों तथा अन्य पूज्य साधु साध्वीजी म.सा. श्री गिरनार महातीर्थ के मूलनायक परमात्मा श्री नेमिनाथ दादा, श्री आदिश्वर भगवान जिनालय श्री अमिजरा पार्श्वनाथ भगवान की देरी,श्री वस्तुपाल तेजपाल, श्री संप्रति-राजा, श्री मेरकवसहि, श्री संग्रामसोनी श्री कुमारपाल के जिनबिम्ब तथा तलेटी के जिनालय स्थित जिनबिंब एवं पगलिये आदि के अट्ठारह अभिषेक वि.सं. 2078 (गुजराती) फाल्गुन-वद-तेरस चौदस, अमावस्या, बुधवार-गुरुवार-शुक्रवार 30-31 मार्च, 1 अप्रेल 2022 के दिनों में अट्ठारह अभिषेक एवं मूलनायक दादा के जिनालय की 893 वीं सालगिरह वि.सं.2078, वैशाख-सूद-पूनम, सोमवार, दिनांक 16-5-2022 के शुभ दिन में श्री नेमिनाथ दादा जिनालय के शिखर की ध्वजा, श्री आदिश्वर भगवान जिनालय, श्री अमिजरा पार्श्वनाथ भगवान की देरी तथा अंबिकादेवी की देरी पर ध्वजारोहण होने जा रहा है।

✻ परमात्मा का ध्यान करने से परमात्मा बनते हैं।

चन्द्र-गिरी छःरि पालित संघ यात्रा का आयोजन

महुवा- पूज्य आचार्य श्री रविशेखर सूरीजी म.सा.,आचार्य श्री ललितशेखर सूरीजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की पावन निश्रा में श्री महुवा से श्री सिद्धगिरी महातीर्थ के दिनांक 26 दिसंबर से 5 जनवरी 2022 तक आयोजित होने वाले चन्द्र-गिरि छःरि पालित संघयात्रा के पूर्व 10 अक्टूबर को चैन्नई में पत्रिका लेखन किया गया तथा ऐलाना में 21 से 23 दिसंबर तक रत्नत्राणी महोत्सव मनाया जायेगा। 26 दिसंबर को संघ का प्रस्थान होकर पालीताना में दादा के दरबार में 5 जनवरी 2022 को संघ माल होगी।

अहंकार- *जब मनुष्य छोटा-सा शिशु होता है, तब वह न तो बोलना जानता है न चलना, न उसमें अपना भोजन प्राप्त करने की क्षमता होती है न अपनी रक्षा करने की सामर्थ्य। धीरे-धीरे वह बड़ा होता है और उसमें दैहिक शक्ति का, अपने कुल का,समझ तथा धन का अहंकार होने लगता है। वास्तव में मानव के किसी भी क्षण प्राण छूट सकते हैं, उसका धन-जन सब धरा रहा जा सकता है परन्तु फिर भी मनुष्य अभिमान करता है। यह अभिमान ही अनबन पैदा करता है, मनुष्य को प्रभु से दूर करता है तथा उसमें अन्य सभी विकार पैदा करता है। अहंकार से क्षण-भर में ही मनुष्य के मन में तनाव पैदा हो जाता है। मनुष्य को आनंद के शिखर से गिराकर चकनाचूर करने वाला महाबली विकार अहंकार ही है।*

युवा जैनाचार्य की निश्रा में नववर्ष की प्रथम महामांगलिक बांरा में हुई और उपधान तप श्री नागेश्वर में 14 जनवरी से होगा

✻ छ:रि पालित संघ की माल के बाद मालवा की ओर विहार हुआ। ✻महामांगलिक भी बांरा राज. में 3 जनवरी को हुई। ✻ 9 जनवरी को श्री नागेश्वर तीर्थ में प्रवेश। ✻ मालवा सम्मेलन 15-16 जनवरी को श्री नागेश्वर तीर्थ में। ✻ श्रीनागेश्वर में श्रावक से श्रमण बनने की तपाराधना उपधान 14 जनवरी से। ✻ द्वितीय प्रवेश 16 जनवरी को। ✻ उपधान तपाराधकों की रथयात्रा 2 मार्च को। ✻ उपधान मालरोपण 3 मार्च को होगा। ✻ उपधान तप का गुरु नवरत्न उपधान तप समिति के संयोजन में। ✻ चार्तुमास मुंबई या मालवा में शीघ्र तैय होगा।

हरिद्वार- मालवा धार्म पुण्य परमात्मा का डंका उत्तर भारत के राज्यों पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंडमें बजकर धर्माराधना का शंखनाद करनेवाले पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के नाम को रोशन करने वाले अपने युवा शिष्यों मंडली के साथ जिन शासन को शोभायमान करनेवाले गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवा हृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा.। प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म.सा., प.पू. मुनि श्रीतीर्थरत्न सागरजी म. सा., प.पू. मुनि श्री उदयरत्नसागरजी म.सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ज्वलरत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीगंभीररत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीरम्य रत्नसागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीलब्धिरत्नसागरजी म. सा.आदि ठाणा का दिसंबर के पूरे माह में विहार रहा। मालवा की ओर आगमन के पूर्व बांरा कोटा में 3 जनवरी का नववर्ष की महामांगलिक का आयोजन हुआ वहां से भी तुरन्त ही विहार कर 9 जनवरी को श्री नागेश्वर तीर्थ में आगमन होगा। यहां पर आने के बाद मालवा के धर्मिष्ठों में सम्पर्क के साथ सर्वप्रथम श्रावक से श्रमण बनने की धर्मक्रिया उपधान तप का प्रथम मुर्हूत 14 जनवरी कोद्वितीय मुर्हूत 16 जनवरी को होगा,इसके बाद मालवा महासंघ का सम्मेलन 15-16 जनवरी को होना है। आपश्री के श्री नागेश्वर तीर्थ आगमन के पूर्व ही मुनिश्री कीर्तिरत्नसागर और मुनिश्री लब्धिरत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में पौष दशमी आराधना का आयोजन हुआ। उपधान माल तक श्री नागेश्वर तीर्थ में स्थिरता के बाद बड़ा आयोजन पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा का 79 वां जन्म दिवस चैत्र वदी-3 दिनांक 21 मार्च 2022 को आ रहा है। आयोजन कहां होगा इसकी घोषणा भी श्री नागेश्वर तीर्थ में होगी इसके अलावा अन्य महत्वपूर्ण महोत्सव आयोजनों की घोषणा भी होगी। मुंबई के साथ मालवा के श्री संघों में भी आगामी चार्तुमास के लिये से चर्चा है। उपधान के दौरान आगामी कार्यक्रम के बारे में विस्तार से रुपरेखा बनेगी।

✻ पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में राजगढ़ में जीर्णोद्धार कर नवनिर्मित हुए दादा श्री आदिश्वर प्रभु के भव्य जिनालय का प्रतिष्ठा महोत्सव मई माह में। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार आप उज्जैन में चैत्र नवपद ओली आराधना करवायेंगे साथ ही आपके जन्म का 50 वां महोत्सव का आयोजन उज्जैन में होगा।

गणिवर्य आदर्शरत्नसागरजी आदि ठाणा उदयपुर में चार्तुमास करेंगे

महामांगलिक सुवासरा संघ में 3 जनवरी को हुई

दिल्ली से राजस्थान होकर मालवा की ओर विहार

नईदिल्ली -आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा मालदास स्ट्रीट जैन श्वेतांबर श्री संघ के तत्वावधान में के चार्तुमास की उद्घोषणा दीपावली महामांगलिक पर श्री संघ की विनंती पर दिल्ली में हुई। श्री संघ के डॉ. हरण विशेष रुप से उपस्थित थे। चार्तुमास के बाद दिल्ली से आपका विहार राजस्थान की ओर हुआ है पूज्य मुनि प्रवरश्री अक्षयरत्नसागरजी म.सा. से हुई चर्चा के अ नुसार महामांगलिक हिण्डोन सिटी में होगी, यहां आप श्री भोपावर महातीर्थ पधारेंगे। यहां 5 मार्च को दादा श्री शांतिनाथ प्रभु की ध्वजारोहण का आयोजन होगा।

कोद से भोपावर महातीर्थ का संघ

पूज्यश्री की निश्रा में कोद से श्री भोपावर महातीर्थ का छःरिपालित संघ का आयोजन भी होने जा रहा है। कोद से संघ का प्रस्थान दिनांक 29 जनवरी को तथा महातीर्थ में माल 2 फ रवरी को होगी। महामांगलिक भी होगी। संघ का आयोजन सिसोदिया परिवार के द्वारा हो रहा है।

गुरुराम पावन भूमि में उपधान प्रगतिवान

सूरत-गुरुराम पावन भूमि पर पाल-सूरत में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री अभयदेव सूरीजी महाराज, आचार्यदेव श्री जगतचंद्र सूरी जी महाराज, आचार्यदेव श्री मोक्षरत्न सूरीजी महाराज एवं नूतन आचार्य भगवंत श्री कल्पयशसूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में उपस्थित डेहलावाला समुदाय के साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की धर्म क्रिया उपधान तप का शुभारंभ प्रथम मुर्हूत 19 अक्टूबर को द्वितीय मुर्हूत 21 अक्टूबर को हुआ, माल परिधान 8 दिसबंर को होगी। यह धर्म क्रिया शुभ मंगल फाउण्डेश्न की ओर से होने जा रही है।

चैन्नई में उपधान तप का आयोजन

चैन्नई- परमात्मा श्री ऋषभदेव द्वारा प्ररुचित आर्य संस्कृति के अनुसरणमय धर्म का सारथी तप उपधान का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य आचार्यश्री कल्पतरु सूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्य श्री तीर्थभद्रसूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी की निश्रा में आयोजित हो रही। श्रावक से श्रमण बनने की आराधना उपधान तप का शुभारंभ दिनांक 22 दिसंबर को होगा एवं मोक्षमाला दिनांक 7 फरवरी को होगी। श्री मुनि सुव्रतस्वामी नवग्रह मंदिर एवं तमिलनाडु जैन महामंडल आदि के तत्वावधान में यह तपाराधना होगी। श्री वर्धमान जैन मंडल सेवा देगा।

अपूर्व मंगल गुरुकुल : त्रिपुटी मुनिश्री की निश्रा में उपधान तप की रथयात्रा और मोक्षमाल यादगार बनी

✻ चार्तुमास रायपुर श्री संघ में होगा।

पालीताना- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नव-अपूर्व- अमर कृपापात्र बंधु त्रिपुटी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्र रत्नसागरजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद निश्रा म उपधान तप की माल का महोत्सव दिनांक 23 से 28 दिसंबर तक आयोजित किया गया। प्रथम तीन दिन तक श्री अर्हत् महापूजन पढ़ाई गई। परमात्मा के 18 अभिषेक हुए। दिनांक 25 दिसंबर को लाभार्थी का बहुमान किया गया। दिनांक 26 दिसंबर को पालीताना में सभी तपस्वीयों का यादगार वरघोड़ा निकाला गया। रात्री में मोक्षमाल की बोलियां हुई। 27 दिसंबर को मोक्ष माल के लिये धर्म सभा मंडप खचाखच भरा हुआ था। मोक्षमाल के साथ सभी तपस्वीयों का जोरदार बहुमान भी किया गया। **स्मरण रहे मुनिमंडल का आगामी चार्तुमास रायपुर श्री संघ में होने जा रहा है।**

✻ जो कुछ प्रिय करने योग्य है, उसे जीव ने जाना नहीं है और बाकी का कुछ भी प्रिय करने योग्य नहीं है, यह हमारा निश्चय है।

अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. के आगामी कार्यक्रम

✻ 15 जनवरी 2022, शनिवार, श्री मुनिसुव्रत स्वामी वीरमणि जैन तीर्थ धाम धरमपुरी में परमात्मा का गंभारा प्रवेश।

✻ 21 से 23 जनवरी 2022, श्री मुनिसुव्रत स्वामी वीरमणि जैन तीर्थधाम धरमपुरी में नवनिर्मित शिखरबद्ध भव्य जिनालय में प्रतिष्ठा उपाश्रय भवन का उद्घाटन।

✻ 25 जनवरी 2022, मंगलवार श्री वीरमणि चन्द्रप्रभ स्वामी जैन श्वे. मंदिर ओएसिन टाउनशिप, इन्दौर में ध्वजारोहण।

✻ 5 फरवरी 2022, शनिवार, श्री त्रिभुवनभानु पार्श्वनाथ श्री मणिभद्रवीर जैन महातीर्थ शिवपुर मातमोर में श्री माणिभद्रवीर का भव्य जन्मोत्सव

✻ 14 फरवरी 2022 सोमवार, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर देवास में ध्वजारोहण।

✻ 15 फरवरी 2022, मंगलवार, श्री शत्रुंजयावतार तीर्थ टेकरी देवास में प.पू.गुरुदेव श्री विजय भुवनभानुसूरीजी म.सा. एवं श्री नाकोड़ा भैरवनाथ की भव्य प्रतिष्ठा।

चैन्नई में 11 दीक्षा एक साथ 17 फ रवरी को जैनाचार्य श्री तीर्थभद्रसूरीजी की निश्रा में होगी

चैन्नई- आचार्य भगवंत श्री तीर्थ भद्रसूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में उनके सुशिष्य मुनिप्रवर श्री तीर्थरुचिविजयजी म.सा. गणी और पंन्यास पद से विभूषित किया गया। पूज्यश्री की निश्रा में 11 मुमुक्षुओं की एक साथ दीक्षा का मुहूर्त 17 फरवरी 2022 दिया गया है। दीक्षा श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ वेपेरी चैन्नई के तत्वावधान में होगी। पूज्यश्री के आगामी चार्तुमास की जय श्री विजयवाड़ा श्री संघ की उपस्थिति में बोली गई। आपका आगामी चार्तुमास विजयवाड़ा में होगा।

सूरत में दीक्षा होगी

सूरत- पूज्य आचार्य भगवंत श्रीरत्नमुन्दर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में श्री सालेरवाड़ी श्री संघ में दिनांक 21 जनवरी को मुमुक्षु श्री भव्यकुमार, श्री वंदनकुमार एवं भव्यकुमार दीक्षित होंगे इसके पूर्व एक और दीक्षा दिनांक 15 जनवरी को लक्षकुमार की भी होगी।

पूजा दीक्षित

उना- पूज्य आचार्यश्री केशर सूरीजी म.सा. के समुदाय के आचार्य गच्छाधिपति आचार्य श्री विजय विज्ञान प्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में पूना में आयोजित प्रवज्योत्सव शुभ लग्नांश वेला में पूज्य आचार्यश्री के हस्ते पूजा रजोहरण ग्रहण करेंगी। दिनांक 25 से 27 जनवरी 2022 तक आयोजित होगा। वर्षीदान वरघोड़ा 26 जनवरी को निकलेगा। कुमारी पूजा की दीक्षा दिनांक 27 जनवरी 2022 को होगी। साध्वी श्री चैत्यरत्नाश्रीजी म.सा. का शिष्यत्व ग्रहण करेंगी।

आचार्य एवं उपाध्याय भगवंत का विहार शंखेश्वर की ओर

हस्तिनापुर- हरिद्वार में चातुमार्सिक आराधना पूर्ण कर एवं हरिद्वार से हस्तिनापुर छःरिपालित संघ में निश्रा प्रदान करने के बाद आचार्य भगवंत श्री देवचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. एवं उपाध्याय श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा.आदि ठाणा का विहार दिनांक 7 दिसंबर को श्री शंखेश्वर महातीर्थ की ओर होने जा रहा है वहां वर्धमान ओली तपोत्सव आयोजन में आपकी निश्रा रहेगी।

आचार्य पद प्रदान किया जायेगा

मुंबई- भुवनभानुसूरी समुदाय के गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से पूज्य पंन्यास श्री जयेशरत्नविजयजी एवं पंन्यास श्री प्रेमसुन्दर विजयजी म.सा. को आचार्य पद पर आरुढ़ करने की उद्घोषणा श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन संघ घाटकोपर मुंबई से दिनांक 8 नवंबर को की गई। आचार्य पद दिनांक 24 अप्रेल को अहमदाबाद में प्रदान किया जायेगा।

✻ **चार्तुमास**- पू.पंन्यास हंसबोधि विजयजी म.सा.आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास सेटेलाईट श्री प्रेरणा तीर्थ संघ अहमदाबाद में निश्चित हुआ है।

✻ **चार्तुमास**- आगमोद्धारक श्री सागर समुदाय के आचार्य भगवंत वर्धमान तपोनिधि श्री नयचंदसागर सूरीजी म.सा.का आगामी चार्तुमास ऊंकार सूरी आराधना भवन, पाल-सूरत में निश्चित हुआ है।

अभिनव शत्रुंजयधाम की अंजन प्रतिष्ठा जनवरी 2022 में

रानी- श्री जैनाचार्य श्री नेमी सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवश्री सुशीलसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यदेव श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा. के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर रानी के सुशील विहारधाम अभिनव शत्रुंजय धाम का नव निर्माण किया गया है। तीर्थ का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 15 से 24 जनवरी 2022 तक आयोजित होगा। प्रतिष्ठा 22 जनवरी को सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 153 चढ़ावों का लाभ लेने के लिये 1 लाख 8 हजार का नकरा तैय किया गया जिसका ड्रॉ निकालकर विजेता लाभ दिया जायेगा। ड्रॉ 26 फरवरी 2021 को श्री अष्टापद तीर्थ सुशील विहार रानी में निकाले गये।

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री राजयश सूरीश्वरजी महाराजा के आगामी संभावित कार्यक्रम

✻ चार स्थानों पर वार्षिक ध्वजारोहण कार्यक्रम- 1- **कार्तिक वदी-**4 **महिमा अपार्टमेंट** 2- **कार्तिक वदी-**9 **श्री गौड़ी पार्श्व प्रेरणा तीर्थ** 3- **महावद-**13 **दिनांक** 28 **फरवरी** 2022 **श्री माणि लक्ष्मी तीर्थ।**

✻ फागण सुद-3 **दिनांक** 5 **मार्च श्री स्तंभन तीर्थ खंभात।**

✻ धणाय तीर्थ में पोष दशमी अष्टम आराधना 28 **से** 30 **दिसंबर।**

✻ जीवनधारा वृद्धाश्रम का उद्‌घाटन 15 **जनवरी** 2022**।**

✻ दिनांक 4 **फरवरी गच्छाधिपति पद की प्रथम वार्षिकी।**

✻ दिनांक 5 **फरवरी मोडासा** 67 **जिनालय तीर्थ का भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव।**

✻ आगामी चार्तुमास पूज्यश्री एवं बहन महाराज आंबावाड़ी- अहमदाबाद (गुज.)

✻ हैदराबाद टी- 19 **जिनालय के** 5 **जिनबिंब अंजन प्रतिष्ठा अरिहंतनगर अहमदाबाद (गुज.)।**

अभ्युदयपुरम् में प्रतिष्ठा 4 फरवरी 2023 को

✻ छःरि पालित यात्रा संघ चल रहा है

उज्जैन-पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा.,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागर जी म.सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में अभ्युदयपुरम् का प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 4 फरवरी 2023 को 23 दिवसीय भव्य आयोजन के साथ होगा। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 700 चार्तुमास स्थलों पर 250 आचार्य भगवंतों को आमंत्रण दिया गया है साथ ही प्रतिष्ठा हेतु 108 युवाओं की टीम बनाई जा रही है। लगभग 70-75 जिनबिम्बों के साथ नवग्रह मंदिर, 45 जिनालय का निर्माण यहां हुआ है। प्रतिष्ठा महोत्सव को सफल बनाने की तैयारियां आरम्भ हो गई है। महिदपुर की मुमुक्षु रिद्म कोचर का दीक्षा का मुर्हूत दिनांक 14 फरवरी 2022 घोषित हुआ है। आपकी निश्रा में 38 दिवसीय श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ छःरि पालित यात्रा संघ10 दिसंबर 2021को नागेश्वर तीर्थ से आरंभ होकर 2 जनवरी 2022 को राणकपुर पहुंचेगा 15 जनवरी 2022 नाकोड़ा तीर्थ पहुंचकर माल 16 जनवरी को होगी।

अपनी इच्छा से किया हुआ दोष जीव को तीव्रता से भोगना पड़ता है इसलिये किसी भी संग -प्रसंग में स्वेच्छा से अशुभ भाव से प्रवृत्ति न करनी पड़े ऐसा करना।

पूज्य जैनाचार्यश्री की निश्रा में प्रतिष्ठा दीक्षा सम्पन्न हुई

आहोर- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जयानंद सूरीश्वरजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में आहोर प्रतिष्ठा एवं प्रवज्या महोत्सव का आयोजन हुआ। श्री गोड़ी पार्श्वनाथ 52 जिनालयों में श्री प्रभुवीर की प्रतिमा ध्वजादण्ड की प्रतिष्ठा हुई। दिनांक 9 दिसंबर को यह आयोजन हुआ। दिनांक 13 दिसंबर को श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा के साथ सामुहिक 5 प्रवज्या का आयोजन में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही।

कालधर्म-साध्वी श्री पद्म-ज्योति श्रीजी का दिनांक 20 दिसंबर को साबरमती में एक्सीडेंट में कालधर्म हो गया। आपकी पालकी दिनांक 21 दिसंबर को निकली।

मुंबई में सागर गच्छाधिपति की अनुमोदना में हुए तप-जप सामायिक के आयोजन की पूर्णाहुति हुई

✻10 हजार आराधक जुड़े। ✻ 21 लाख सामायिक हुई।
✻ 1 करोड़ आठ लाख चारित्र पद के जाप हुए।

मुंबई- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा शताब्दी शंखनाद क्षौर्य पुरुष पवित्राता के महासागर, सर्वाधिक संयम जीवनवाले पूज्यपादश्री के जन्म शताब्दी महोत्सव में भारतभर के जैन श्री संघों में अमृत पूर्व अकल्पनीय उत्साह दिखाई दिया था सारे जैन जगत के साधु-साध्वी भगवंतों ने आपश्री की अनुमोदना की। मुंबई के शताब्दी महोत्सव के अंतर्गत 10 हजार आराधकों ने तप-जप सामायिक कर इतिहास सर्जित कर दिया। महोत्सव शंखनाद के कार्यक्रम श्रावक-श्राविकाओं ने 21 लाख सामायिक तथा 1 करोड़ 8 लाख चारित्र पद का जाप कर विश्व विक्रमी रिकार्ड बना दिया। पूज्य प्रेम-भुवनभानु समुदाय के सुविशाल गच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराजा तथा आचार्यश्री विजय मुक्ति वल्लभसूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में दिनांक 19 दिसंबर को प्रातः विशाल धर्मसभा का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ जिनालय मलाड़, वेस्ट में हुआ। पूज्यश्री को आदरांजलि के साथ महोत्सव का समापन हुआ।

पालीताना में उपधान नव्वांणु यात्रा और पौष दशमी आराधना का संयुक्त आयोजन

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जगतचंद्रसूरीजी, श्री कुलचंद्र सूरीजी, श्री अभयचंद्र सूरीजी, श्री संयमरत्नसूरीजी, श्री हीरचंद्रसूरीजी, श्री रश्मिराजसूरीजी, श्री जिनेशरत्न सूरीजी एवं श्री हेमवल्लभसूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में श्रमण-श्रमणी वृंद की निश्रा में गज भवन में उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप का प्रथम मुर्हूत 22 दिसंबर को तथा दूसरा मुर्हूत 24 दिसंबर को होगा। मालारोपण विधान 10 फरवरी 2022 को होगा। आपश्री की निश्रा में नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ 22 दिसंबर को तथा समापन 10 फरवरी को होगा इसके साथ ही त्रिदिवसीय छःरिपालित संघ यात्रा तथा अंजन प्रतिष्ठा के भी आयोजन होंगे। श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक पर अट्ठम के साथ पौष दशमी आराधना का आयोजन भी होगा।

श्री नाकोड़ा भैरव दर्शनधाम का संघ

मुंबई- ठाकुरद्वार श्री संघ से श्री नाकोड़ा भैरव दर्शनधाम महातीर्थ के लिये छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन किया गया। पूज्य आचार्यश्री चंद्राननसागर सूरीश्वरजी म.सा. एवं साध्वीश्री चारुताश्रीजी म.सा.आदि ठाणा का अमृत निश्रा में संघ का प्रस्थान 15 दिसंबर को हुआ एवं संघ माल 24 दिसंबर को हुई।

आचार्यश्री का चार्तुमास शिवपुरी में

शिवपुरी (म.प्र.)- शास्त्र विशारद प.पू.जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मसूरीजी म.सा. की परम्परा के गुरुदेव श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. के आजीवन चरणोपासक आचार्य श्री कुलचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. पंन्यास प्रवर श्री कुलदर्शनविजयजी म. आदि ठाणा का सन् 2022 का चार्तुमास शिवपुरी (म.प्र.) में होना निश्चित हुआ है। शिवपुरी संघ दिल्ली स्थित गुजराती अपार्टमेंट पहुंच सन् 2022 के चार्तुमास शिवपुरीमें करने की प्रार्थना की।

स्मरण रहे सन् 2022 में श्री धर्म-सूरीश्वरजी म.सा.की 100 वीं पुण्यतिथि आ रही है।100 वीं पुण्यतिथि पू.आ. श्री कुलचंद्रसूरीजी (के.सी.म.) की निश्रा में धूमधाम से मनाई जाये तथा आपके चार्तुमास से विजय धर्मसूरि समाधि मंदिर का विकास तथा कायाकल्प हो सके इसलिये आपका चार्तुमास शिवपुरी में होना चाहिये।

राष्ट्र संत की निश्रा में संघ

अहमदाबाद-जैनाचार्य श्री कैलाशसागर सूरीजी महाराज के समुदायवर्तीय जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्री पद्मसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की पावन निश्रा में मीराम्बिका अहमदाबाद से श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ दिनांक 24 फरवरी को प्रस्थान कर दिनांक 3 मार्च को श्री शंखेश्वर महातीर्थ पहुंचेगा, दिनांक 4 मार्च को संघ माल होगी।

श्री भोपावर महातीर्थ का द्वितीय ध्वजारोहण 5 मार्च को गणि श्री आदर्शरत्नसागर की निश्रा में होगा

भोपावर- 87000 हजार वर्ष प्राचीन श्री शांतिनाथ प्रभु का महातीर्थ अब विश्व ख्याति प्राप्त कर चुका है। दो वर्ष पूर्व फाल्गुन सुदी-3 को भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ था। मोन्टेक्स ग्रुप के श्री रमणभाई मुथा के नेतृत्व में यादगार महोत्सव का आयोजन आज भी धर्मिष्ठों को याद आता है। महातीर्थ का द्वितीय ध्वजारोहण महोत्सव दिनांक 5 मार्च 2022 को पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य अध्यात्म योगी श्री आदर्शरत्नसागरजी, अक्षतरत्न सागरजी म.सा. के साथ पूज्य साध्वी श्री दमिताश्रीजी म.सा., साध्वी मुक्ति दर्शना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में होगा। चैन्नई निवासी श्री तेजराज कोठारी परिवार ध्वजा के लाभार्थी है। इस अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेवश्री के मंदिर पर भी ध्वजा चढ़ाई जावेगी। श्री रमणभाई, श्री हितेशभाई आदि के साथ अनेक विशिष्ट अतिथियों का आगमन होगा।

जैनाचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी का आगामी चार्तुमास आगम मंदिर सिद्धक्षेत्र में होगा

✻ प्रतापगढ़ में उपधान तप ।
✻ पिपलोनकलां में 23 जनवरी को दीक्षा महोत्सव
✻ पालीताना में नव्वाणुं का आयोजन होगा।
✻ बोलिया के पास प्रतिष्ठा महोत्सव।

नागेश्वर- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज 255 ओली आराधक श्री आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, मुनिश्री चैत्य रत्नसागरजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी, मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास सिद्धक्षेत्र गिरिराज की छत्र छाया में स्थित आगम मंदिर में होगा साथ ही आगामी कार्तिक पूनम में वहां भव्य नव्वाणुं यात्रा और संभवतः उपधान तप का आयोजन भी होगा।

पूज्यश्री की निश्रा में प्रतापगढ़ के श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ परिसर तालाब किनारे श्रावक से श्रमण बनने की महाक्रिया उपधान तप का आयोजन प्रथम मुर्हूत 9 दिसंबर, द्वितीय मुर्हूत 11 दिसंबर को हुआ। तप का मालारोपण विधि 26 जनवरी को होगी। पूज्य साध्वीवर्या सौम्यवंदना श्रीजी आदि ठाणा-4 तथा साध्वी हितेषा श्रीजी आदि ठाणा-2 का सानिध्य भी है। साध्वी श्री अक्षय ज्योतिश्री की प्रेरणा से उपधान तप के लाभार्थी श्री देवेन्द्रकुमार साबुवाला परिवार जयपुर है। दिनांक 23 जनवरी को पिपलोन कलां में एक मुमुक्षु बहन का दीक्षा महोत्सव का आयोजन भी होगा।

श्री शंखेश्वर में उपधान

शंखेश्वर- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जयानंद विजयसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में बागरेचा परिवार के द्वारा उपधान तपाराधना का आयोजन होने जा रहा है। 44 उपधान तप की निश्रा प्रदान करनेवाले आचार्य श्री की निश्रा में शंखेश्वर में उपधान प्रवेश का मुर्हूत दिनांक 13 जनवरी 2022 को है। माल की रथयात्रा दिनांक 3 मार्च को आयोजित होगी एवं मोक्षमाल 4 मार्च को होगी।

श्री गिरनार तीर्थ की नव्वांणु यात्रा

गिरनार- पूज्य आचार्यश्री हेमवल्लभ सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में गिरनार की नव्वांणु यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ दिनांक 25 नवंबर को हुआ। नव्वांणु यात्रा की माल 4 जनवरी 2022 को तथा यात्रा की पूर्णाहुति दिनांक 7 जनवरी 2022 को होगी।

गिरिराज से गिरनार महातीर्थ का संघ

पालीताना- पूज्य वैराग्यनिधि आचार्य भगवंत श्री कुलचंद सूरीजी म. सा.,आचार्य श्री संयमरत्नसूरीजी म. सा.,आचार्य श्री जिनेशरत्नसूरीजी म. सा. एवं आजीवन आयंबिलतप के तपस्वी श्री हेमवल्लभसूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी वृंद की निश्रा मेंश्री शत्रुंजय महातीर्थ से श्री गिरनार महातीर्थ का विशाल छःरिपालित संघ आयोजित होने जा रहा है। संघ का प्रस्थान गिरिराज से दिनांक 11 फरवरी को होगा। गिरनार महातीर्थ प्रवेश दिनांक 23 फरवरी तथा माल 24 फरवरी 2022 तक होगी।

वरिष्ठ जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी के सानिध्य में इन्दौर में धर्म जागरण का शंखनाद हुआ

✻ पौष दशमी मक्सी पार्श्वनाथ तीर्थ में।
✻ चार्तुमास अहमदाबाद नरोड़ा में होगा।

इन्दौर- चार्तुमास के बाद इन्दौर पहुंचे भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में इन्दौर में धर्म जाग्रति और तप का शंखनाद हुआ। इन्दौर के अनेक श्री संघ में आपश्री के पगले हुए। अनुराग नगर में उपाश्रय निर्माण स्थल पर वासक्षेप से अमृत बरसाया तो रेसकोर्स में आपश्री ने मौन एकादशी की आराधना करवाई। इसके बाद आपने इन्दौर के संघों को प्रेरित कर दिनांक 18 दिसंबर को 1450 आयंबिल की आराधना इन्दौर के समस्त श्री संघों में सामूहिक रुप से करवाई इसके बाद आपश्री श्री मक्सी पार्श्वनाथ तीर्थ पधारे यहां पूज्य साध्वी श्री मुक्तिनिलयाश्री आदि ठाणा के साथ श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म दिशा कल्याणक पर आपने यहां पौष दशमी की आराधना पर अट्ठम तप करवाये। दिनांक 27 से 31 दिसंबर तक श्री संघ में उत्साह के साथ तपाराधना हुई, प्रभु की रथयात्रा का आयोजन भी किया गया। ूज्य मुनिश्री पद्म कीर्ति सागरजी म.सा. ने 94 वीं वर्धमान ओलीजी की आराधना शाता पूर्वक चल रही है। **आपश्री का चार्तुमास अहमदाबाद नरोड़ा में निश्चित हुआ है।**

साध्वीवर्या श्री भव्यदर्शना श्रीजी म.सा. को 100 वी ओली का पारणा 11 मार्च को

शंखेश्वर- सागर समुदाय में एक बार फिर आयंबिल तपाराधना का डंका बजा। सागर समुदाय को गौरव प्रदान करनेवाली महातपाराधिका साध्वी श्री प्रशमप्रज्ञा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी दिव्यदर्शना श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री भव्यदर्शना श्रीजी म.सा. 99 वीं ओलीजी चाणस्या तीर्थ में चार्तुमास में पूर्ण की। आपका पारणा यहां दिनांक 24 अक्टूबर को हुआ था एवं 100 वीं ओली आरंभ की। आपको 100 वीं ओली का पारणा श्री शंखेश्वर महातीर्थ में अष्टान्हिका महोत्सव के साथ होगा। महोत्सव का शुभारंभ दिनांक 4 मार्च को होगा एवं पारणा दिनांक11 मार्च को होगा। सागर समुदाय के उपाध्याय श्री वैराग्य रत्न सागरजी म.सा.ने हरिद्वार में153-154 ओली संलग्न, स्मितदर्शना श्रीजी ने 52 वीं ओली पूर्ण की है।

श्री सिद्धाचल महातीर्थ में नव्वांणु एवं छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होगा

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जगतचंदसूरीजी म.सा. एवं आचार्य श्री अक्षयचंद्रसूरीजी म.सा.आदि ठाणा-50 की अमृत निश्रा में यहां नव्वांणु यात्रा एवं छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। नव्वांणु यात्रा 16 अप्रेल 2022 से आरंभ होगी। 22 मई को छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होगा। 26 मई को नव्वांणु यात्रा की माल का आयोजन किया गया, यात्रा की पूर्णाहुति 14 जन को होगी। यह आयोजन जैन संस्कार वाटिका हैदराबाद के द्वारा हो रहा है।

पाकिस्तान से आई प्राचीन प्रतिमाओं का प्रवेश

पालीताना- शाश्वत तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय की छत्रछाया में श्री आत्म वल्लभ पंजाबी भवन में नवनिर्मित शिखरबद्ध जिनालय में गुजरांवाला पाकिस्तान से आई प्राचीनतम जिन बिम्बों का विधिवत प्रवेश दिनांक 1 दिसंबर को प.पू. गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् विजय नित्यानंद सूरीश्वरजी म.सा. की सद्प्रेरणा से हुआ।

प्रतिष्ठा 20 जनवरी 2022 को प.पू.गच्छाधिपति आचार्य श्री के आज्ञानुवती मुनिराज श्री दिव्यरत्न विजयजी म.सा., मुनिश्री भाग्यचंद विजयजी म.सा.आदि की निश्रा में होगी।

✻ जीवन में सहनशीलता, आचरण में दृढ़ता, ह्रदय में कोमलता, आंखों में करुणा, जीभ में मिठास, इन्द्रियों पर संयम तथा विचारों में अपरिग्रह की भावना का होना, श्रेष्ठ मानव का लक्षण है।

सागर समुदाय में पूज्यपाद गच्छाधिपतिजी के साथ आगामी चार्तुमास की महत्वपूर्ण उद्घोषणा

✻ गच्छाधिपतिश्री का आगामी चार्तुमास अहमदाबाद होगा।

पूना- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवालेपूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा की 83 वीं दीक्षा तिथि कार्तिक वद-10 दिनांक 29-11-2021 को पूज्यश्री की ओर से अभी तक निर्धारित कुछ महत्वपूर्ण चार्तुमास की घोषणा की गई जो निम्न है:-

✻ सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा पूज्य आचार्य भगवंत अजात शत्रु श्री नंदी वर्धन सागरसूरीजी, एवं आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री भीड़भजन पार्श्वनाथ जैन संघ गोदावरी-अहमदाबाद (गुज.) होगा।

✻ भोपावर प्रतिष्ठाचार्य पूज्य आचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री नववल्लभ पार्श्वनाथ जैन संघ नरोड़ा, अहमदाबाद (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री जिनचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्य आचार्य श्री हेमचंद्रसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास सूरत उमरा संघ तथा जैन महाजन पेढ़ी चाणस्मा दो क्षेत्रों में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री चन्द्रशेखर सागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री पादलिप्तपुरम्, पालीताना (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री चन्द्रानन सागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री लक्ष्मीवर्धन तपागच्छ भवन, पाल-सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी एवं आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी आदि ठाणा का चार्तुमास आगम मंदिर, पालीताना (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री अभ्युदयपुरम्, उज्जैन (म.प्र.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री सागरचंद्र सागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री आगमोद्धारक धानेरा आराधना भवन, वेसु-सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री नयचंद्रसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास ॐकारसूरी आराधना भवन, पाल-सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री अक्षयचंद्र सागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास मेरीन डाईव जैन संघ, मुंबई (महा.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री गुणचंद्रसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास वड़ाचौटा संघ, सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य पंन्यास प्रवर श्री लब्धि चंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास ओपेरा जैन संघ पाली-अहमदाबाद (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य गणिवर्य श्री आगमचंद सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास रांदेर रोड़, जैन संघ, सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य गणिवर्य श्री तारकचंद्र सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास जैन महाजन पेढ़ी, ऊंझा (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास मालदास स्ट्रीट जैन संघ, उदयपुर (राज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री सुधर्मसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अहमदाबाद (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री कुलरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास नेमुभाई की वाड़ी, गोपीपुरा सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री दीपरत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास पार्श्व विहार जामनगर (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री सुमतिसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास पालीताना गांव (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री देवप्रभसागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास बाबुलनाथ जैन संघ चौपाटी-मुंबई (महा.) में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री आगमरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास रायपुर जैन संघ छत्तीसगढ़ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री अभिनंदनचंद सागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास बीजापुर जैन संघ कर्नाटक में होगा।

✻ पूज्य मुनि श्री निपुण्यचंद सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास राजस्थान में होगा।

श्री शंखेश्वर से सिद्धक्षेत्र पालीताना का छ:रि पालित संघ में सागर गच्छाधिपति की पावन निश्रा रहेगी

✻ बड़ी संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों का सानिध्य।
✻ अनुयोगाचार्य श्री लब्धिचंदसागरजी की पावन प्रेरणा।

शंखेश्वर- पूज्यपाद सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करन वालेपूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा पूज्य आचार्य भगवंत अजातशत्रु श्री नंदीवर्धनसागर सूरीजी, एवं आचार्य श्री हर्षसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा के साथ बंध त्रिपुटी आचार्य भगवंत श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी आचार्य भगवंत पूज्यपाद जिनचंद्रसागर सूरीजी एवं पूज्यपाद श्री हेमचंद्र सागर सूरीजी महाराजा आदि लगभग 500 साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में श्री शंखेश्वर से श्री सिद्धक्षेत्र पालीताना का छःरि पालित संघ का आयोजन होने जा रहा है। संघ के प्रेरणास्त्रोत अनुयोगाचार्य श्री लब्धि चंदसागरजी म.सा. है। संघयात्रा दिनांक 7 से 13 फरवरी के मध्य शंखेश्वर से श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की अंजनशलाका, 2 मुमुक्षु का प्रवज्योत्सव, अभिषेक आदि आयोजन भी होंगे। शंखेश्वर से संघ का प्रयाण 22 जनवरी को है। गिरिराज पर माल 16 फरवरी को है। दिनांक 15 फरवरी को मेरुगिरी उत्सव के अंतर्गत गिरिराज के सभी जिनमंदिर में अष्ट प्रकार की पूजन का लाभ भी मिलेगा।

सूरत में गुरुजिन मंदिर प्रतिष्ठा हुई

सूरत- पूज्य आचार्यश्री योग-तिलक सूरीश्वरजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा में आचार्य श्री विजय जिनचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. की अग्नि संस्कार भूमि पीले पाषाण से निर्मित गुरु मंदिर के नाम से गुरुविहार का निर्माण किया गया है, गुरु मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव 11 दिसंबर से आरंभ हुआ। प्रतिष्ठा के पूर्व दिनांक 12 दिसंबर को गुरु प्रतिमा के ध्वजादण्ड का अभिषेक किया गया। दिनांक 13 दिसंबर को प्रातःकाल शुभ लग्नांश वेला में गुरु मंदिर तथा ध्वजा की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। श्री शांतिस्नात्र महापूजन पढ़ाई गई। जिनविहार का निर्माण वेसु में हुआ है।

मेला लगा.... मेला लगा....

पेदमीपुरम्- श्री आंध्रप्रदेशान्तर्गत भीमावरम समीपवर्ती दक्षिण भारत का शत्रुंजयावतार अति प्राचीन महा चमत्कारी दिव्य ऊर्जावंत दादा श्री आदिनाथ परमात्मा से सुशोभित वृषभ मंदिर में परमात्मा के गादीनशीन होने पर सातवां ध्वजारोहण के साथ कार्तिक पूर्णिमा के दिन मेला का आयोजन बड़े ही धर्ममय वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आसपास व दूर-दूर प्रांतों से अच्छी संख्या में देवगुरु भक्तों ने पधारकर दर्शन सेवापूजा, नवकारसी , आयंबिल का लाभ लिया। श्री नव्वाणु प्रकारी पूजा भी रखी गई थी। चढ़ावे भी काफी ऐतिहासिक रहे। वार्षिक अखण्ड दीपक चढ़ावा का लाभ अच्छी बोली लगाकर लिया। इसी तीर्थ भूमि पर पोष सुद-सातम (गुरु सप्तमी) दिनांक 9-1-2022 रविवार को मेला भी आयोजन होगा।

श्री पार्श्वपुरम् तीर्थ में अंजन-प्रतिष्ठा हुई

पार्श्वपुरम् तीर्थ- मुंबई-गोवा हाईवे पर राजगढ़ जिले में स्थित पार्श्वपुरम् महातीर्थ में 18 पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 10 से 14 दिसंबर तक आयोजित किया गया। पूज्य आचार्यश्री सागरचंद्रसागरसूरीजी म.सा. की अमृत निश्रा में आयोजित महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 12 दिसंबर को रथयात्रा निकाली गई। 13 दिसंबर को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। दिनांक 25 से 27 दिसंबर तक 1024 सहस्त्राकूट परमात्मा का प्रतिष्ठा महोत्सव भी हुआ। साथ ही 27 से 31 दिसंबर तक श्री पार्श्वप्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक पर पौष दशमी पर अट्ठम तप की आराधना हुई।

पूज्य सागर गच्छाधिपति के वरदहस्ते चांदी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कात्रज आगम मंदिर में हुई

पूना-सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवालेपूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा के शतायु महोत्सव के अंतर्गत महोत्सव के अंतिम दिवस 100-100 किलो चांदी की श्री आदिश्वर दादा तथा श्री पुंडरिक स्वामीजी की प्रतिमा का निर्माण तीर्थ परिसर में ही किया गया तथा उक्त दोनों प्रतिमा की प्रतिष्ठा के लिये बोलियां दिनांक 5 दिसंबर को यहां आयोजित हुए उपधान माल के पावन प्रसंग पर बोली गई। रजत प्रतिमा का प्रतिष्ठा महोत्सव 10 दिसंबर को शुभ लग्नांश बेला में सम्पन्न हुआ। प्रतिमा की स्थापना मुख्य गभारे में की गई है। पूज्यपाद गच्छाधिपति की निश्रा में श्री आदिश्वर महाराज मंदिर श्री गोरीवाला ओसवाल जैन संघ पूना में पौष दशमी पर अट्ठम तपाराधना में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने भाग लिया। पूज्यश्री स्वास्थ्य की अनुकूलता से पालीताना-शंखेश्वर की ओर विहार होगा।

करेड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ में उपधान तप

भोपालसागर- श्री करेड़ा पार्श्व नाथ तीर्थ में आचार्य श्री पद्म भूषण रत्नसूरीजी, आचार्य श्री निपुणरत्न सूरीजी आदि ठाणा साध्वी श्री कीर्ति रेखा श्रीजी आदि ठाणा की पावन निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की तपाराधना उपधान का आयोजन 1 दिसंबर से प्रभय मुर्हूत तथा 3 दिसंबर से दूसरा-तीसरा उपधान का मुर्हूत है उपधान की माल 19 जनवरी को होगी। श्री पार्श्व नाथ प्रभु के जन्मदीक्षा कल्याणक पर 28 से 29 दिसंबर को अट्ठम तपाराधना का आयोजन किया गया है।

श्री पार्श्वमणि तीर्थ में अट्ठम आराधना

आदोनी- आदोनी से लगभग 18 कि.मी. दूर श्री पार्श्वनाथ प्रभु के सुप्रसिद्ध तीर्थ में पोष दशमी प्रभु श्री पार्श्वनाथ दादा के जन्म कल्याणक पर अट्ठम तपाराधना का आयोजन किया गया। उत्तर पारणा 27 दिसंबर को तथा अट्ठम 28 से 30 दिसंबर को हुवे। तप का पारणा 31 दिसंबर को हुआ।

श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ में अट्ठम आराधना

भीलवाड़ा- भीलवाड़ा के समीप श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ में प्रभु के जन्म एवं दीक्षा कल्याणक पर अट्ठम तप मेले का आयोजन किया गया। 27 से 31 दिसंबर तक हुए आयोजन में अट्ठम तप के साथ धारणा पारणा भी हुआ। साध्वी श्री शीलमालाश्रीजी एवं रत्नमालाश्रीजी की निश्रा में हुए आयोजन के मार्गदर्शन और प्रेरक अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोज कुमार बाबूमलजी हरण रहे।

भिवड़ी से शाहपुर का संघ आयोजित हुआ

मुंबई- श्री चंद्रप्रभ आराधक परिवार के द्वारा भिवड़ी से शाहपुर मानस मंदिर तीर्थ का त्रिदिवसीय छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। संघ की पावन निश्रा आचार्य भगवंत श्री वटबोधिसूरीजी म.सा. आदि ठाणा प्रदान करेंगे। दिनांक 7 जनवरी को भिवड़ी से संघ का प्रस्थान होगा तथा दिनांक 9 जनवरी को संघ की माल शाहपुर मानस मंदिर में होगी।

अयोध्यापुरम् में भव्य मालारोपण महोत्सव सम्पन्न

अयोध्यापुरम्- मनमोहक आनंद-दायक शांतिदायक श्री जैन आर्यतीर्थ अयोध्यापुरम् तीर्थ परिसर में उपधान तप के मालारोपण का दैदीप्यमान कलश स्थापना याने कि मोक्ष माला परिधान दिनांक 12-12-2021 को अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक बंधुबेलड़ी प.पू.आचार्य श्री जिनचन्द्र सागरजी म.सा., प.पू. आचार्यश्री हेमचन्द्रसागरजी म.सा.आदि सुविशाल श्रमण-श्रमणीवृंद की मंगलकारी निश्रा में सानंद सम्पन्न हुआ। इस सुअवसर पर सभी आराधकों का स्वर्ण मुद्रा से बहुमान किया गया। स्वर्ण मुद्रा के बहुमान का लाभ श्रीमती सुहासिनी बेन मयूरभाई अमृतलाल वोरा राजकोट परिवार ने लिया। संपूर्ण उपधान तप के मुख्य लाभार्थी मातुश्री सीताबेन कांतिलाल भीखाभाई शाह परिवार अनावलवाला रहे।

✻ जैसे-तैसे व्यक्ति का आंतरिक व्यक्तित्व उन्नत होता है, सद्गुणों की अभिवृद्धि होती है, उसके जीवन में कथनी और करनी के बीच दूरी कम होने लगती है।

मुमुक्षु शिवांगी के प्रवज्या पर्वोल्लास पर पंचान्हिका महोत्सव : दीक्षा 17 फरवरी को

ब्यावरा- पूज्य आचार्य भगवंत श्री पद्मभूषणरत्नसूरीश्वरजी एवं आचार्य देव श्री निपुणरत्नसूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में कुमारी शिवांगी का प्रवज्या पर्वोत्सव पंचान्हिका महोत्सव के साथ ब्यावरा श्री संघ में दिनांक 13 से 17 फरवरी तक आयोजित होगा। दिनांक 17 फरवरी को संयम जीवन पर प्रवचन भक्ति अनुष्ठान दिनांक 15 फरवरी को मात्-वित् वंदनांजलि, संयम उपकरण वंदनांजलि होगी। दिनांक 16 फरवरी को परमात्मा की स्नात्र पूजन और दीक्षार्थी का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित होगा। दिनांक 17 फरवरी को दीक्षार्थी का रजोहरण ग्रहण महोत्सव पूज्य गुरु भगवंतों की अमृत निश्रा में शुभ लग्नांश वेला में सम्पन्न होगा।

मुमुक्षु प्राची का प्रवज्योत्सव पिपलोन श्रीसंघ में 23 जनवरी को होगा।

पिपलोनकलां- कुडल बोहरा परिवार में कुमारी प्राची के संयम ग्रहण की भावना प्रबलता साकार होने जा रही है। प्राची का प्रवज्योत्सव पिपलोन श्री संघ में 23 जनवरी को मनाया जायेगा। पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनरत्नसागर सूरीजी म.सा., आचार्य श्री चन्द्ररत्न सागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा-6 के साथ साध्वीश्री चित्तव्रता श्रीजी की सुशिष्या अर्हम्व्रता श्रीजी म.सा.आदि ठाणा-3 के साथ अन्य साध्वीमंडल की निश्रा में प्रदान करने के लिये पधारेंगे। दिनांक 19 जनवरी को श्री पार्श्व पंच कल्याणक पूजन दिनांक 20 जनवरी को श्री मणिभद्र पूजन हवन का आयोजन होगा। दिनांक 21 जनवरी को श्री पार्श्वपद्मावती महापूजन होगी। दिनांक 22 जनवरी को मुमुक्षु प्राची का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित होगा तथा श्री सिद्धचक्र महापूजन पढ़ाई जायेगी। रात्री में विदाई समारोह होगा। दिनांक 23 जनवरी को दीक्षा प्रयाण के लिये प्राची का दीक्षा वरघोड़ा दीक्षा मंडप में पहुंचेगा। यहां शुभ लग्नांश वेला में प्राची को रजोहरण प्रदान करेंगे। दिनांक 24 जनवरी को नूतन साध्वीजी म.सा. के मंगल पगले सांसारिक निवास स्थान पर होंगे।

श्री नागेश्वर तीर्थ में पौष दशमी आराधना

नागेश्वर- श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म एवं दीक्षा कल्याणक पर श्री नागेश्वर महातीर्थ में पौष दशमी आराधना का आयोजन हुआ। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. के सुशिष्य युवा मुनिप्रवर श्री कीर्तिरत्नसागरजी एवं मुनिश्री लब्धि-रत्नसागरजी आदि ठाणा-3 की निश्रा में यह आयोजन किया गया। अट्ठम तप का आयोजन 28 से 30 दिसंबर तक किया गया। दिनांक 29 दिसंबर को श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म कल्याणक पर भव्य रथयात्रा निकाली गई।

सूरत में भव्य मालारोपण महोत्सव सम्पन्न

सूरत- सूरत नगर की धन्यधरा पर श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थधाम मगदल्ला में प.पू.आचार्य श्री जिनचन्द्र सागरजी म.सा., प.पू.आचार्य श्री हेम चन्द्रसागरजी म.सा.के शिष्य पू. गणिश्री पद्मचन्द्रसागरजी म.सा. के शिष्य पू.गणि श्री आनंदचन्द्रसागरजी म.सा. की निरुपम निश्रा में 123 प्रथम माल, 15 द्वितीय माल, 8 तृतीय माल, 25 अढ़ारीया कुल 171 उपधान तप के आराधकों का मालारोपण कार्यक्रम 12 दिसंबर को सानंद सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के सात रत्नों के सात 8 वर्ष से 14 वर्ष के कुल 25 बालक एवं 42 बालिकाओं के साथ कई आराधकों ने माला पहनी। कार्यक्रम को प्रतिबोधित करते हुए गणिश्री आनंदचन्द्र सागरजी म.सा. ने कहा कि उपवास +उपयोग+उपशम=उपधान। नन्हें बालक-बालिकाओं ने ये जो पराक्रम किया है वह निश्चित ही समाज के लिये एक मार्गदर्शन है, बालपन से धर्म की प्रभावना अपने जेहन में उतारने वाले ऐसे भाग्यशालियों को नमन करता हूं। कुशल क्रियाकारक पू.श्री संभवचन्द्र सागरजी म.सा., पू.श्री मनकचन्द्र सागरजी, पू. श्री चारित्राचन्द्रसागरजी म.सा.एवं पू.श्री ऋषभचन्द्रसागरजी म.सा. के मार्गदर्शन में उपधान माला का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

जिस प्रकार पवन के वेग के कारण ध्वजा स्वयं ही उलझाती और सुलझाती है, उसी प्रकार स्वकृत कर्म ही व्यक्ति को सुखी-दु:खी बनाते हैं।

हमारे तीज-त्यौहार

1-	पौष सुदी-4	गुरुवार	6-1-2022	शुक्र अस्त
2-	पौष सुदी-9	मंगलवार	11-1-2022	श्री शांतिनाथ प्रभु का केवलज्ञान . कल्याणक-शुक्र उदय
3-	पौष सुदी-12	बुधवार	14-1-2022	धनार्क कुमुर्हूत समाप्त
4-	माघ वदी-5	रविवार	23-1-2022	पूज्य मालव भूषण आचार्य गुरुदेव श्री नवरत्नसागरसूरीजी का स्वर्गामन दिन (वि.सं.2072)
5-	माघ वदी-8 (7)	मंगलवार	25-1-2022	पूज्य साध्वी श्री इन्दुश्रीजी म.सा. का स्वर्गायदिन
6-	माघ वदी-13	शनिवार	29-1-2022	मेरु तेरस श्री ऋषभदेव प्रभु का निर्वाण कल्याणक एवं जम्बुदीप में 108 आदिनाथ दादा की 7 वीं वर्षगांठ (वि.सं.2071)

पंचक :–
आरम्भः-पौष सुदी-3, बुधवार, दिनांक 5/1/2022, समय- सायं 19.55 बजे से
समाप्तः- पौष सुदी-8,सोमवार, दिनांक 10/1/2022, समय- सुबह 8.51 बजे तक
पुष्प नक्षत्र :–
आरम्भः- माघ वदी-1, मंगलवार, दिनांक 18/1/2022, समय-सुबह-4.38 बजे से
समाप्तः- माघ वदी-1 (द्वि.) बुधवार, दिनांक 19/1/2022, समय-सुबह-5.09 बजे तक

✲ सर्व शक्तिमान हरि की इच्छा सदैव सुखरुप ही होती है और जिस पुरुष ने भक्ति के कुछ भी अंश प्राप्त किये है उसे तो यही निश्चय करना चाहिये कि ''हरि की इच्छा सदैव सुखरुप ही होती है।''

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

✲ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✲ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✲ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✲ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

पधारो...
पधारो...
पधारो...

श्री भोपावर महातीर्थ में

जन-जन की आस्था एवं श्रद्धा के केन्द्र, तप सम्राट, 183 वीं ओली के आराधक, महामांगलिक प्रदाता, भोपावर तीर्थोद्धारक, वीतराग तीर्थ मार्गदर्शक, वचनसिद्ध महापुरुष, मालवाभूषण प.पू. आचार्य देव

श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा

की

छट्ठी वार्षिक पुण्यतिथि

गुरु समर्पण महोत्सव

माघ वदी 5, रविवार 23 जनवरी 2022

सस्नेह निमंत्रण

पावनकारी निश्रा

गुरुनवरत्न पाट परंपरा के संवाहक, युवाहृदय सम्राट,
जिनशासन हितचिंतक, महामांगलिक प्रदाता, सूरीमंत्र आराधक
परम पूज्य आचार्य देव **श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा**
आदि श्रमण - श्रमणी भगवंत

23 जनवरी 2022, रविवार

स्नात्र महोत्सव	नवकारसी	रथयात्रा	धर्मसभा
प्रातः 7 बजे	प्रातः 8 बजे	प्रातः 8.30 बजे	प्रातः 9.30 बजे

नवरत्न परिवार के पदाधिकारियों की शपथ ग्रहण विधि प्रातः 11 बजे

सामुहिक आयंबिल - प्रातः 11.30 बजे   साधर्मिकवात्सल्य - प्रातः 11.30 बजे

आईये! गुरु समर्पण महोत्सव मे जुड़ते है और हमारी गुरुभक्ति के कर्तव्य का निर्वाहन करते है

निमंत्रक : श्री शांतिनाथ जैन श्वेताम्बर तीर्थ ट्रस्ट पेढ़ी भोपावर, तह. सरदारपुर, जि. धार

आयोजक : श्री जैन श्वेताम्बर मालवा महासंघ, नवरत्न परिवार

विशेष :
आप सभी पावन अवसर पर अपने-अपने श्रीसंघ में गुरुभक्ति के रुप मे कुछ ना कुछ सद्कार्य अवश्य करें। अधिक से अधिक संख्या मे आयंबिल कर अपनी गुरुभक्ति का परिचय देवें।

वर्ष 27 | पौष - माघ | जनवरी-2022 | अंक 1 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्रति,
बुक पोस्ट
श्रीमान् ____________________
____
____

स्टाम्प टिकिट

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, लखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897